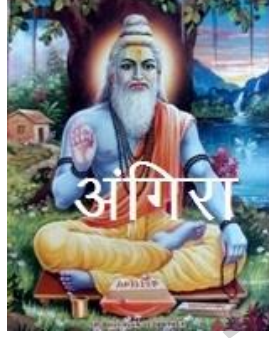


# अंगिरा सूरतगढ़



आर.ए.एस. परीक्षा – 2021

इतिहास

Name:- .....

Sub:- .....

Address:- .....

मदन सुथार (निदेशक)

Mob. 9983406642, 8619206809

RAS, IAS, व्याख्याता, प्रधानाध्यापक, वरिष्ठ अध्यापक, LDC, RFS, SSC, NDA, CLAT, NTPC (Railway), Foundation Course शुरू.....

नजदीक सिविल कोर्ट (जज्जी) के पास, वार्ड न0 17,  
सूरतगढ़



### मौर्यकालीन कला

पटना के बुलंदी बाग क्षेत्र से मौर्यकालीन लकड़ी का महल मिला है। पटना के समीप कुम्रहार गांव से मौर्यकालीन राजप्रासाद के अवशेष मिले हैं।

**फाह्यान** के अनुसार “ यह प्रासाद मानव कृति नहीं है। वरन् दैवों द्वारा निर्मित है।” एरियन के अनुसार इस राजप्रासाद की शानोशौकत का मुकाबला न तो सूसा और न एकबेतना ही कर सकते हैं। मौर्यकाल में काष्ठ के स्थान पर पत्थर का उपयोग शुरू हुआ। अशोक के एकात्मक स्तम्भ (एक ही पत्थर को तराश कर बनाये गये) मौर्य कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं। इन पर चमकदार पॉलिश है। अशोक के स्तम्भ उत्तरप्रदेश के चुनार (मिर्जापुर) के बलुआ पत्थर से बने हैं।

स्तम्भों का शीर्ष अलग बना हुआ है तथा शीर्ष पर पशुओं की मूर्तियाँ हैं। शीर्ष का मुख्य अंश घंटा है। इसे **अवांगमुखी** कमल कहा जाता है। शीर्ष पर चार पशुओं का अंकन है – हाथी, घोड़ा, सिंह व बैल।

#### अशोक के स्तम्भ

#### पशु

सारनाथ स्तम्भ	—	चार सिंह
लौरिया नन्दगढ़	—	एक सिंह
रामपुरवा स्तम्भ	—	एक बैल
वैशाली स्तम्भ	—	एक सिंह
संकिसा स्तम्भ	—	एक हाथी
सांची स्तम्भ	—	चार सिंह

रामपुरवा के दूसरे स्तम्भ पर एक सिंह बैठाया गया है।

कौशाम्बी, रामपुरवा, वैशाली तथा संकिसा के स्तम्भ लेख विहीन हैं।

अशोक के एकात्मक स्तम्भों का सर्वश्रेष्ठ नमूना सारनाथ के सिंह स्तम्भ का शीर्ष है। जिसमें चार सिंह पीठ सठाये बैठे हैं तथा एक चक्र धारण किये हुए हैं। यह चक्र बुद्ध द्वारा धर्मचक्रप्रवर्तन का प्रतीक है। **आधुनिक भारत का राष्ट्रीय चिन्ह भी सारनाथ के स्तम्भ से लिया गया है।** इस चक्र में मूलतः 24 तीलियाँ (spokes) थीं।

सांची व भरहूत के मूल स्तूप के निर्माण का श्रेय भी अशोक को दिया जाता है।

भारतीय स्तम्भ सपाट है जब कि ईरानी स्तम्भ नालीदार है। अशोक ने वास्तुकला की नई शैली गुफा निर्माण को शुरू किया। बराबर (गया जिला) की चार गुफाओं का निर्माण अशोक ने करवाया। इनके नाम **कर्ण, सुदामा, चौपार तथा विश्व झोंपड़ी** हैं। बराबर की पहाड़ियों में **लोमश ऋषि की गुफा** भी मौर्य कालीन है। इसका निर्माण दशरथ ने कराया।

अशोक के पौत्र दशरथ ने भी नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीवाकों को 3 गुफाएं प्रदान कीं। इनमें **गोपी गुफा** प्रसिद्ध है। **वापी गुफा** तथा **पदथिक गुफा** अन्य गुफाएँ हैं।

### लोक कला

मथुरा के परखम ग्राम से प्राप्त यक्ष मूर्ति (यह **मणिभद्र** कहलाती है), पटना के दीदारगंज से प्राप्त ग्राहिणी यक्षी, बेसनगर से प्राप्त यक्षी, ग्वालियर की मणिभद्र यक्षी की मूर्ति राजघाट

(वाराणसी) से प्राप्त त्रिमुख यक्ष की प्रतिमा, शिशुपालगढ़ से प्राप्त यक्ष की प्रतिमा।

पटना के बुलन्दी बाग से नर्तकी की एक मृणमूर्ति है तथा रथ पर एक पहिया मिला है जिसमें 24 तीलियाँ हैं।

उड़ीसा में धौली में चट्टान को काटकर हाथी की आकृति बनाई गई।

**हेराडोटस** – इतिहास का पिता कहे जाने वाले हेरोडोटस ने अपने ग्रन्थ **हिस्टोरिका** में 5वीं शताब्दी ई. पू. भारत फारस सम्बन्ध का वर्णन अनुश्रुतियों के आधार पर किया है। वह कभी भारत नहीं आया।

**नियार्कस** – यह सिकन्दर के जहाजी बेड़े का सेनापति था।

**ओनेसिक्रिटस** – इसने सिकन्दर की जीवनी लिखी।

**एरिस्टोब्युलस** – इसने ‘युद्धों का इतिहास’ नामक पुस्तक में भारत के बारे में लिखा। यह सिकन्दर के साथ भारत आया था।

**मेगस्थनीज** – सैल्यूकस ‘निकेटर’ का चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में राजदूत, 14 वर्ष भारत रहा। इसकी पुस्तक **इण्डिका** मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। लेकिन परवर्ती यूनानी लेखकों स्ट्रेबों, प्लिनी, एरियन, प्लूटार्क, जस्टिन और डायोडोरस की रचनाओं में इण्डिका के उद्धरण प्राप्त होते हैं।

1846 में डॉ. स्वानवेक ने इस उद्धरणों को एक स्थान पर संग्रहीत कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। 1891 में मैकक्रिण्डल ने इनको अंग्रेजी भाषा में अनूदित किया।

**डायमेकस** – सीरियाई राजा एन्टिकोयस के राजदूत के रूप में बिन्दुसार के दरबार में रहा।

**डायोनिसियस** – मिस्र के नरेश टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस के राजदूत के रूप में अशोक के दरबार में आया।

### कौटिल्य का अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र प्राचीन भारत में राजकीय व सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है। अर्थशास्त्र प्राचीन भारतीय चिन्तन की नीतिशास्त्र परम्परा का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इसमें व्यक्ति के लौकिक आचरण और उसकी उन्नति, राज्य की सैद्धान्तिक व व्यावहारिक समस्याओं आदि का विवेचन किया गया है।

अर्थशास्त्र में बताया गया है कि कैसे राज्य को प्राप्त करना व सहेजना चाहिए।

1905 ई. में तन्जौर के एक ब्राह्मण ने अर्थशास्त्र की हस्तलिखित पांडुलिपि मैसूर रियासत के पुस्तकालय **शाम शास्त्री** को भेंट की, जिन्होंने 1909 में इस ग्रन्थ का प्रकाशन करवाया। कौटिल्य का वास्तविक नाम विष्णुगुप्त शर्मा है, जिसे चाणक्य नाम से भी जाना जाता है। अर्थशास्त्र गद्य – पद्य दोनों का मिश्रण है। अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण हैं, जिनकी विषय वस्तु निम्नलिखित हैं। मेगस्थनीज व पतंजलि कौटिल्य के नाम से उल्लेख नहीं करते हैं।

### मौर्यकालीन भौतिक संस्कृति का विस्तार

मौर्य कालीन भौतिक संस्कृति का गंगाघाटी क्षेत्र में विस्तार में



लोहे के उपयोग आहुत सिक्कों के उपयोग पॉलिश मृदभाण्ड के प्रयोग, पक्की ईंटों तथा मंडल कूपों के उपयोग ने उत्तरी पूर्वी भारत के नगरों की संख्या में वृद्धि में योगदान दिया। पक्की ईंटों व मंडल कूपों का प्रयोग भी सबसे पहले मौर्यकाल में दृष्टिगोचर होता है।

पक्की ईंटों ने अधिक स्थाई मकानों के निर्माण में मदद दी। मंडल कूपों (Ring Wells) के निर्माण से पानी के लिये नदी तट पर बस्तियों के निर्माण की परम्परा में परिवर्तन हुआ। अब लोग कुएं खोदकर नदी तट से दूर – दूर के इलाकों में भी बसने लगे। अतः मण्डल कूपों ने पानी की समस्या के समाधान में मदद दी।

ये मंडल कूप तंग बस्तियों में शोषगर्तों (Soakage pits) का कार्य करते थे।

मौर्यकाल में उत्तरी काली पॉलिश मृदभाण्ड मिले हैं।

उड़ीसा में शिशुपालगढ़ तथा बंगाल में चन्द्रकेतुगढ़ इन मृदभाण्डों के उत्खनन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

#### कला एवं साहित्य :-

कला एवं साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा गया है।

#### वास्तु कला -

गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ।

देवगढ़ का दशावतार मन्दिर (झांसी) भारतीय मंदिर निर्माण में शिखर का संभवतः पहला उदाहरण है। शिखर युक्त मंदिर का निर्माण गुप्त युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

गुप्तकाल में मंदिर निर्माण में छोटी ईंटों व पत्थरों का प्रयोग हुआ है। भीतर गांव कानपुर का मंदिर ईंटों से निर्मित है तथा वर्गाकार चबूतकरे पर बना है। इसके शिखर में भारत में सर्वप्रथम मेहराबों का प्रयोग किया गया।

गुप्तकाल में ब्राह्मण एवं बौद्ध गुहा मन्दिरों का निर्माण हुआ। उदयगिरि (विदिशा) में ब्राह्मण गुहा मंदिर का निर्माण हुआ। इसका निर्माण चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के सेनापति वीरसेन ने कराया। उदयगिरि के गुहा मंदिर में विष्णु के वराह अवतार की विशाल मूर्ति स्थापित की गई। वराह अवतार को समुद्र से पृथ्वी का उद्धार करते हुए अंकित किया गया है।

गुप्तकालीन मूर्तिकारों ने मथुरा शैली से प्रभावित होकर मूर्तियाँ बनाईं।

गंगा, यमुना की मूर्ति गुप्तकाल की देन है।

वराह की वास्तविक आकार की मूर्ति एरण से प्राप्त हुई जिसका निर्माण धन्यविष्णु ने किया।

गुप्त मूर्तिकला का सर्वोत्तम उदाहरण सारनाथ मूर्तियाँ हैं।

गुप्तकाल में मूर्तिकला के तीन प्रमुख केन्द्र थे – मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र

सुल्तान गंज से बुद्ध की 7½ फीट ऊँची तांबे की प्रतिमा मिली है।

देवगढ़ के दशावतार मंदिर में विष्णु की मूर्ति, उदयगिरि के वराह

अवतार की मूर्ति तथा सूर्य की काशी व कौशम्बी की मिली मूर्तियाँ गुप्तकाल की मूर्तिकला की परिपक्वता को दर्शाती हैं।

सारनाथ से बैठे बुद्ध की मूर्ति तथा मथुरा से खड़े बुद्ध की मूर्ति मिली हैं।

अजन्ता की गुफा संख्या 16,17 तथा 19 गुप्तकाल की हैं।

बाघ की गुफायें भी गुप्तकाल की गुफा स्थापत्य का उदाहरण हैं।

अजन्ता व बाघ की गुफाओं में बने चित्र गुप्तकालीन चित्रकला की प्रगति को दर्शाते हैं।

देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह मंदिर पंचायतन श्रेणी का है इसमें विष्णु को शेषनाग की शैया पर विश्राम करते हुये दिखाया गया है। पहले इसका नाम केशवपुर था।

गुप्तकाल में नारायण, संकर्षण, लक्ष्मी जैसी अवैदिक देवताओं को वैष्णव, धर्म का अभिन्न अंग बना लिया गया।

#### गुप्तकालीन मन्दिर

1. देवगढ़ का दशावतार मन्दिर (झांसी उत्तर प्रदेश)
2. नचना कुठारा का पार्वती मन्दिर ( पन्ना, मध्य प्रदेश)
3. भूमरा का शिव मन्दिर ( सताना, मध्य प्रदेश)
4. खोह का शिव मन्दिर ( नमोद मध्य प्रदेश)
5. साँची का मन्दिर ( मध्य प्रदेश)
6. तिगवा का विष्णु मन्दिर ( जबलपुर, मध्य प्रदेश)
7. एरण का विष्णु मन्दिर ( सागर, मध्य प्रदेश)
8. भीतरगांव का ईंटों का मन्दिर( कानपुर, उत्तर प्रदेश)
9. सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर( रायपुर, मध्य प्रदेश)
10. उदयगिरि का गुहा मन्दिर (मध्य प्रदेश)

#### अजन्ता

अजन्ता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हैं। अनिस्ता (अनिष्ठा) गांव गुफाओं से दो मिल दूर हैं। इसी गांव के नाम पर इन गुफाओं का नाम अजन्ता पड़ा।

अजन्ता गुफाओं की खोज 1819 ई. में मद्रास रेजिमेन्ट के एक सैनिक ने की। अजन्ता में कुल 29 गुफायें हैं।

इन गुफाओं में 9,10,19 एवं 26 नम्बर की गुफायें चैत्य गुफायें हैं शेष 25 गुफायें विहार हैं। गुफा संख्या 13 सबसे प्राचीन है।

8वीं से 13वीं गुफा तक का छः गुफायें हीनयान संप्रदाय की हैं।

अब 17वीं गुफा में सबसे अधिक चित्र हैं। पहले 16वीं गुफा में सर्वाधिक चित्र थे पर अधिकांश नष्ट हो गये।

नवीं और दसवीं के चित्र सबसे प्राचीन हैं। ये चित्र प्रथम शताब्दी ई. के समय सातवाहन शासकों के संरक्षण में बनाये गये थे।

गुफा संख्या 16 व 17 गुप्तकालीन हैं। इन गुफाओं को वाकाट्क नरेश पृथ्वीसेन द्वितीय के सामन्त व्याघ्र देव (वराह देव) ने बनवाया था।

गुफा संख्या 1 व 2 के चित्र छठी – सातवीं शताब्दी में वातापी



के चालुक्यों के काल में बने।

### चित्रों के विषय

### गुफा नं.

अ) बैठी स्त्री का चित्र	—	नौ
ब) पुजारियों के दल का स्तूप की ओर जाते चित्र	—	नौ
स) जातक कथाओं के चित्र	—	दस
द) स्त्रियों से घिरे राजा के जुलूस के चित्र	—	दस
य) उपदेश सुनते भक्तगण	—	सोलह
र) गौतम बुद्ध के वैराग्य उत्पन्न होने के चार दृश्य	—	सोलह
ल) मरणासन्न राजकुमारी	—	सोलह
यह 16वीं गुफा का सबसे प्रसिद्ध चित्र है		
व) महाहंस जातक कथा का चित्र जिसमें राजा स्वर्ण हंस से कथा सुन रहा है।	—	सत्रह
श) राहुल समर्पण का चित्र व बुद्ध का गृह त्याग का चित्र	—	सत्रह
क) मार विजय का चित्र	—	प्रथम
ख) चालुक्य सम्राट पुलकेशिन द्वितीय की सभा में आये	—	प्रथम
ग) बोधिसत्व पद्मपाणि व वज्रपाणि के चित्र	—	प्रथम
घ) सांडों की लड़ाई	—	प्रथम
च) बिदुर पण्डित जातक का चित्र	—	प्रथम
छ) बुद्ध जन्म	—	द्वितीय
ज) माया का स्वपन	—	द्वितीय
झ) झूलाझूलती राजकुमारी	—	द्वितीय

अजन्ता की गुफाओं में तीन तरह के चित्र हैं।

1. आलेखन
  2. वर्णन
  3. अलंकरण
- चित्र निर्माण में टेम्पेरा ओर फ्रेस्को विधि का प्रयोग किया गया है।

बाघ के चित्रों का विषय लौकिक जीवन से संबंधित था जबकि अजन्ता के चित्रों का विषय धार्मिक था।

ऐलोरा (औरंगाबाद) से भी सातवीं से नौवीं शताब्दी के बीच की 34 शैलकृत गुफाएं हैं। इनमें 1 से 12 तक बौद्ध 13 से 19 तक हिन्दु व 30 से 34 तक जैन गुफाएं हैं।

### साहित्य

पुराणों का जो रूप अब प्राप्त होता है उसकी रचना गुप्त काल से हुई।

रामायण व महाभारत को अन्तिम रूप काल में दिया गया। इस काल में अनेक स्मृतियों व सूत्रों पर भाष्य लिखे गये। नारद, कात्यायन, पाराशर व बृहस्पति स्मृति की रचना इसी काल में हुई। नारद व बृहस्पति स्मृति प्रधानतः विधि विषयक है जबकि कात्यायन स्मृति मुख्यतः आर्थिक विषयों पर लिखी गई है।

गुप्तकाल में संस्कृत के महान विद्वान कालिदास हुये। कालिदास ने चार काव्य व तीन नाटकों की रचना की।

कालिदास रचित 'ऋतुसार' और 'मेघदूत' खण्ड काव्य है। कुमार संभव व रघुवंश महाकाव्य है।

कालिदास के तीन नाटक विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र और

अभिज्ञान शाकुन्तलम् (कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है)

क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रन्थ बृहत्कथामंजरी में कालिदास की एक अन्य रचना 'कुन्तलेश्वरदौलतम्' का एक श्लोक ऊद्धृत किया है किन्तु यह ग्रन्थ अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

**ऋतुसंहार** — कालिदास की प्रथम काव्य रचना है जो 6 सर्गों का एक खण्ड काव्य है।

**मेघदूत** — पूर्वमघ तथा उत्तरमेघ में विभक्त। इसमें यक्ष की विरहगाथा का विवरण है।

**कुमारसंभव** — 17 सर्गों का महाकाव्य जिसमें शिव पार्वती के पुत्र कुमार ( कार्तिकेय ) के जन्म की कथा का वर्णन है।

**रघुवंश** — 19 सर्गों का महाकाव्य जिसमें राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक चालीस ईक्ष्वाकु राजाओं का चरित्र चित्रण है।

**मालविकाग्निमित्र** — पांच अंकों में कालिदास की प्रथम नपाट्य रचना, इसमें शुंग राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रणय कथा है।

**विक्रमोर्वशीय** — पुरुवा व उर्वशी की प्रणय कथा जो पाँच अंकों में है।

**अभिज्ञान शाकुन्तलम्** — कालिदास की सर्वोत्कृष्ट रचना, सात अंकों में हस्तिनापुर के राजा दूष्यन्त व कण्य ऋषि की पालिता पुत्री शकुन्तला के संयोग व वियोग का विवरण है। यह कालिदास का तीसरा व अन्तिम नाटक है।

कालिदास ने मेघदूत की रचना वाकाटक नरेश प्रवरसेन द्वितीय के दरबार में की।

गुप्तकालीन नाटक मुख्यतः प्रमेध्यान एवं सुखान्त होते थे।

गुप्तकालीन नाटकों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उच्च सामाजिक स्तर के पात्र संस्कृत बोलते थे, जबकि निम्न सामाजिक स्तर के पात्र तथा स्त्रियाँ प्राकृत भाषा का प्रयोग करती थी।

इस समय की अलंकृत संस्कृत को समाज के अन्य वर्गों के लोग नहीं समझ सकते थे, क्योंकि तत्कालीन बोलचाल की भाषा प्राकृत थी।

शूद्रक के नाटक मृच्छकटिकम् में स्त्रियाँ व शूद्र प्राकृत बोलते हैं।

### गुप्तकाल की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ

#### पुस्तक

#### लेखक

1. देवीचन्द्रगुप्तम्, मुद्राराक्षस	—	विशालखदत
2. काव्यदर्शन (काव्यादर्श), दशकुमाचरित	—	दण्डिन
3. किरातार्जुनियम	—	भारवि
4. रावणवध	—	वत्सभट्टि
5. अमरकोष	—	अमरसिंह
6. न्यायावतार	—	सिद्धसेन
7. पंचतन्त्र	—	विष्णु शर्मा
8. कामसूत्र	—	वात्स्यायन
9. चन्द्रव्याकरण	—	चन्द्रगोमिन



10. विसुद्धिमग्न — बुद्धघोष  
 11. मृच्छकटिकम् (मिष्ट्री की गाड़ी) — शुद्रक  
 अमरकोश को संस्कृत का विश्वकोष कहा जाता है।  
 मुनि सर्वनन्दी ने 458 ई. में **लोकविभंग** नामक ग्रन्थ लिखा।  
 आचार्य सिद्ध सेन ने **न्यायवार्ता** की रचना की जिसमें जैनदर्शन व  
 न्याय दर्शन के विकास में योगदान मिला।

### विज्ञान

गुप्तकाल में शून्य का सिद्धान्त तथा दशमलव प्रणाली का विकास हुआ।  
 आर्यभट्ट (5वीं शताब्दी) ने कहा कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा करती है।  
 आर्यभट्ट कुसुमपुर (पाटलिपुत्र) के निवासी थे।  
 आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीयम्, आर्याष्टशतक, दशगितिकसुत्र नामक पुस्तक लिखी। आर्यभट्टीयम् के चार भाग हैं।  
 1. दशगीतिकापाद 2. गणितपाद 3. कालक्रियापाद 4. गोलापाद  
 आर्यभट्ट ने **चन्द्रग्रहण** व **सूर्यग्रहण** की वैज्ञानिक व्याख्या की।  
 आर्यभट्ट ने त्रिभुज का क्षेत्रफल निकालने का सूत्र दिया।  
 आर्यभट्ट ने पृथ्वी की परिधि का अनुमानित माप व पाई ( $\pi$ ) का माप दिया जो आज भी नहीं माना जाता है।  
 गुप्तकाल में **वराहमिहिर** (छठीं शताब्दी) ने खगोल शास्त्र व ज्योतिष विद्या पर अनेक ग्रन्थ लिखे। इनमें पंचसिद्धान्तिका, लघुजातक, वृहज्जातक तथा वृहत्संहिता प्रमुख हैं।  
 वृहत्संहिता में ज्योतिष के अलावा भारत के तात्कालिक भूगोल, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन तथा स्थापत्य व मूर्तिकला की भी विस्तृत जानकारी दी गई है। इस दृष्टि से वृहत्संहिता गुप्तयुगीन संस्कृति के ज्ञान का महाकोष है।  
 वराहमिहिर ने यूनानी और भारतीय ज्योतिष को मिलाकर रोमक और पोलश का सिद्धान्त दिया।  
 महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन और अणु सिद्धान्त दिया।  
**भास्कर प्रथम** (600 ई.) ने महाभास्कर्य व लघुभास्कर्य तथा भाष्य लिखे।  
**नोट :-** भास्कर द्वितीय ने 12 वीं शताब्दी में लीलावती नामक गणित की पुस्तक लिखी अतः भास्कर प्रथम गुप्त काल के हैं भास्कर द्वितीय नहीं।  
 भीनमाल (जालौर, राजस्थान) में जन्में गणितज्ञ **ब्रह्मगुप्त** (598 ई.) ने **खण्डखाद्यक**, **वेदांग ज्योतिष** व **ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त** की रचना की तथा वेदांग ज्योतिष लिखा।  
 ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए कहा कि पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती है।  
 आर्यभट्ट की कृति आर्यभट्टीय का 800 ई. में 'जीज - अल् - अर्जबहर' नाम से अरबी भाषा में अनुवाद किया गया।  
**पात्काप्य** नामक पशु चिकित्सक ने **हस्त्यायुर्वेद** नामक ग्रन्थ लिखा, जो हाथियों की चिकित्सा से संबंधित था।  
**धन्वंतरि** नामक आयुर्वेद का चिकित्सक चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में था। धन्वंतरी ने 'निघन्टू' नामक पुस्तक लिखी।  
 वाग्भट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ '**अष्टांग हृदय**' की रचना की।  
**नवनीतकम्** नामक आयुर्वेदग्रन्थ की रचना भी इसी काल में हुई।  
 महारौली का 'लौह स्तम्भ' गुप्तकालीन धातु कला का सर्वश्रेष्ठ

उदाहरण है।  
 वैशेषिक शाखा का 'अणु सिद्धान्त' का प्रतिपादन भी गुप्तकाल में हुआ।  
 नागार्जुन ने रस चिकित्सा प्रणाली द्वारा सोने, चाँदी, ताँबे आदि धातुओं की भस्म से रोंगों की चिकित्सा की।  
 वराह मिहिर ने बताया की चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर लगता है और पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।  
**इस्पात** बनाने की कला सबसे पहले भारत में विकसित हुई। विदेशों में भारतीय इस्पात का निर्यात ईसा पूर्व चौथी सदी में होने लगा। बाद में भारतीय इस्पात उद्ज (Wootz) कहलाने लगा। अंग्रेजी में भारतीय अंकमाला को अरबी अंक (Arabic Numerals) कहते हैं, किन्तु अरब लोग भारतीय अंकों को **हिन्दसा** कहते हैं। अरबों ने ही भारतीय अंकन पद्धति को अपना कर पश्चिमी दुनिया में फैलाया।  
 दशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले भारतीयों ने किया। चीन के दशमलव पद्धति भारतीय बौद्ध धर्म प्रचारकों से सीखी तथा यूरोप ने अरबों से सीखी।  
 शून्य का आविष्कार ईसा पूर्व दूसरी सदी में भारतीयों ने किया। अरबों ने शून्य का प्रयोग भारत से सीखा व इसे यूरोप में फैलाया।  
 आर्यभट्ट ने बेबिलोनियाई विधि से ग्रह स्थिति की गणना की।  
**प्राचीन भारत में शिक्षा व शिक्षा के प्रमुख केन्द्र**  
 बालक की सुनियोजित शिक्षा का आरम्भ ब्रह्मचर्य आश्रम में उपनयन संस्कार के पश्चात् होता था।  
 उपनिषदों में गुरुकुल के स्थान पर आचार्यकुल का प्रयोग हुआ है।  
 कृष्ण और बलराम ने सन्दीपनि मुनि के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की।  
**आचार्य या गुरु के प्रकार :-**  
 1. आचार्य 2. उपाध्याय 3. प्रवक्ता 4. श्रोत्रिय 5. गुरु 6. ऋत्विक्  
 7. चरक (यायावर व भ्रमणशील अध्यापक) ये घुम फिर कर शिष्यों का चुनाव व ज्ञान प्रसार करते थे। उपनिषद् काल में उद्दालक आरुणि ऐसे ही चरक आचार्य थे।  
 गुरुकुल में निवास करने वाले छात्रों के अन्तेवासी कहा जाता था।  
 नैष्ठिक (नैषीधक) ब्रह्मचारी - जो जीवन पर्यन्त छात्र रहते थे। इन्हें ब्रह्मव्रतधारी भी कहा जाता था।  
**उपकुर्वाण** - जो शिक्षा प्राप्त कर गुरुदक्षिणा देकर घर लौट जाते थे। स्त्रियाँ भी शिक्षा ग्रहण करती थी। ये दो प्रकार की होती थी।  
 1. सद्योवधू - जो विवाह होने तक ब्रह्मचार्य का पालन करती थी।  
 2. ब्रह्मवादिनी - जो जीवनपर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर ज्ञानार्जन में लगी रहती थी।  
 वैदिक शिक्षा सम्बन्धी प्राचीन साहित्य प्रतिशाख्य है।  
 वेदों का अध्ययन करने वाले वैदिक तथा वेदांगों का अध्ययन





करने वाले शास्त्री कहलाते थे।

### हिन्दू शिक्षा के केन्द्र

1. **तक्षशिला विश्वविद्यालय** – इसकी स्थापना भरत की व प्रशासन तक्ष को सौंपा गया। यह भारत का प्राचीन विश्वविद्यालय है। इसमें केवल द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य) को शिक्षा दी जाती थी। यहां पर प्रसिद्ध वैद्य जीवक, कौटिल्य, (चाणक्य), मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त, कोसल नरेश प्रसेनजीत, व्याकरणविद् पाणिनि, पंतजलि, चरक, वसुबन्धु ने शिक्षा प्राप्त की। कौटिल्य, चरक एवं पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा यहाँ के प्रसिद्ध आचार्य थे। अश्रघोष के अनुसार तक्षशिला में नेत्र चिकित्सा होती थी। धनुर्विधा एवं वैद्यक की शिक्षा के लिए यह पूरे विश्व में प्रसिद्ध था।
2. **काशी** – उपनिषद् काल से ही काशी शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका था।
3. **कश्मीर** – कश्मीर शिक्षा, शैव धर्म व बौद्ध धर्म का प्रधान केन्द्र था। प्रसिद्ध विद्वान रत्नाकर(हरिविजय का लेखक) शिवस्वाम (शिवांक का लेखक), क्षेमेन्द्र व उसका पुत्र सोमेन्द्र कल्हण, मखंक, व श्रीहर्ष कश्मीर के ही निवासी थे।
4. **धारा** – परामारों की राजधानी धारा पूर्व मध्यकाल में शिक्षा का प्रधान केन्द्र बन गया। धनंजय, पद्गुप्त व धनिक भी धारा में निवास करते थे। भोज परमार ने भोज विश्वविद्यालय की स्थापना करवाई।
5. **कन्नौज** – सातवीं से 12 वीं शताब्दी तक शिक्षा का केन्द्र रहा।
6. **अन्हिलपाटन** – पूर्व मध्यकाल में गुजरात के चौलुक्य वंश की राजधानी तथा हिन्दु एवं जैन दर्शन व शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। यहां पर सोमप्रधानाचार्य, हेमचन्द्र, रामचन्द्र, उदयचन्द्र, जयसिंह, यशराज, वत्सराज, सोदढल, एवं मेरुतुंग जैसे विद्वानों ने आश्रय प्राप्त किया।
7. **कांची** – दक्षिण भारत में पल्लव शासकों की राजधानी व शिक्षा का प्रमुख केन्द्र थी। महाकवि दण्डि, शूद्रक व भारवि ने कांचों में ही अपने ग्रन्थों की रचना की। वात्स्यान व बौद्ध तर्क शास्त्र के जन्मदाता दिङ्नाग ने कांची विश्वविद्यालय में ही शिक्षा प्राप्त की। कदम्ब वंशी राजकुमार मयूरशर्मन ने भी कांची में शिक्षा प्राप्त की।
8. **घटिका** – पल्लव काल में विद्यालयों को घटिका कहते थे। बिहार में उदंतपुरी तथा बंगाल में जगदल्ला और सोमपुरी भी प्रमुख विश्वविद्यालय थे।

### बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र

#### नालन्दा विश्वविद्यालय :-

बिहार में राजगिरि के पास वर्तमान बड़ागांव ही प्राचीन नालन्दा है।

नालन्दा बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र की जन्म भूमि थी। पाँचवी ईस्वी में कुमारगुप्त (गुप्त शासक) ने यहां बौद्ध संघ को दान दिया व नालन्दा विश्वविद्यालय का विकास हुआ।

नालन्दा विश्वविद्यालय का खर्चे के लिए धर्मपाल ने 200 गांवों का दान दिया था।

नालन्दा में रत्नसागर, रत्नोदधि व रत्नरंजक नामक तीन भवनों में **धर्मगज** नामक भव्य पुस्तकालय था। नालन्दा महायान शाखा का प्रमुख केन्द्र था।

हेनसांग के समय **शीलभद्र** यहां के कुलपति थे। वे समतट (बंगाल) के निवासी थे। हेनसांग ने शीलभद्र से योग शास्त्र का अध्ययन किया। हेनसांग शीलभद्र को सत्य एवं धर्म का भण्डार कहता था। इत्सिंग के समय यहां के कुलपति राहुल मित्र थे। हेनसांग के समय नालन्दा में दस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

नालन्दा के प्रसिद्ध शिक्षकों में आर्यदेव और दिङ्नाग दक्षिण भारत के, धर्मपाली कांची के, गुणपति और स्थिरमति वल्लभी के निवासी थे।

धर्मपाल शीलभद्र के गुरु व पूर्व कुलपति थे।

प्रभामित्र, जिनमित्र, ज्ञानचन्द्र, चन्द्रपाल आदि अन्य विद्वान थे। जावा व सुमात्रा के शासक बालपुत्र देव ने नालन्दा में एक मठ बनवाया व उसके निर्वाह के लिए पाल शासक देवपाल से पांच गाँव दान में दिलवाये।

तिब्बत में बौद्ध धर्म में प्रचार हेतु सर्वप्रथम नालन्दा के विद्वान चन्द्रगोमिन (आठवीं सदी) व बाद में शांतरक्षित तिब्बत गये। शांतरक्षित को नालन्दा में शिक्षित कश्मीरी भिक्षु पद्मसंभव ने सहायता दी।

धर्मदेव एवं चीन जोन वाले नालन्दा के अन्य विद्वानों में कमलशील, कुमारजीव, धर्मदेव एवं गुणवर्मा थे। देवपाल के समय में ज्ञानपाल एवं रत्नश्री तिब्बत गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय को 1203 ई. में बाख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया।

#### विक्रमाशिला विश्वविद्यालय :-

इसकी स्थापना आठवीं शताब्दी में पाल वंशीय शासक धर्मपाल ने भागलपुर के पास की।

प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान **दीपकर श्रीज्ञान अतिशा** (11 वीं शताब्दी) ने विक्रमाशिला में शिक्षा व अध्यापन का कार्य किया व कुलपति रहे। वे गौड़ (बंगाल) के रहने वाले थे। कालान्तर में वे तिब्बत नरेश चुनचुब के निमन्त्रण पर तिब्बत गये।

यहाँ छः द्वार पण्डितों की समिति द्वारा प्रवेश दिया जाता था। 1203 ई. में बख्तियार खिलजी ने इसे दुर्ग समझकर जला दिया। सातवीं शताब्दी के मध्य तिब्बत के राजा गैम्पो ने अपने एक मंत्री थानमी को नालन्दा में अध्ययन के लिए भेजा। नालन्दा से तन्त्रशास्त्र का एक विद्वान कमलशील कुछ समय बाद तिब्बत गया व एक तिब्बती विद्वान की शास्त्रार्थ में पराजित किया।

#### वल्लभी विश्वविद्यालय :-

गुजरात के काठियावाड़ में समुद्र तट पर शिक्षा तट पर स्थित



वल्लभी नालन्दा विश्व विद्यालय के साथ विकसित हुआ व सातवीं शताब्दी तक शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया। गुणमति व स्थिरमति यहां के प्रसिद्ध विद्वान थे। वे नालन्दा में भी रहे। वे वल्लभी में सातवीं सदी में प्रमुख आचार्य थे। वल्लभी नगर की स्थापना मैत्रक वंशी शासक भट्टार्क ने की।

#### अन्य शिक्षा केन्द्र :-

पाल वंश के गोपाल ने ओदन्तपुरी के प्रसिद्ध विहार की स्थापना की, जबकि तिब्बती स्रोत के अनुसार इसका संस्थापक धर्मपाल था। रामपाल ने जगदल में महाकवि की स्थापना की।

#### भारतीय दर्शन

वेदान्त दर्शन का आधार **वादरायण** के वेदान्त सूत्र अथवा **ब्रह्मसूत्र** है, इन ब्रह्मसूत्रों पर विभिन्न दार्शनिकों ने अलग – अलग टीकाएँ (भाष्य) लिखकर अलग – अलग व्याख्याएँ की। ब्रह्मसूत्र के जितने भाष्य लिखे गये उतने ही वेदान्त सूत्र के संप्रदाय विकसित हुए।

ब्रह्म सूत्र के प्रमुख भाष्यकार	मत	भाष्य
शंकर	अद्वैतवाद	शारीरिक भाष्य
रामानुज	विशिष्टाद्वैतवाद	श्री भाष्य
मध्व	द्वैतवाद	पूर्णप्रज्ञभाष्य
निम्बाक	द्वैताद्वैतवाद	वेदान्त परिजात
वल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैतवाद	पूर्व मीमांसा भाष्य

#### शंकर के अद्वैत के विरुद्ध चार दार्शनिक संप्रदाय सामने आये, ये हैं।

रामानुज	श्री संप्रदाय
मध्वाचार्य (मध्व)	ब्रह्म संप्रदाय
विष्णुस्वामी/वल्लभाचार्य	रुद्र संप्रदाय

4. ऋग्वेद भाष्य ( संस्कृत)

5. अद्वैत मत का खण्डन

6. पंच महायज्ञ विधि

7. वल्लभाचार्य मत खण्डन

पाश्चात्य शिक्षा के समर्थन तथा विरोध के आधार पर आर्य समाज 1892 – 93 ई. में दो गुटों में बंट गया।

पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में हंसराज और लाला लाजपत राय

थे।

1886 में हंसराज व लाला लाजपत राय ने लाहौर में एंग्लो – विदिक स्कूल की स्थापना की। 1889 ई. में इन्होंने लाहौर में 'दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज' की स्थापना की।

पाश्चात्य शिक्षा के विरोधियों में **स्वामी श्रद्धानन्द** (लाला मुन्शीराम) एवं लेखराम थे। इन्होंने 1902 ई. में हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की।

लाला मुन्शीराम बाद में **स्वामी श्रद्धानन्द** के नाम से विख्यात हुए।

1922 ई. में **भाई परमानन्द** ने जाति – पाति तोड़क मण्डल की स्थापना की।

वेलेन्टाइन चिरोल ने आर्य समाज को ' **भारतीय अशान्ति का जन्मदाता** ' कहा है।

दयानन्द सरस्वती ने 'चार स्व' की अवधारणा दी ये है – स्व – राज्य , स्व – धर्म, स्व – देशी, स्व – भाषा दयानन्द सरस्वती राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के समर्थक थे। राजपूताने की देशी रियासतों में शाहपुरा के राव नाहर सिंह, उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह और जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह दयानन्द सरस्वत के विशेष भक्त एवं अनुयायी थे। तिलक के अनुसार दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक थे। **स्वराज्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग** भी स्वामी दयानन्द ने ही किया।

#### स्वामी विवेकानन्द तथा रामकृष्ण मिशन

स्वामी विवेकानन्द (1863 – 1902 ई.) दक्षिणेश्वर के स्वामी नाम से प्रसिद्ध रामकृष्ण परमहंस (1834 – 1886 ई.) विवेकानन्द का वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ था।

रामकृष्ण परमहंस कलकत्ता में दक्षिणेश्वर स्थित 'काली मन्दिर' के पुजारी थे। उन्होंने काली माता, कृष्ण , ईसा मसीह तथा बुद्ध के दर्शन के किए थे। इनका वास्तविक नाम गदाधर चट्टोपाध्याय था।

1886 ई. में रामकृष्ण की मृत्यु के बाद नरेन्द्र नाथ दत्त ने संन्यास लेकर अपने गुरु के संदेश को भारत वर्ष में भ्रमण कर प्रचारित किया।

रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा प्राप्त करने के बाद नरेन्द्र नाथ **विविदिषानन्द** के नाम से जाने गये।

नरेन्द्र नाथ ने 1893 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया।

इस सम्मेलन में जाने से पूर्व नरेन्द्र नाथ ने **खेतड़ी महाराजा अजीत सिंह** के सुझाव पर नाम बदल कर **स्वामी विवेकानन्द** नाम रखा।

शिकागो सम्मेलन में स्वामी जी के भाषण के बारे में '**न्यूयार्क हैराल्ड**' ने लिखा कि ' उन्होंने सुनने के बाद हमें यह लगता है कि भारत जैसे ज्ञान सम्पन्न देश में अपने धर्म प्रचारक भेजना कितना मूर्खतापूर्ण कार्य है।

स्वामी जी ने 1896 ई. में न्यूयार्क ( अमेरिका) में वेदान्त सभाओं की स्थापना की।



1896 ई. में अमेरिका से वापस आकर स्वामी विवेकानन्द 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की।

रामकृष्ण मिशन ने कलकत्ता के 'वेल्लूर' और अल्मोड़ा के 'मायावती' नामक स्थानों पर मुख्यालय खोला।

1899 ई. में विवेकानन्द दूसरी बार अमेरिका गये। 1900 ई. पेरिस में 'धर्मो के इतिहास के सम्मेलन' में भाग लिया। 1901 ई. में वे भारत वापस आये।

स्वामी विवेकानन्द ने 'मैं समाजवादी हूँ' नामक पुस्तक लिखी। उन्होंने ज्ञानयोग, कर्मयोग तथा राजयोग नामक पुस्तक लिखी। स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि 'जब तक देश में लाखों लोग भूखें तथा अज्ञानी हैं, मैं ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही समझूंगा। जिन्होंने उनकी मेहनत की कमाई से शिक्षा ग्रहण की पर उनकी परवाह नहीं करते।

विवेकानन्द ने यह भी कहा 'मेरे बंधुओं यह मत भूलो, निचले वर्ग के लोग, गरीब, अशिक्षित, मोची तथा सफाई करने वाले तुम्हारे ही हाड़ - मांस हैं, तुम्हारे बांधव हैं।' सुभाषचन्द्र बोस ने स्वामी विवेकानन्द को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का 'आध्यात्मिक पिता' कहा है।

सिस्टर निवेदिता विवेकानन्द की शिष्या थी जिसका मूल नाम मारग्रेट नोबल था।

स्वामी विवेकानन्द ने दो समाचार पत्रों का सम्पादन किया। पहला अंग्रेजी भाषा में 'प्रबुद्ध भारत' तथा दूसरा बंगाली में 'उद्बोधन'।

### मराठा राज्य

मराठा राज्य उत्कर्ष शिवाजी के नेतृत्व में 17 वीं शताब्दी में हुआ। इसी समय मुगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया आरम्भ हो गई। मुगलों के पतन के समय स्थापित स्वतंत्र राज्यों में मराठा राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली था।

मुगलों द्वारा अहमदनगर का विलय मराठों के उदय का तात्कालिक राजनैतिक कारण था।

ग्रान्ट डफ के अनुसार सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मराठों का उदय 'आकस्मिक अग्निकांड' की भांति हुआ।

शिवाजी के उदय से पूर्व मराठे बहमनी राज्य व उसके उत्तराधिकारी राज्यों बीजापुर व अहमदनगर में सैनिक व प्रशासनिक पदों पर कार्य करते थे।

जहाँगीर ने सर्वप्रथम मराठों का महत्व जानकर उन्हें मुगल सेना ने रखा।

अहमदनगर के मलिक अम्बर ने युद्ध व प्रशासन दोनों में मराठा प्रतिभा का उपयोग किया।

शिवाजी के पिताजी शाहजी भौंसले पहले अहमदनगर की सेवा में थे। बाद में वे बीजापुर की सेवा में चले गये, जहाँ उन्होंने कर्नाटक क्षेत्र में बड़ी जागीर प्रदान की।

मराठों में आर्थिक व सामाजिक समानता थी। 16 वीं व 17 वीं शताब्दी में चले धार्मिक आन्दोलन ने इनमें एकता की भावना भर दी तथा शिवाजी ने मराठों में राजनैतिक चेतना व स्वतंत्रता की भावना भर दी। इस तरह मराठों के उत्थान में महाराष्ट्र की

समाजिक स्थिति एवं धार्मिक चेतना सहायक रही।

गुरु रामदास ने मुगलों के विरुद्ध मराठों में राजनैतिक चेतना जागृत की व इसे शिवाजी के नेतृत्व प्रदान किया।

तुकाराम, रामदास, वामन पण्डित, एकनाथ आदि सन्तों ने मराठी भाषा में उपदेश दिये तथा प्रजातंत्र की ठोस भावना का विकास किया।

महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति भी मराठों के उत्थान में सहायक रही।

शिवाजी ने 'हिन्दु पादशाही' अंगीकार की, गाय व ब्राह्मण की रक्षा का व्रत लिया और 'हिन्दु धर्मोद्धारक' की पदवी धारण की।

सन्त तुकाराम से शिवाजी प्रभावित थे। तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे। उन्होंने शिवाजी द्वारा दिये उपहारों को लेने से मना कर दिया था।

शिवाजी के पिताजी के पूर्वज मेवाड़ के सिसोदिया वंश से संबंधित थे तथा माता जीजीबाई के यादव वंश के लाखोजी जाधव की पुत्री थी।

### शिवाजी ( 1627 – 1680 ई.)

शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. में पूना के पास शिवनेर के किले में हुआ। इनके पिता शाहजी भौंसले व माता का नाम जीजाबाई था। शाहजी ने जीजाबाई का परित्याग कर तुकाबाई मोहिते से विवाह कर लिया था। तुकाबाई मोहिते से शाहजी को व्यंकोजी नामक पुत्र हुआ, जो उसकी मैसूर व पूर्वी कर्नाटक रियासत का उत्तराधिकारी हुआ।

शिवाजी अपनी माता जीजाबाई व सरंक्षक एवं शिक्षक दादा कोंण देव के संरक्षण में पूना में अपने पिता को पैतृक जागीर में बड़े हुए। 12 वर्ष की आयु में शिवाजी को पूना की पैतृक जागीर अपने पिता से प्राप्त हुई।

1641 ई. में शिवाजी का विवाह सईबाई निम्बालकर से हुआ।

शिवाजी के गुरु का नाम 'समर्थ गुरु राम दास' था। उन्होंने 'दासबोध' नामक एक पुस्तक लिखी।

शिवाजी को सेना में अधिकतर मावल प्रदेश व मराठा थे।

शिवाजी ने सर्वप्रथम 1643 ई. में बीजापुर के सिंहगढ़ किले पर अधिकार किया।

1646 ई. में एक षड्यंत्र द्वारा 'पुरन्दर' किले को 'नीलोजी नीलकण्ठ' से छीन लिया।

1656 ई. में चन्द्रराव मोरे से बीजापुर में तोरण नामक पहाड़ी किला छीन लिया। यह शिवाजी की महत्वपूर्ण विजय थी।

चन्द्रराव मोरे की हत्या कर दी गई। इससे शिवाजी का प्रभाव बढ़ा।

अप्रैल, 1656 ई. में राजगढ़ ( रायगढ़ ) के किले को जीतकर उसे शिवाजी ने अपनी राजधानी बनाई।

शिवाजी 1656 ई. में तक चाकन, कोंडाना, तिकोना, बारामती, सूपा, लोहागढ़ आदि अन्य किलों पर भी अधिकार कर चुका था।

1657 ई. में शिवाजी की मुगलों से पहली मुठभेड़ तब हुई जब शिवाजी बीजापुर की तरफ से मुगलों से लड़ा। इस समय





शिवाजी ने जुन्नार पर आक्रमण कर तीन लाख हूण लूट लिए। 1657 ई. में ही उत्तराधिकार युद्ध का फायदा उठाकर शिवाजी ने कोंकण को जीता।

शिवाजी को दबाने के लिए बीजापुर के **अफजल खाँ** नामक योग्य सरदार का नियुक्त किया। **अफजल खाँ** ने शिवाजी को प्रतापगढ़ नामक स्थान पर मुलाकात के लिए बुलाया व उसे धोखे से मारने की योजना बनाई किन्तु ब्राह्मण दूत कृष्णजी भास्कर ने अफजल खाँ का उद्देश्य शिवाजी को बता दिया और शिवाजी ने चालाको से मुलाकात के दौरान 2 नवम्बर, 1659 ई. को अफजल खाँ की हत्या कर दी।

1660 ई. में शिवाजी ने बीजापुर से पन्हाला का दुर्ग जीता। औरंगजेब ने 1660 ई. में **शाइस्ता खाँ** को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया व उसे शिवाजी का समाप्त करने का आदेश दिया।

16 अप्रैल, 1663 ई. में शिवाजी ने रात्रि में चुपके से पूना में शाइस्ता खाँ के महल (**लाल महल**) पर आक्रमण कर दिया। शाइस्ता खाँ भाग निकला लेकिन उसकी दो अंगुलिया कट गई। इससे शिवाजी की प्रतिष्ठा काफी बड़ी।

1664 ई. में शिवाजी ने सूरत पर आक्रमण कर शहर का लूटा। मुगल फौजदार इनायत खाँ भाग गया।

1665 ई. में औरंगजेब ने आमेर के मिर्जापुर जयसिंह को शिवाजी को कुचलने के लिए नियुक्त किया। जयसिंह ने पुरन्दर को जीत लिया व रायगढ़ को घेर लिया। अन्त में 24 जून, 1665 ई. को शिवाजी व जयसिंह के बीच **पुरन्दर की सन्धि** हुई।

#### पुरन्दर की सन्धि की शर्तें :-

1. शिवाजी ने चार लाख हूण वार्षिक आय वाले तेईस किले मुगलों को सौंपे तथा शिवाजी के पास रायगढ़ सहित केवल बारह किले रहे, जिनकी वार्षिक आय एक लाख हूण थी।
2. शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को पांच हजार का मनसबदार बनया व शम्भाजी को 5000 घोड़ों के दल के साथ बादशाह की सेवा में रहना होगा। शिवाजी को मुगल दरबार में निजी उपस्थिति से मुक्त कर दिया।
3. शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता का वचन दिया। औरंगजेब ने पुरन्दर सन्धि को स्वीकार कर शिवाजी के लिए फरमान व खिलअत भेज दी। जयसिंह ने औरंगजेब को यह लिखा कि 'हम शिवा को एक वृत्त के केन्द्र की तरह बांध लेंगे'।

1666 ई. जयसिंह के कहने पर शिवाजी दीवाने -खास में मुगल दरबार में आगरा आये। किन्तु औरंगजेब ने उन्हें पांच हजारी मनसबदारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। इस अपमान से नाराज होकर शिवाजी दरबार से उठकर चले गये क्योंकि शिवाजी से हारे हुए जसवन्तसिंह 7000 मनसबदारों की पंक्ति में शिवाजी के आगे खड़े थे।।

शिवाजी को जयसिंह के पुत्र रामसिंह की देखरेख में आगरा के जयपुर भवन में कैद किया गया परन्तु वे चतुराई से अपने सौतेले भाई **हीरोजी** को अपने स्थान पर लेटाकर फरार हो गये।

1667 ई. में शिवाजी ने औरंगजेब को कहा कि वह सम्राट की और से दक्षिण में युद्ध करने को तैयार है तथा शम्भाजी को भी युवराज को भी मुअज्जम की सेवा में भेज सकता है। यदि औरंगजेब उसे क्षमा कर दे।

औरंगजेब ने शिवाजी के प्रस्ताव को स्वीकार कर शिवाजी को राजा की उपाधि दी तथा उसके पुत्र शम्भाजी को बराबर में एक मनसब और जागीर दी।

तीन वर्षों तक मुगलों से शान्ति के बाद 1670 ई. में शिवाजी व मुगलों में पुनः युद्ध हो गया। पुरन्दर की सन्धि में खोये हुए अनेक किलों को जीत लिया, जिनमें कोंडाना, सबसे महत्वपूर्ण था। इसका नाम शिवाजी ने सिंहगढ़ रखा। कोंडाना किले को शिवाजी के सेनापति नानजी ने जीता था।

इसके बाद अहमदनगर बरार बगलाना व खानदेश के प्रदेशों को लूटा।

शिवाजी ने अक्टूबर, 1670 ई. में सूरत पर पुनः आक्रमण कर लूटा।

फरवरी, 1672 ई. में शिवाजी के पेशवा मोरोपन्त त्रिमात्र पिंगले ने दक्षिण के मुगल संयुक्त बहादुर खान, शाही सेना (दिलेर खाँ के नेतृत्व में) व गुजरात के सूबेदार की संयुक्त सेना को खानदेश व गुजरात की सीमा पर **सलहेर के युद्ध** में पराजित किया। शिवाजी ने 15 जून, 1674 ई. में काशी के प्रसिद्ध विद्वान **गंगाभट्ट** या **गागभट्ट** से **रायगढ़** के किले में राज्याभिषेक कराया व छत्रपति की उपाधि धारण की।

शिवाजी ने भगवा ध्वज को अपना झंडा बनाया।

महाराष्ट्र के कट्टर ब्राह्मण शिवाजी को क्षत्रिय नहीं मानत थे, इसलिए उन्होंने काशी के विद्वान गंगाभट्ट (विश्वेश्वरजी) से राज्याभिषेक कराया। गंगाभट्ट ने शिवाजी को क्षत्रिय स्वीकार किया। इस राज्याभिषेक के 12 दिन बाद शिवाजी की माता जीजाबाई का निधन हो गया।

शिवाजी का दूसरी बार राज्याभिषेक **निश्चलपुरी गोस्वामी** नामक एक तांत्रिक ने 4 अक्टूबर, 1674 ई. में किया क्योंकि उसके अनुसार पहला राज्याभिषेक अशुभ मुहरत में हुआ था।

शिवाजी का अंतिम महत्वपूर्ण अभियान 1677 - 78 ई. में कर्नाटक अभियान था। इसके दौरान शिवाजी ने गोलकुण्डा के मंत्री मदन्ना के माध्यम से गोलकुण्डा के सुल्तान से गुप्त समझौता कर बीजापुरी कर्नाटक को जीतने की योजना बनाई। जीते हुये प्रदेशों को दोनों पक्ष बराबर बांटने पर सहमत हुये। 15 जुलाई, 1677 ई. में शेर खाँ लोदी ने शिवाजी को कर्नाटक सौंप दिया।

इस अभियान में शिवाजी ने जिर्जी, मदुरै, वैल्लूर आदि किलों को जीता, जिजी को शिवाजी ने कर्नाटक प्रदेश की राजधानी बनाई। तुंगभद्रा से कावेरी तक का संपूर्ण प्रदेश शिवाजी के नियंत्रण में आ गया।

शिवाजी ने **दरिया सारंग** के नेतृत्व में नौ सेना का निर्माण करवाया व 1669 ई. में शिवाजी ने जंजीरा के टापू के



अबीसीनीयाई सीदियों पर भी आक्रमण किया लेकिन उन्हें जीत नहीं सका।

सीदी पहले अहमदनगर के अधीन थे किन्तु 1636 ई. के बाद वे बीजापुर की अधीनता स्वीकार करने लगे।

शिवाजी ने अपने पुत्र शाम्बाजी के व्यवहार से दुःखी होकर उसे 1678 ई. पन्हाला के दुर्ग में नजरबन्द रखा।

अप्रैल, 1680 ई. में रायगढ़ के किले में शिवाजी का निधन हो गया।

जदुनाथ सरकार के अनुसार शिवाजी में हिन्दु धर्म की रक्षा की भावना तो थी किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य राजनैतिक था तथावे स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना चाहते थे। शिवाजी के सम्राज्य संगठन में सर्वाधिक सहयोग छोटे वतनदारों व देशमुखों ने दिया। बड़े देशमुख स्वतंत्र मराठा राज्य के पक्ष में नहीं थे।

### शिवाजी का प्रशासन

शिवाजी का प्रशासन मुगल व दक्षिणी राज्यों के प्रशासन से प्रभावित था। निरंकुश लोकहितकारी (Benevolent despotism) था।

प्रशासन के शीर्ष पर राजा होता था जो 'छत्रपति' की उपाधि धारण करता था राजा अन्तिम न्यायाधीश और सेनापति होता था। शिवाजी के प्रशासन में अष्टप्रधान नामक आठ मंत्री होते थे, जो राजा को परामर्श देते थे। अष्ट प्रधान मंत्रिमण्डल नहीं था। प्रत्येक मंत्री राजा के प्रति उत्तरदायी था। शिवाजी अष्ट प्रधान की सलाह मानने को बाध्य नहीं था।

#### अष्ट प्रधान निम्नलिखित थे :-

1. **पेशवा** - इसका कार्य संपूर्ण राज्य के शासन की देखभाल करना था। यह प्रधानमंत्री होता था एवं राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यों की देखभाल करता था। शिवाजी के समय प्रथम पेशवा शामराज नीलकण्ठ थे उनके बाद मोरोपन्त पिंगले पेशवा थे।
2. **अमात्य अथवा मजमुदार** - यह वित्त मंत्री था, जो राज्य की आय - व्यय की जाँच करता था। प्रथम अमात्य बालकृष्ण पन्त हनुमन्त थे। उसके बाद नीलोजी आमात्य बने।
3. **मंत्री अथवा वाकयानवीस** - यह राज्य की दैनिक गतिविधियों को लिपिबद्ध करता था, राजा के जीवन की सुरक्षा की देखभाल करता था। यह जासूसी विभाग का अध्यक्ष भी था।
4. **सचिव या शुरुनवीस** - यह राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य देखता था।
5. **दबीर या सुमन्त** - यह विदेश मंत्री था।
6. **सेनापति अथवा सर - ए - नौबत** - इसका कार्य सेना की भर्ती, संगठन व सेना में अनुशासन बनाये रखना था।
7. **पण्डित राव या सदर मुहतासिब** - यह धार्मिक कार्यों व अनुदायों की देखरेख करता था।
8. **न्यायाधीश** - यह राजा के बाद न्यायाधीश होता था। पण्डितराव व न्यायाधीश के अतिरिक्त सभी मंत्रियों को अपने असैनिक कर्तव्यों के अतिरिक्त सैनिक जिम्मेदारियाँ भी पूरी करनी पड़ती थी। चिटनिश व मुंशी भी महत्वपूर्ण अधिकारी थे, जो पत्र व्यवहार की देखभाल करते थे, व सचिव की भाँति कार्य करते थे। शिवाजी का राज्य चार प्रान्तों में विभाजित था। प्रत्येक प्रान्त एक वायसराय (सूबेदार) के अधिकार में था।

प्रान्तों को प्रान्तों व तालुकों में विभाजित किया गया था। परसनों के अन्तर्गत तरफ व मौज आते थे। प्रान्तों का प्रमुख सर सूबेदार तथा रमनों का प्रमुख 'मामलातदार' कहा जाता था। स्वराज्य प्रदेश का प्रशासन सीधे शिवाजी के अधीन था। अधिकारियों को नकद वेतन दिया जाता था व जागीर प्रथा समाप्त कर दी गई थी।

#### सेना :-

शिवाजी की सेना में पैदल व घुड़सवार दोनों थे।

घुड़सवार सैनिक दो प्रकार के होते थे। अश्व सेना को पागा कहते थे।

1. **बरगीर** :- जिन्हें राज्य की और से घोड़े व अस्त्र दिये जाते थे।

2. **सिलेदार** :- वे सैनिक जो घोड़े व अस्त्र स्वयं लेते थे।

पच्चीस अश्वरोहियों की एक टुकड़ी होती थी, जो एक हवलदार के अधीन होते थे।

पाँच हवलदारों पर एक जुमलादार होता था व 10 जुमलादार एक हजार के अधीन होते थे। 5 हजार के ऊपर एक पंच हजार होता था।

**सर - ए - नौबत** - समस्त अश्वसेना का प्रधान होता था।

शिवाजी ने मुस्लिमों को भी सेना में भर्ती किया।

पैदल सेना में नौ सैनिकों (पाइक) के ऊपर एक नायक होता था। प्रत्येक पाँच नायकों पर एक हवलदार तथा दो तीन हवलदारों पर एक जुमलादार होता था तथा दस जुमलादारों पर एक हजार होता था।

मराठा सैन्य व्यवस्था में किले महत्वपूर्ण थे। किलों में तीन अधिकारी होते थे। 1. हवलदार 2. सर - ए - नौबत 3.

सबनीस हवलदार। हवलदार व सर ए नौबत मराठा होते थे सबनीस ब्राह्मण होते थे।

कोंकण प्रदेश जीतने के बाद जंजीरा के अबीसीनियाई सिद्धियों के आक्रमण से अपने समुद्र तट की रक्षा के लिए नौ सेना का निर्माण आवश्यक था। अतः शिवाजी ने कोलाबा में एक जहाजी बेड़े का भी निर्माण कराया जो दो कमानों में था। एक कमान दरिया सांरग तथा दूसरी नायक के अधीन थी। नौसेना प्रमुख को सरखेल कहा जाता था।

मराठों ने गुरिल्ला युद्ध कला अहमदनगर के मलिक अम्बर से सीखी।

शिवाजी की सेना में मावले अंगरक्षक थे।

अब्बे केरे के अनुसार शिवाजी गुप्तचरों को अत्यधिक धन देता था। जिससे गुप्तचर उसे सही सूचना देते थे।

#### राजस्व प्रशासन :-

शिवाजी की राजस्व व्यवस्था अहमद नगर के मलिक अम्बर की रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी। इसमें किसानों से सीधा संपर्क स्थापित किया जाता था।

शिवाजी ने भूमि की पेमाईश के आधार पर लगान निर्धारित किया तथा भूमि को ठेके पर देने का प्रथा त्याग दी। भूमि के नाप की इकाई काठी थी। 20 काठी एक बीघा के बराबर होता था तथा 120 बीघा एक चंवर के बराबर होता था।

शिवाजी ने जागीर प्रथा को समाप्त कर दिया।

आरम्भ में पैदावार का एक तिहाई लगान के रूप में वसूल लिया जाता था। बाद में यह 40 प्रतिशत हो गया क्योंकि इसके बदले स्थानीय करों व चुंगी को माफ कर दिया गया। लगान नकद व अनाज दोनों रूपों में दिया जा सकता था।

मराठा में प्रचलित तांबे के सिक्के को रुक्का कहा जाता था।



शिवाजी के आदेश पर 'अन्नोजी दत्तों' ने 1679 ई. में विस्तृत भू सर्वेक्षण करवाया।

राजस्व निर्धारण के लिए शिवाजी का राज्य 16 प्रान्तों में बांटा गया। प्रान्तों को तर्क और मौजों में बांटा गया। तर्क का प्रधान कारकून कहलाता था।

गांव के पैतृक राजस्व अधिकारी पाटिल व जिले के अधिकारी देशमुख या देशपाण्डे कहलाते थे।

जिनका भूमि पर पैतृक अधिकार होता था **मीसासदार** कहलाते थे।

भूमि कर व व्यापारिक कर शिवाजी की आय के स्थाई साधन थे किन्तु से सेना के व्यय के लिए पर्याप्त नहीं थे। अतः शिवाजी ने चौथे व सरदेशमुखी को अपनी आय का प्रमुख साधन बनाया।

#### **चौथ एवं सरदेशमुखी :-**

चौथ नामक कर के बारे में इतिहासकारों के अलग – अलग मत हैं।

रानाडे के अनुसार चौथ तीसरी शक्ति के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने के बदले जाने वाला कर था।

यदुनाथ सरकार के अनुसार चौथ मराठा आक्रमण से बचने के बदले में वसूल किया जाने वाला कर था। सरदेशाई के अनुसार चौथ विजित क्षेत्रों से वसूल किया जाने वाला कर था।

चौथ विजित राज्यों में उपज के एक चौथाई के रूप में वसूल किया जाता था।

**सरदेशमुखी** – आय के 10 प्रतिशत के रूप में अतिरिक्त कर था। यह कर प्रजा से वंशानुगत सरदेशमुख होने के नाते लिया जाता था।

#### **न्याय प्रशासन :-**

गांव के मामलों की सुनवाई पटेल करते थे।

दीवानी व फौजदारी मामलों में आगे अपील की जा सकती थी। न्यायाधीश ब्राह्मण होते थे जो स्मृतियों के आधार पर निर्णय देते थे।

अपील की अन्तिम अदालत हाजिर मजलिस थी, जो शिवाजी की मृत्यु के बाद समाप्त हो गई।

#### **शम्भाजी (1680 – 1689 ई.)**

शिवाजी की मृत्यु के बाद उसकी पटरानी (सोयरा बाई) अपने पुत्र राजाराम को शासक बनाना चाहती थी किन्तु शम्भाजी ने पन्हाला किले की कैद से मुक्त होकर राजाराम को गद्दी से उतार कर 20 जुलाई, 1680 ई. को गद्दी प्राप्त की।

शम्भाजी अभियाजी, क्रोधी व भोगविलासी था। एक उत्तर भारतीय (कन्नौज) ब्राह्मण 'कवि कलश' उसका सर्वोच्च अधिकारी था।

जब मुगल फौजों ने शम्भाजी को कल्याण में घेरा डालकर घेर लिया तो पुर्तगालियों ने मुगलों को रसद की सहायता दी थी। 1681 ई. में शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को शरण दी।

फरवरी, 1689 ई. में शम्भाजी को मुगल अमीर मुकर्रब खान ने **संगमेश्वर** नामक स्थान पर पकड़ा।

औरंगजेब ने शम्भाजी के शासने इस्लाम स्वीकार करने का विकल्प रखा किन्तु शम्भाजी ने अस्वीकार कर दिया। इस पर 11 मार्च, 1689 ई. में औरंगजेब ने शम्भाजी व कवि कलश की यातना देकर हत्या कर दी तथा उसकी पत्नी येसूबाई और पुत्र शाहु को रायगड के किले में कैद कर लिया।

#### **राजाराम (1689 – 1700 ई.)**

जब शम्भाजी द्वारा पकड़े गये तो फरवरी, 1689 ई. में राजाराम को मराठा मंत्रिपरिषद के राजा घोषित किया व रायगड में ही उसका राज्याभिषेक किया।

1689 ई. में ही राजाराम रायगड पर मुगल आक्रमण की आशंका से रायगड छोड़कर जिंजी चला गया। 1698 ई. तक **जिंजी** मराठों की राजधानी रही। राजाराम को मुगल सेनापति जुल्फिकार खाँ ने जिंजी के किले में आठ वर्ष तक घेरे रखा व 1689 ई. में जिंजी पर मुगलों का नियंत्रण हो गया। 1699 ई. से **सतारा** मराठों की राजधानी बनी।

राजाराम को सांताजी घोरपडे व धन्नाजी जाधव नामक दो योग्य मराठा सेनानायकों का साथ मिला।

राजाराम ने अपने को शाहु का प्रतिनिधि माना व कभी गद्दी पर नहीं बैठा।

राजाराम ने मराठा सरदारों को सेना रखने व अपने क्षेत्र में स्वतंत्रता से कार्य करने की छूट दी। राजाराम ने मराठा सरदारों को भी जगारे भी दी, जिसमें मराठा परिसंघ का उदय हुआ।

शम्भाजी की हत्या के बाद राजाराम के नेतृत्व में मराठा स्वतंत्रता संग्राम आरम्भ हुआ। जो 1707 ई. में मुगलों द्वारा शाहु को मराठा छत्रपति स्वीकार करने तक चलता रहा।

1689 ई. में राजाराम ने प्रतिलिपि नामक नया पद सृजित किया।

#### **शिवाजी द्वितीय तथा ताराबाई ( 1700 ई. – 1707 ई.)**

1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा ताराबाई ने अपने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी द्वितीय नाम से गद्दी पर बैठाया मुगलों के विरुद्ध स्वतंत्रता संघर्ष जारी रखते हुए रायगड, सतारा, व सिंहगड आदि किलों को मुगलों से जीता।

#### **शाहु (1707 – 1749 ई.)**

शम्भाजी के पुत्र शाहु को औरंगजेब ने कैद कर रखा था। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र आजमशाह ने मराठों में फूट डालने के उद्देश्य से जुल्फिकार खाँ की सलाह पर 8 मई, 1707 ई. को शाहु को कैद से मुक्त कर दिया। लेकिन जब शाहु सतारा पहुंचे तब तक ताराबाई ने शिवाजी द्वितीय को छत्रपति घोषित कर दिया था।

शाहु को मुगलों की कैद में ही राजा की उपाधि और मनसब भी दिया गया।

शाहु ने बालाजी विश्वनाथ की मदद से धन्नाजी जाधव को अपने पक्ष में कर लिया था तथा खेडा (खेद) के युद्ध ( 12 अक्टूबर, 1707 ई.) में ताराबाई को परास्त किया।

1708 ई. में सतारा को जीत लिया। अब ताराबाई शिवाजी द्वितीय को लेकर कोल्हापुर चली गई। मराठा राज्य दो भागों में बंट गया। सतारा शाहु के नियंत्रण में रहा व कोल्हापुर शिवाजी द्वितीय या ताराबाई के नियंत्रण में रहा।

शिवाजी द्वितीय के बाद राजाराम का दूसरा पुत्र शम्भाजी द्वितीय कोल्हार की गद्दी पर बैठा। शम्भाजी द्वितीय राजाराम की दूसरी पत्नी राजसबाई का पुत्र था। राजसबाई ने 1714 ई. में ताराबाई व शिवाजी द्वितीय को बंदी बना लिया। इसे महल षडयंत्र कहा जाता है।

1731 ई. की वार्ना की संधि द्वारा सतारा व कोल्हार की शत्रुता समाप्त हुई। इस संधि द्वारा शम्भाजी द्वितीय को मराठा के दक्षिणी भाग ( राजधानी कोल्हार) पर शासन करने का अधिकार मिला व उत्तरी भाग जिसकी राजधानी सतारा थी, पर शाहु का शासन रहा।



शाहू ने 1708 ई. में बालाजी विश्वनाथ को सैनाकर्ते (सेना व्यवस्थापक) का पद दिया व 1713 ई. उसे पेशवा बनाया। धीरे-धीरे बालाजी विश्वनाथ व उसके उत्तराधिकारी पेशवा वास्तविक शासक बन गये तथा छत्रपति नाम मात्र के शासन रह गये। शाहू नि : संतान थे, अतः उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व 1749 ई. ताराबाई के पौत्र राजाराम द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

1750 ई. में राजाराम द्वितीय व तत्कालीन पेशवा बालाजी बाजीराव के मध्य रघुजी भोंसले की मध्यस्थता से संगोला की संधि से मराठा छत्रपति। नाममात्र के शासक रह गये एवं पेशवा पद वंशानुगत बना दिया गया। पेशवा वास्तविक शासक बन गये व राजनीति का केन्द्र पूना हो गया। संगोला की संधि का कारण यह था कि पहले तो ताराबाई ने राजाराम द्वितीय (रामराजा) की अपने पुत्र शिवाजी द्वितीय का पुत्र बताया व शाहू का उत्तराधिकारी नियुक्त करवा दिया किन्तु बाद में ताराबाई ने यह कि राजाराम द्वितीय (रामराजा) उसके पुत्र शिवाजी द्वितीय का पुत्र नहीं था। इस कारण पेशवा बालाजी बाजीराव ने संगोला की संधि कर राज्य के समस्त अधिकार अपने हाथ में ले लिए।

मरदेसाई के अनुसार शाहू मराठों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक था। राजाराम के बाद द्वितीय उत्तराधिकारी हुआ। नाना फडनवीस ने शाहू द्वितीय को मिलने वाले भत्तों में कमी कर दी। प्रतापसिंह (1808 – 39 ई.) शाहू द्वितीय का उत्तराधिकारी हुआ। प्रताप सिंह ने अनेक बार पेशवाओं के विरुद्ध अंग्रेजों की मदद की। प्रतापसिंह के बाद शाहजी अप्पा साहिब (1839 – 48 ई.) उत्तराधिकारी हुए। अप्पा साहिब की मृत्यु के बाद सतारा का हड़प नीति द्वारा डलहौजी ने अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।

#### **भक्ति आन्दोलन :-**

वैसे तो श्वेताश्वर उपनिषद में पहली बार भक्ति का उल्लेख मिलता है। किन्तु भक्ति का सर्वप्रथम विस्तृत उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता है जहाँ इसे मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया गया है।

वैष्णव सम्प्रदाय चार प्रमुख शाखाओं में विभाजित था। प्रथम सम्प्रदाय रामानुज के समर्थकों का जो लक्ष्मी नारायण की पूजा व भक्ति में विश्वास करते थे। दूसरा सम्प्रदाय चैतन्य महाप्रभू का था। तीसरा सम्प्रदाय वल्लभाचार्य के समर्थकों का था। सूरदास व मीराबाई भी इसी सम्प्रदाय के थे। वे श्री कृष्ण की पूजा करते थे व मूर्ति पूजा पर बल देते थे। चौथा सम्प्रदाय रामानन्द के समर्थकों का था राम सीता की पूजा करते थे।

वैष्णव भक्ति आंदोलन पर भागवत् पुराण का प्रभाव था।

### **भक्ति आंदोलन के प्रमुख सन्त**

#### **रामानुज :-**

रामानुज वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। वे वेदान्त के विशिष्टाद्वैत दर्शन (1017 – 1137 ई.) के प्रणेता थे तथा सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे। उन्होंने श्री संप्रदाय की स्थापना की। रामानुज प्रथम थे जो ज्ञान के स्थान पर भक्ति को मुक्ति का साधन मानते थे।

रामानुज ने भक्ति को दार्शनिक आधार दिया। रामानुज का जन्म तमिलनाडु के पेराम्बदूर में हुआ था इनकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र काँची और श्रीराम था। इन्होंने श्रीरंगम के मन्दिर में शिक्षण का कार्य भी किया। रामानुज ने अपने गुरु यादव प्रकाश से काँची में वेदान्त की शिक्षा ग्रहण की। शैव अनुयायी चोल शासक कुलोटुंग प्रथम के विरोध के कारण रामानुज को श्रीरंगमन छोड़ना पड़ा तथा तिरुपति को केन्द्र बनाया।

#### **निम्बार्क (12 वीं सदी)**

निम्बार्क का जन्म दक्षिण में हुआ। ये तेलगू ब्राह्मण थे। ये रामानुज से प्रभावित थे व रामानुज से समकालीन थे तथा वैष्णव सम्प्रदाय में इन्होंने द्वैताद्वैत दर्शन प्रचलित किया। इन्होंने राधाकृष्ण की भक्ति की व मथुरा के पास ब्रज (वृंदावन) में अपना आश्रम स्थापित किया। इनका निधन 1172 ई. में हुआ। कुछ विद्वान निम्बार्क को 14 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का मानते हैं। क्योंकि 14 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में माधवाचार्य द्वारा लिखित संवदर्शन संग्रह में निम्बाई का उल्लेख नहीं है। निम्बार्क का अधिकांश समय वृंदावन में बीता। वे अवतारवाद में विश्वास रखते थे। द्वैताद्वैत को भेदाभेद या सनक संप्रदाय भी कहते थे। भेदाभेद से अभिप्राय है कि ईश्वर, आत्मा व जगत तीनों में समानता होते हुए भी परस्पर भिन्नता है। राजस्थान में निम्बार्क पीठ अजमेर जिले में सलेमाबाद में है।

#### **मध्वाचार्य (1197 – 1276 ई.)**

मध्वाचार्य ने द्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार ईश्वर व जीव पृथक् – पृथक् हैं। इन्होंने शंकर व रामानुज के दर्शन का विरोध किया। वे लक्ष्मी नारायण (विष्णु) के उपासक थे। इनका जन्म 1199 ई. में दक्षिण भारत में उड़ीसा में उडुपी में हुआ।

मध्य ने ब्रह्म संप्रदाय की स्थापना की। मध्य को पूर्ण प्रज्ञा या आनन्द तीर्थ भी कहा जाता था। इन्हें वायु का अवतार माना जाता था।

मध्य का दर्शन भागवत पुराण पर आधारित था।

#### **रामानन्द (15वीं सदी)**

इन्होंने दक्षिण से उत्तरी भारत में भक्ति का प्रसार कर सेतु का काम किया। वे उत्तरी भारत के पहले महान् आंदोलन के सन्त थे। तथा रामानुज के शिष्य थे एवं रामानुज के श्रीसम्प्रदाय के पाँचवें गुरु बनें, परन्तु इन्होंने विष्णु के स्थान पर राम की भक्ति की। रामानन्द ने शैव एवं विष्णु धर्म में प्रयो में समन्वय स्थापित किया।

इनका जन्म इलाहाबाद में कान्यबुज ब्राह्मण परिवार में हुआ।

इनके गुरु का नाम राघवानन्द था।

इन्होंने संस्कृत के स्थान पर हिन्दी में उपदेश दिये जिससे आन्दोलन की लोकप्रियता बढ़ी।

उनहोंने सभी वर्गों को उपदेश दिये। वे सभी जातियों का समान मानते थे, किन्तु उन्होंने जाति प्रथा का कोई विरोध नहीं किया।

रामानन्द के 12 शिष्य थे। वे विभिन्न जातियों के थे जैसे रैदास(रविदास) चमार कबीर, जुलाहा, धन्ना जाट, पीपा राजपूत, संघना कसाई, सेना नाई आदि।





सिखों के आदि ग्रंथ में रामानन्द का एक पद (दोहा) संकलित है। सघना, सेना व धन्ना के कुछ पद भी ग्रंथ में संकलित है।

#### कबीर(1398 – 1518 ई.)

कबीर को नीरू व नीमा नामक जुलाहा दंपती ने वाराणसी में लहरतारा के ताबाल के पास पाया। शिशु कबीर को किस विधवा द्वारा लोक लज्जा के भय से छोड़ दिया गया था।

कबीर अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है महान। कबीर निर्गुण भक्ति सन्त थे तथा हिन्दु – मुस्लिम एकता के प्रवक्ता थे। उन्होंने मूर्ति पूजा, जात – पात, छुआ – छूत आदि का विरोध किया।

कबीर गृहस्थ सन्त थे तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के कटू आलोचक थे। कबीर के कुछ पद आदि ग्रंथ में संकलित हैं। कबीर की शिक्षाएं उनके शिष्य भागदास ने बीजक से संगृहीत कीं। कबीर की मृत्यु मगहर में हुई।

कबीर की मृत्यु के बाद संत धर्मदास कबीर पंथ की गद्दी पर बैठे। मलुक दास कबीर के प्रमुख अनुयायी थे। इनका जन्म कड़ा इलाहाबाद में 1574 में खत्री परिवार में हुआ। ये भी गृहस्थ थे।

#### रविदास (रैदास)

रविदास के तीस से अधिक भजन गुरुग्रन्थ साहब (आदि ग्रंथ) में संगृहीत हैं। ये रामानन्द के शिष्य थे तथा निम्न जाति (चमार) थे। इनका जन्म वाराणसी (काशी) में हुआ।

कबीर ने रैदास को संतों का संत कहा है।

रैदास निर्गुण ब्रह्मा के उपासक थे। मीरा बाई भी रैदास की शिष्या थी।

रैदास ने रायदास (रैदास) सम्प्रदाय की स्थापना की।

#### गुरु नानक (1469 – 1538 ई.)

इनका जन्म 1469 ई. तलवंडी (पंजाब – पाकिस्तान) के खत्री परिवार में हुआ।

तलवंडी को ननकाना साहब कहा जाता है।

वे भी कबीर की भांति निर्गुण ईश्वर के उपासक थे तथा जाति – पाति व आडम्बरों में विश्वास नहीं करते थे। वे मूर्तिपूजा, तीर्थ यात्रा आदि के भी विरोधी थे। निर्गुण ईश्वर को वे अकाल पुरुष कहते थे।

गुरुनानक के शिष्य का नाम मरदाना था, जो सारंगी बजाता था व गुरुनानक रवाब के साथ गीता गाया करते थे।

नानक ने श्रीलंका, मक्का व मदीना का भी भ्रमण किया।

गुरुनानक के गीतों व उपदेशों को आदिग्रन्थ में संकलित किया गया।

गुरुनानक का निधन करतारपुर में हुआ।

#### दादू(1544 – 1603 ई.)

दादू दयाल भी निर्गुण भक्ति परम्परा के महत्वपूर्ण सन्त थे।

इनका जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ। कुछ विद्वान उन्हें ब्रह्मण व कुछ जुलाहा परिवार का मानते हैं। वे कबीर के

सर्वश्रेष्ठ शिष्यों में से एक थे।

राजस्थान के नराना (नरायणा) में इनकी मुख्य गद्दी थी। इस मत को मानने वाले मुख्यतः राजस्थान में ही मिलते हैं।

दादू ने मूर्ति पूजा, जाति प्रथा व कर्मकाण्ड का विरोध किया।

#### दादूपंथ की पांच शाखाएँ :-

1. खालसा
2. विरक्त
3. उत्तरोद (उत्तरादेव)
4. खाकी
5. नागा

नागा सम्प्रदाय की स्थापना सुन्दरदास द्वारा की गई। इस सम्प्रदाय के लोग सेना में भर्ती होना पसन्द करते थे। इनकी सैनिक टुकड़ी नागा फौज कहलाती थी।

दादू के उपदेश दादूवाणी में संगृहीत हैं। जिनमें लगभग 5000 छन्द हैं।

दादू गृहस्थ थे तथा मानते थे कि गृहस्थ जीवन आध्यात्मिक उन्नति के लिये अधिक उपयुक्त है।

दादू के अनुसार बिना गुरु के ईश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

दादू के निपख सम्प्रदाय (असाम्प्रदायिक मार्ग) का उपदेश दिया।

दादू मानते थे कि ईश्वर के सम्मुख सभी स्त्री – पुरुष, भाई – बहन की भाँति हैं। दादू ने विनम्रता पर अधिक बल दिया। दादू पंथ को परब्रह्म सम्प्रदाय भी कहा जाता है।

अकबर ने दादू को धार्मिक चर्चा के लिए एक बार फतेहपुर सीकरी बुलाया था।

दादू पंथ के सत्संग स्थल अलख दरीबा कहलाते हैं।

आमेर नरेश भगवन्तदास दादू से प्रभावित थे।

दादूपंथी शवों को न जलाते हैं, न दफनाते हैं, वरन उसे पशु – पक्षियों के खाने के लिए जंगल में छोड़ आते हैं।

दादू की शिष्य परम्परा में 152 मुख्य शिष्य माने जाते हैं। जिनमें से 100 एकान्तवासी थे। शेष 52 शिष्य बावन स्तम्भ कहलाने लगे तथा 52 स्थानों पर दादू – द्वारे बनवाये।

दादू के मुख्य शिष्यों में सुन्दरदास, गरीबदास, बखना जी व रज्जब जी प्रमुख थे। दादू की मृत्यु के बाद गरीब दास गद्दी पर बैठे।

रज्जब हमेशा दुल्हे के वेश में रहते थे।

रज्जब ने कहा कि 'यह संसार वेद है यह सृष्टि कुरान है।

दादू के समकालीन सन्त वीरभान ने सतनामी संप्रदाय की स्थापना की। औरंगजेब के समय यह संप्रदाय बहुत लोकप्रिय हो गया था। ये मूर्तिपूजा, जाति प्रथा, संपति संचय आदि का विरोध करते थे।

हरिवंश (हरिवमसा) ने 1551 ई. में राधावल्लभी संप्रदाय की स्थापना की।

#### चैतन्य महाप्रभु ( 1486 – 1533 ई.)

इनका जन्म 1486 ई. में नदिया या नवदीप (बंगाल) में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका बचपन का नाम निमाई था व वास्तविक नाम विश्वम्भर था।

शिक्षा पूरी करने पर इन्हें विद्यासागर की उपाधि दी गई।





चैतन्य ने दो बार विवाह किया किन्तु 24 वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया।

चैतन्य ने बंगाल में गौड़ीय वैष्णव धर्म की स्थापना की। इसे **मध्य गौड़ीय सम्प्रदाय** या **अचिन्त्य भेदाभेद** सम्प्रदाय भी कहते हैं।

उनके दार्शनिक सिद्धान्त अद्वैतवाद की ही शाखा थे।

भक्ति कवियों में चैतन्य एकमात्र कवि थे जिन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध नहीं किया। वे सभी को कृष्ण भक्ति के योग्य मानते थे, किन्तु मुसलमानों और निम्न जातियों के लोगों को मंदिरों में प्रवेश के योग्य नहीं मानते थे।

चैतन्य ने **6 गोस्वामी** वृन्दावन को तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करने के लिए भेजे।

चैतन्य ने वृन्दावन में कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय को स्थापित किया तथा राधा – कृष्ण की उपासना शुरू कर **वृन्दावन** के गौरव को पुनः स्थापित किया।

चैतन्य को उनके अनुयायी कृष्ण या विष्णु का अवतार मानते हैं, तथा गौसंग महाप्रभु ने नाम से चैतन्य की पूजा करते हैं।

उड़ीसा के राजा प्रताप रुद्र गजपति उनके स्थिर थे। चैतन्य पुरी में रहते थे वे पुरी में ही उनका निधन हुआ।

चैतन्य ने भक्ति में **कीर्तन प्रथा** को प्रसिद्ध बनाया। वे अपने अनुयायियों के साथ भक्ति भावना से ओत – प्रोत होकर नाचते थे।

हरिदास उनके मुख्य शिष्य थे। निम्न जाति व मुस्लिम समुदाय के लोग भी उनके शिष्य थे।

चैतन्य जयदेव व चण्डीदास के भक्ति गीतों से प्रभावित थे।

चैतन्य ने ज्ञान के स्थान पर प्रेम व भक्ति पर बल दिया।

चैतन्य सामाजिक सुधारक नहीं थे। उनके उपदेशों में समाज सुधार व सामाजिक बुराईयों पर ध्यान नहीं दिया गया है।

कविराज कृष्णदास द्वारा रचित **चैतन्य चरितामृत** में चैतन्य के उपदेशों का संग्रह है।

### मीरा बाई ( 1498 – 1546 ई.)

मीराबाई भक्तिकाल की महान् महिला सन्त थी। इनका जन्म **कुड़की (मेड़ता)** में हुआ। इनके पिता राजा रतनसिंह राठौड़ थे।

मीराबाई का विवाह सिसोदिया वंश के मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ।

मीरा भोजराज की मृत्यु के बाद कृष्ण भक्ति में लीन हो गई, कृष्ण को अपना पति माना तथा राजस्थानी व ब्रजभाषा में गीतों की रचना की।

मीराबाई ने पहले जीव गोस्वामी ( चैतन्य संप्रदाय के भक्त) तथा फिर रैदास से दीक्षा ग्रहण की।

मीरा की तुलका प्रसिद्ध स्त्री सूफी संत रबिया से की जाती है।

मीरा की मृत्यु **द्वारका** में हुई।

### सूरदास

ये अकबर व जहांगीर के समकालीन थे तथा जन्म से अन्धे थे।

ये कृष्ण भक्त थे तथा सगुण भक्ति के उपासक थे।

इन्होंने ब्रजभाषा में सूरसागर, सूर सारावली तथा सहित्य लहरी की रचना की। **सूर सागर** उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। इसकी रचना जहांगीर के समय में हुई।

### तुलसीदास ( 1532 – 1623 ई.)

राम भक्त तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गांव में हुआ।

इन्होंने अवधी भाषा में **रामचरितमानस** की रचना की **दोहावली, गीतावली, कवितावली, विनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी** एवं **बरवै रामायण** इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

तुलसीदास अकबर के समकालीन थे। किन्तु आइने अकबरी में उनका उल्लेख नहीं है।

मुगल काल में भक्ति आन्दोलन ने लोकप्रियता प्राप्त की।

### वल्लभाचार्य ( 1479 – 1531 ई.)

ये मूलक : तेलकाना के ब्राह्मण परिवार के थे। जब इनके माता पिता वाराणसी में तीर्थ यात्रा पर आये तो वाराणसी में ही इनका 1479 ई. में जन्म हुआ। इनका निधन भी वाराणसी में हुआ।

वाराणसी में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। विजय नगर में कृष्णदेवराय के समय इन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय की स्थापना की। इन्होंने **सुबोधिनी** और **सिद्धान्त** रहस्य नामक धार्मिक ग्रन्थ लिखे।

वे कृष्ण भगवान की श्री नाथजी के नाम से पूजा करते थे तथा मूर्ति पूजा पर बल देते हैं। श्रीनाथजी के पुत्र के बाल रूप में कहा जाता है।

वल्लभाचार्य के पुत्र वट्टलनाथ ने वृन्दावन में श्रीनाथजी का एक भव्य मन्दिर बनवाया व **श्रीनाथजी** की मूर्ति स्थापित करवाई। औरंगजेब के समय श्रीनाथजी की मूर्ति को उदयपुर पहुँचा दिया और जंहा यह मूर्ति प्रतिष्ठित की गई की गई वह स्थान नाथद्वारा (राजसमन्द, राजस्थान) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वल्लभाचार्य ने रुद्र **संप्रदाय** की स्थापना को व इनका दर्शन शुद्धाद्वैत था। वे पुष्टिमार्ग और भक्ति मार्ग में विश्वास करते हैं। कुछ विद्वानों ने इसे विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहा है, तथा वल्लभाचार्य का दूसरा नाम विष्णु स्वामी बताते हैं।

ब्रह्म में किसी विभेद को स्वीकृति नहीं दी।

**वल्लभाचार्य चैतन्य महाप्रभु के समकालीन थे।**

इनके पुत्र विटलनाथ को अकबर ने गोकुल व जैतपुरा की जागीरें प्रदान की। विटलनाथ द्वारा अष्टछाप की स्थापना की गई।

**अष्टछाप में आठ कवि थे।**

1. सूरदास
2. कुम्भनदास
3. परमानन्ददास
4. कृष्णदास
5. छीत स्वामी
6. गोविन्द स्वामी
7. चतुर्भजदास
8. नन्ददास

कबीर, नानक व दादू की भांति इन्होंने भी गृहस्थ जीवन को अध्यात्मिक उन्नति में बाधक नहीं माना।

वल्लभाचार्य ने प्रायश्चित्त, आत्मसंपात तथा संसार त्याग पर बल दिया।

**शंकर देव ( 1449 – 1568 ई.)**

शंकर असम के एकेश्वरवादी सन्त थे। वे विष्णु व उसके अवतार कृष्ण की भक्ति करते थे। उन्हें असम का चैतन्य महाप्रभु कहा जाता है।

शंकर ने एक शरण सम्प्रदाय की स्थापना की। उनके धर्म में सन्यास का कोई स्थान नहीं था। उन्होंने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया।

शंकर मूर्ति पूजा के विरोधी थे। वे एकमात्र कृष्ण वैष्णव सन्त थे, जिन्होंने मूर्ति के रूप में कृष्ण पूजा का विरोध किया।

इन्होंने देवताओं के महिला सहयोगियों (राधा, सीता, आदि) को मान्यता नहीं दी।

शंकर ने अपने संप्रदाय में भगवत पुराण को मंदिर में पवित्र पुस्तक के रूप में प्रतिष्ठित करवाया।

**नरसी मेहता (15 वीं सदी)**

ये गुजरात के प्रसिद्ध सन्त थे। इन्होंने राधा कृष्ण की भक्ति में गुजराती में एक लाख दोहों की रचना की।

इनके गीत सूरत संग्राम में संकलित हैं।

महात्मा गांधी के प्रिय भजन वैष्णवजन तो तेनों कहिये की रचना नरसी मेहता ने ही की थी। **अन्य संत व सम्प्रदाय :-**

सखी सम्प्रदाय में कृष्ण को ही एकमात्र पुरुष माना गया। बाकी सभी पुरुष को स्त्री ( कृष्ण की सखी) माना गया है। इनमें प्रमुख अनुयायी भी स्त्री वेश भूषा धारण किये रहते हैं।

सखी सम्प्रदाय को हरिदासी सम्प्रदाय भी कहा जाता है।

हरिदास ने नाराणी, लालदास से लालदासी, रामचरण ने रामस्नेही, धार्मिक सम्प्रदायों की स्थापना की।

16 वीं शताब्दी में पुरन्दरदास ने कर्नाटक में दासकूट आन्दोलन चलाया।

कश्मीर में लल्ला देवी मध्यकाल की महान् शैव महिला सन्त थी।

**महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन**

महाराष्ट्र में भक्ति पण्ढरपुर के देवता विठोबा या विठ्ठल देव के मन्दिर के चारों ओर केन्द्रित था।

विठोला को कृष्ण का अवतार माना जाता है।

महाराष्ट्र धर्म दो सम्प्रदायों में विभाजित था :-

1. **बारकरी :-** ये विठोला के सौम्य भक्त थे। ये अधिक भावुक व सैद्धान्तिक थे।

2. **धरकरी :-** ये रामदास पंथ (Cuit) के अनुयायी थे। ये अधिक तार्किक व व्यावहारिक थे।

दोनों सम्प्रदायों का अन्तर सतही है। ईश्वर प्राप्ति दोनों का उच्चतम लक्ष्य था।

विठोबा पंथ के तीन महान सन्त गुरु ज्ञानेश्वर या ज्ञानदेव, नामदेव तथा तुकाराम थे।

**ज्ञानेश्वर या ज्ञान देव ( 13 वीं सदी)**

इन्होंने मराठी भाषा में भगवद्गीता पर ज्ञानेश्वरी नामक टीका लिखी।

ज्ञानेश्वर ने अमृतानुभव तथा चंगदेव प्रशस्ति भी लिखी।

**नाम देव (1270 –1350 ई.)**

इनका जन्म दर्जी परिवार में हुआ। ये बचपन में डाकू थे।

नामदेव ने बारकरी सम्प्रदाय की विचारधारा को लोकप्रिय बनाया। ये विठोबा के परम भक्त थे।

नामदेव के कुछ पद्य ग्रन्थ साहिब (आदिग्रन्थ) में संकलित हैं।

नामदेव ने दिल्ली में सूफी सन्तों से भी वाद – विवाद किया।

नामदेव ने कहा कि “ एक पत्थर की पूजा होती है तो दूसरे को पैरों तले रौंदा जाता है ।

यदि एक भगवान है तो दूसरा भी भगवान है।

नामदेव ने हरि नाम से ईश्वर की उपासना का उपदेश दिया।

**एक नाथ ( 1553 – 1599 ई.)**

इनका जन्म पैठण (औरंगाबाद ) में हुआ। ये अत्यधिक दयालु प्रवृत्ति के थे। इन्होंने ज्ञानेश्वरी का विश्वसीनय संस्करण प्रकाशित करवाया।

एकनाथ ने भगवद्गीता के चार श्लोकों पर टीका लिखी।

एकनाथ की कविताएँ भी अभंगों के नाम से जानी जाती हैं।

**तुकाराम (1598 – 1650 ई.)**

तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे तथा इनका जन्म पूना के निकट देहू में हुआ। वे जन्म से शुद्ध थे। वे रोज विठोबा की अपने हाथों से पूजा करते थे। इनकी शिक्षाएँ अभंगों के रूप में संकलित हैं।

तुकाराम ने बारकरी पंथ की स्थापना की।

**रामदास ( 1608 – 1681 ई.)**

इनका जन्म 1608 में हुआ। ये शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे तथा समर्थ गुरु रामदास के नाम से विख्यात हुये वे परामार्थ संप्रदाय चलाया।

रामदास ने दास बोध नामक पुस्तक की रचना की।

**मुगलकालीन कला****स्थापत्य कला :-**

मुगल स्थापत्य भारतीय तथा ईरानी, मध्य एशिया व तुर्की स्थापत्य का समन्वय है।

मुगल स्थापत्य की मुख्य विशेषताएं विशाल व आकर्षक गुम्बद, पित्रा दुरा को प्रयोग, चार बाग पद्धति, महलों में बहते पानी का उपयोग आदि हैं।

संगमरमर के पत्थरों पर हीरे जवाहरात से की गई जड़ावट को पित्रा दुरा कहते हैं।

**बाबर के द्वारा बनवाई गई इमारते :-**

1. पानीपत की काबुली बाग मस्जिद

2. रुहेलखण्ड में सम्भल की जामा मस्जिद

इसके अलावा बाबर के आगरा में ज्यामितीय विधि पर आधारित एक बाग भी लगवाया।

इसे ‘नूर अफगान’ या ‘हश्त बिहस्त’ कहा जाता था, इसे आराम बाग कहा जाता है।

**हुमायूँ द्वारा निर्मित इमारते :-**

1. दिल्ली में 1534 – 35 ई. में निर्मित ‘दीपनाह’ नामक नगर, जो आजकल पुराना किला के नाम से जाना जाता है।।

2. आगरा की मस्जिद ।

3. फतेहाबाद ( हिसार) की मस्जिद, जो ईरानी शैली में निर्मित



है।

### शेरशाह युगीन स्थापत्य कला :-

शेरशाह ने दिल्ली में शेरगढ़ नामक नये नगर की नींव डाली। अब इसके अवशेषों में लाल दरवाजा व 'खूनी दरवाजा' ही बचे हैं। पुराने किले के अन्दर निर्मित किला ए - कुहना नामक मस्जिद। शेरशाह ने सासाराम (जिला रोहतास, बिहार) में झील के बीच अपने मकबरे का निर्माण कराया। कनिधम ने शेरशाह के मकबरे को ताजमहल से भी सुन्दर माना है।

### अकबर कालीन इमारतें :-

अकबर के काल की पहली इमारत दिल्ली में बना हुमायूँ का मकबरा है।

**आगरा का लाल किला :-** यह यमुना के किनारे डेढ़ मील के घेरे में विस्तृत है इसमें अब दो दरवाजे हैं। दिल्ली दरवाजा और अमरसिंह दरवाजा। आगरा किले में अकबर ने 500 इमारतों का निर्माण करवाया।

आगरा व लाहौर किले का डिजाइन कासिम खाँ ने तैयार किया। इसके अन्दर के कुछ भवनों को गिराकर शाहजहाँ ने संगमरमर की इमारतें बनवा दी।

आगरा के किले में लाल पत्थर का प्रयोग व बंगाल एवं गुजरात की निर्माण शैली का प्रयोग हुआ है।

### आगरा के किले में अकबरकालीन दो इमारतें प्रमुख हैं :-

1. जहाँगीर का महल
  2. अकबर का महल
- जहाँगीर का महल में ग्वालियर के मानसिंह के महल (मान मंदिर) की नकल की गई है।

अकबर ने 1581 में अटक के किले का निर्माण करवाया। अकबर ने 1583 ई. में इलाहाबाद में भी एक किले का निर्माण कराया। इलाहाबाद का किला अकबर द्वारा निर्मित में सबसे बड़ा है।

अकबर ने 1585 ई. में लाहौर में भी एक किला बनवाया तथा 1585 से 1598 ई. तक फतेहपुर सीकरी के स्थान पर लाहौर में निवास किया तथा इस दौरान लाहौर ही अकबर की राजधानी रही। 1598 से 1605 तक आगरा अकबर की राजधानी रही।

### फतेहपुर सीकरी में निर्मित अकबर की इमारतें :-

अकबर ने 1569 ई. में सीकरी के निकट एक पहाड़ी पर फतेहपुर सीकरी नामक नगर की नींव डाली। इसका वास्तुकार बहाउद्दीन था।

अकबर ने फतेहपुर सीकरी को अपनी राजधानी बनाया व वहां पर बहुत से भवनों का निर्माण करवाया। इन भवनों को चार श्रेणियों में बाटा जा सकता है।

1. विशाल प्रासाद
  2. निवास स्थान
  3. कार्यालय
  4. धार्मिक भवन
- फतेहपुर सीकरी की इमारतों की प्रमुख विशेषता चापाकार (इस्लामी) एवं धरणि (हिन्दु) शैलियों का समन्वय है।

1. **दीवाने आम :-** दीवाने आम एक आयताकार प्रांगण था। यहां एक स्तम्भ से बरामदे की छतें जुड़ी हुई हैं। अकबर दीवाने आम में बैठकर न्याय करता था।

2. **दीवाने खास :-** यह अकबर का व्यक्तिगत भवन था। भवन के मध्य एकस्तम्भ पर वृताकार मंच बना हुआ है, जो 36 गूँथे हुए

तोड़ों पर टिका है। यह मंच पत्थर के पल द्वारा भवन की गैलरी से जुड़ा है। मंच का स्तम्भ हिन्दू कला का प्रतीक है।

3. **जोधाबाई का महल :-** यह फतेहपुरी सीकरी का सबसे बड़ा और सर्वश्रेष्ठ महल है। इसका निर्माण गुजरात के हिन्दू कारीगरों द्वारा होने के कारण इस पर गुजराती शैली का व्यापक प्रभाव है। महल में उत्कीर्ण अलंकरण दक्षिण के मन्दिरों की वास्तुकला से प्रभावित है।

4. **तुर्की सुल्ताना का महल :-** यह एक मंजिला इमारत है जिसका निर्माण पंजाब के कारीगरों के किया। पर्सी ब्राउन ने इसे 'मुगल स्थापत्य कला का रत्न' कहा है।

5. **पंचमहल :-** पंचमहल पिरामिड आकार में बौद्ध शैली में निर्मित पांच मंजिला इमारत है। ऊपर की मंजिलें क्रमशः छोटी होती गई सबसे नीचे की मंजिल में 48 स्तम्भ व सबसे ऊपर की मंजिल में मात्र 4 स्तम्भ हैं। पांचवी मंजिल पर बना गुम्बद इस्लामी कला का प्रतीक है।

6. **बीरबल का महल :-** यह दो मंजिला महल अकबर के नवरत्नों में एक महेश (बीरबल) के लिए बनाया गया। इसके छज्जों में कोष्ठकों का प्रयोग किया गया है।

7. **मरियम का महल :-** मरियम का महल जोधाबाई के महल के बगल में है। मरियम जहाँगीर की माँ व अकबर की प्रमुख राजपूत रानी थी। इसमें बहुत से ईरानी चित्र थे जिन्हें बाद में औरंगजेब ने मिटवा दिये।

8. **जामा मस्जिद :-** स्थापत्य की दृष्टि से फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद अकबर की इमारतों में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इसे फतेहपुर सीकरी का गौरव कहा जाता है।

लाल बलुआ पत्थर एवं संगमरमर से निर्मित का फर्ग्युसन ने पत्थर में रुमानी कथा कहा है। बुलन्द दरवाजे व फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद में लाल बलुआ पत्थर के साथ-साथ संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

9. **बुलन्द दरवाजा :-** गुजरात विजय के उपलक्ष्य में जामा मस्जिद के दक्षिण द्वार पर 1602 ई. में बुलन्द दरवाजे का निर्माण किया। यह जमीन से 176 फीट ऊँचा है। यह विश्व का सबसे ऊँचा दरवाजा है। यह ईरानी अर्द्ध गुम्बदीय एवं चाप स्कन्ध शैली में निर्मित है।

10. **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा :-** अकबर के काल में यह मकबरा लाल पत्थर से बना था किन्तु जहाँगीर ने इस सफेद संगमरमर में परिवर्तित करा दिया। मकबरे के अन्दर पत्थर की जालिया अत्यन्त आकर्षक व कलात्मक है।

11. **इस्लाम खाँ का मकबरा :-** यह शेख सलीम के मकबरे के दक्षिण में स्थित है। इसमें पहली बार वर्गाकार मेहराब का प्रयोग किया गया है।

फतेहपुर सीकरी की अन्य इमारतें इबादत खाना, टकसाल, ज्योतिष भवन, सराय, हिरन मीनार अनूप तालाब आदि हैं। स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी को 'पत्थर में ढाला गया रोमान्स' कहा है।

फर्ग्युसन ने कहा कि 'फतेहपुर सीकरी उस महान व्यक्ति (अकबर) की परछाई है जिसने इसको बनवाया था।

अबुल फजल अकबर की स्थापत्य कला की रुचि की प्रशंसा करते हुए कहता है कि 'उसके आलीशान इमारतों की योजना बनाई तथा अपने मस्तिष्क एवं हृदय के विचारों को पाषाण एवं मिट्टी के आवरण से सुसज्जित करता था। अकबरकालीन इमारतें में अण्डाकार गुम्बद का प्रयोग किया गया है।



### जहाँगीर कालीन स्थापत्य :-

**अकबर का मकबरा :-** सिकन्दरा स्थित अकबर के मकबरे को योजना अकबर ने बनाई किन्तु निर्माण जहाँगीर के काल में हुआ। इसके चारों कोनों में चार सफेद संगमरमर की मीनारे बनी हैं। ये मीनारे किसी मुगलकालीन मकबरे में सर्वप्रथम मीनारे हैं। मकबरा एक बाग में स्थित है। मकबरा गुम्बद विहीन तथा पिरामीड आकार का है। यह एकमात्र मकबरा है जिसमें गुम्बद का प्रयोग नहीं हुआ। अकबर का मकबरा बौद्ध शैली के अधिक नजदीक है।

**एतमादुद्दौला का मकबरा :-** इकसा निर्माण नूरजहाँ ने अपने पिता की स्मृति में कराया था। यह मुगल काल का पहला पूर्ण संगमरमर का बना मकबरा है। तथा पहली बार मुगलकाल के भवनों में पित्रा दुरा का प्रयोग हुआ है।

इससे पूर्व राजस्थान में उदयपुर के गोलमण्डल के निर्माण में 1600 ई. में पित्रा दुरा का प्रयोग किया गया था।

**जहाँगीर का मकबरा :-** लाहौर में रावी नदी के तट पर शाहदरा में स्थित जहाँगीर के मकबरे की योजना जहाँगीर ने बनाई व इसे नूरजहाँ ने पूरा कराया।

नूरजहाँ ने कश्मीर में शालीमार बाग का निर्माण शुरू कराया किन्तु इसे शाहजहाँ ने पूरा कराया।

जहाँगीर ने शेख सलीम के मकबरे ( फतेहपुर सीकरी ) में लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर संगमरमर लगवाया।

### प्रमुख मुगलकालीन इमारतें

इमारत	वास्तुकार
हुमायूँ	मिरक मिर्जा गयास
आगरे का किला	वासिम खाँ
फतेहपुरी सीकरी	बहाउद्दीन
ताजमहल	उस्ताद ईसा खाँ एवं उस्ताद अहमद लाहौरी
दिल्ली का लाल किला	हमीद एवं अहमद

### शाहजहाँ कालीन स्थापत्य :-

शाहजहाँ एक महान निर्माता था। उसका राज्य काल भारतीय वास्तुकला के इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध है। शाहजहाँ को सफेद संगमरमर से विशेष लगाव था। अतः उसके काल में अधिकांश इमारतें सफेद संगमरमर से बनाई गईं। पर्सी ब्रउन ने कहा है कि 'जिस प्रकार आगस्टस ने रोम को ईंटों का बना हुआ पाया व संगमरमर का बना छोड़ दिया था उसी प्रकार शाहजहाँ ने मुगल भवनों को लाल पत्थर से बना हुआ पाया और संगमरमर का बना कर छोड़ दिया।

### आगरा के किले के भवन :-

शाहजहाँ ने आगरा के किले में अकबर द्वारा निर्मित लाल पत्थर की इमारतें तुड़वाकर उन्हें सफेद संगमरमर की बनवाई। शाहजहाँ द्वारा आगरा के किले में बनाई गई इमारतें निम्नलिखित हैं।

1. **दीवाने आम (1628 ई. में निर्मित) :-** यह शाहजहाँ के काल में बनी पहली सफेद संगमरमर की इमारत थी। इसमें तख्ते ताउस या मयूर सिंहासन रखा जाता था। दीवाने आम में शाही दरबार लगता था।

2. **दीवाने खास (1637 ई. में निर्मित) :-** इसमें गुप्त मंत्रणा होती थी।

3. **मोती मस्जिद (1654 ई. में निर्मित) :-** संगमरमर से निर्मित यह इमारत आगरा के किले की सभी इमारतों में सबसे सुन्दर है।

4. **मुसम्मन बुर्ज :-** इसे शाह बुर्ज भी कहा जाता था। शाहजहाँ ने अपने अन्तिम दिन इसी बुर्ज से ताजमहल को निहारते हुए व्यतीत किये थे।

5. **खास महल व झरोखा दर्शन :-** खास महल व मुसम्मन बुर्ज के मध्य संगमरमर का बना झरोखा दर्शन स्थित है, यहाँ से शाहजहाँ रोजाना सूर्योदय के बाद जनका को कुछ समय के लिए दर्शन देता था।

6. अंगूरीबाग 7. मच्छीभवन 8. शीश महल 9. नगीना मस्जिद

आगरा की जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ की बड़ी पुत्री जहाँआरा ने करवाया। इसे 'मस्जिद जहाँनाम' भी कहा जाता है।

**ताजमहल :-** तामहल शाहजहाँ की प्रिय पत्नी मुमताज महल का मकबरा है। इसका निर्माण आगरा में युमना नदी के किनारे 1631 ई. में शुरू हुआ व 1653 ई. में 22 वर्ष बाद 9 करोड़ रुपये की लागत से बनकर तैयार हुआ।

हैवले ने तामहल को 'भारतीय नारीत्व की साकार प्रतिमा' कहा है तथा यह भी कहा है यह एक ऐसा आदर्श विचार है जो स्थापत्य कला में नहीं बल्कि मूर्तिकला से संबन्धित है।

ताजमहल के मुख्य वास्तुकार 'अहमद लाहौरी' थे। इसे शाहजहाँ ने 'नादिर उल असरार' की उपाधि दी थी।

ताजमहल का प्रधान मिस्त्री उस्ताद ईसा खाँ था।

ताजमहल कंदाकार गुम्बद का उत्कृष्ट नमूना है।

ताजमहल का मकबरा हुमायूँ के मकबरे से प्रेरित था।

### दिल्ली की इमारतें :-

1638 ई. में शाहजहाँ ने दिल्ली में युमना के किनारे अपनी नई राजधानी शाहजहाँनाबाद का निर्माण किया। 1648 ई. में इसके पूरे होने पर राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित की। नई राजधानी में ही एक किला बनाया जो लाल बलुआ पत्थर से निर्मित होने के कारण लाल किला कहलाया है।

**लाल किले का निर्माण 'हमीद अहमद' नामक शिल्पकार की देखरेख में हुआ।**

लाल किले की प्रमुख इमारतें निम्नलिखित हैं :-

1. **दीवाने आम :-** यहां विश्व प्रसिद्ध तख्ते ताउस रखा जाता था, शाहजहाँ ने तख्ते ताउस 'बेबादल खाँ' की देखरेख में बनवाया था। जिस पर बैठकर शाहजहाँ न्याय करता था। दीवाने आम स्थित रंगमहल की जाली में न्याय की तराजू में यूरोपीय प्रभाव दिखता है। दीवाने आम के कुछ चित्रों का विषय 'फ्लोरेंस नाइटिंगेल' से संबन्धित है।

2. **दीवाने खास :-** इसकी छत चांदी की बनी है। उस पर सोने व अन्य बहुमूल्य पत्थरों की सजावट की गई है। दीवाने खास में लिखी है 'अगर दुनिया में कही स्वर्ग है तो यहाँ यही है, यहाँ है।

3. **रंगमहल :-** यह सम्राट का हरम था।

मोती महल, हीरा महल, नौबत महल, आदि अन्य इमारतें हैं।

**दिल्ली की जामा मस्जिद :-** इसका निर्माण शाहजहाँ ने 1644 ई. में लाल किले के पास करवाया। इसकी मुख्य विशेषता इसके विशाल द्वार, ऊँची मीनारें व गुम्बद है।

शाहजहाँ ने लाहौर के किले में दीवाने आम, शाहबुर्ज, शीशमहल, नौलखा महल और ख्वाबगाह का निर्माण करवाया।



**औरंगजेब के काल की इमारतें :-**

औरंगजेब के काल में मुगल स्थापत्य कला का पतन की ओर अग्रसर हो गई। उसके काल में कुछ ही इमारतें बनीं।

1. दिल्ली के लाल किले में पूर्ण संगमरमर से बनल मोती मस्जिद।
2. लाहौर की बादशाही मस्जिद।
3. औरंगजेब ने औरंगाबाद में 1679 ई. में अपनी प्रिय बेगम रबिया दुरानी की स्मृति में एक मकबरा बनवाया, जो 'बीबी का मकबरा' नाम से प्रसिद्ध है। यह महल की घटिया (फूहड़) नकल पर बना है। इसे दक्षिण का ताजमहल भी कहा जाता है।

**मुगल उद्यान**

आराम बाग (आगरा)	बाबर
शालीमार बाग (श्रीनगर)	जहाँगीर
शालीमार बाग (लाहौर)	शाहजहाँ
निशात बाग (कश्मीर)	शाहजहाँ
चश्मा - ए - शाही बाग	शाहजहाँ
पिंजौर का बाग	औरंगजेब

**मुगल चित्रकला :-**

तुजुके बाबरी में एकमात्र चित्रकार 'बिहजाद' का नाम मिलता है। बिहजाद फारस का प्रसिद्ध चित्रकार था तथा उसे 'पूर्व का राफेल' कहा जाता था।

मुगल चित्रकला की शुरुआत हुमायूँ के काल से हाती है। हुमायूँ ने फारस के शाह के यहां शरण के दौरान दो फारसी चित्रकारों की सेवाएँ प्राप्त की। ये चित्रकार 'मीर सैय्यद अली' और 'अब्दुस्समद' थे।

मीर सैय्यद अली हेरात के प्रसिद्ध चित्रकार 'बिहजाद' का शिष्य था।

अब्दुस्समद द्वारा तैयार किये गये कुछ चित्र जहाँगीर द्वारा तैयार की गई 'गुलशन चित्रावली' में संकलित हैं।

मुगल चित्रकला का सबसे प्रारम्भिक व महत्वपूर्ण चित्र संग्रह 'हम्जा नामा' है। यह 'दास्ताने अमीर हम्जा' या हम्जानामा के नाम से विख्यात है। इसमें करीब 1200 चित्रों का संग्रह है तथा इसमें 100 चित्रों के 12 खण्ड हैं। इसमें पैगम्बर मुहम्मद के चाचा व फारसी नायक अमीर हम्जा के वीरतापूर्ण कार्यों का संग्रह है। हम्जानामा मूलतः फारसी में लिखा गया अर्द्धपौराणिक काव्य है। हम्जानामा की शुरुआत हुमायूँ ने की व इसे अकबर ने पूरा करवाया।

मुल्ला अलाउद्दीन कजवीनी ने अपने ग्रंथ 'नफाइसुल मासिर' में हम्जानामा को 'हुमायूँ के मस्कि' की उपज बताया है। हम्जानामा की 'मीर सैय्यद अली' के पर्यवेक्षण में पूरा किया करवाया। ख्वाजा अब्दुस्समद ने भी इसके चित्र बनाये व निर्देशन का कार्य किया। यह मुगल काल में सर्वप्रथम चित्रित पुस्तक है। अब्दुस्समद को अकबर ने मुल्तान का दीवान नियुक्त किया था।

**अकबर :-**

आइने अकबरी में 'मीर सैय्यद अली' व 'अब्दुस्समद' के अलावा 15 प्रसिद्ध चित्रकारों के नाम प्राप्त होते हैं। इनमें अधिकतर हिन्दु थे।

अकबर कालीन अन्य प्रमुख चित्रकारों में दसवन्त (एक कहार का बेटा), बसावन, महेश केशव लाल, मुकुन्द, साँवलदास, फारुख बेग,

अकारिजा, जमशेद, जगत, खेमकरण, हरवंश, मिशकिन, ताराचन्द, जगन्नाथ, राम, माधु आदि हैं।

अकबर के शासन काल में रज्जामा नामक चित्रों की पाण्डुलिपि तैयार की गई इसमें दसवन्त के बनाये हुये चित्र मिलते हैं। दसवन्त के चित्र रज्जामा के अलावा अन्य कहीं नहीं मिलते हैं। बाद में दसवन्त मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया और 1584 ई. में उसने आत्महत्या कर ली।

**दसवन्त** अकबर के समय का 'अग्रणी चित्रकार' था। जबकि **बसावन** अकबर के समय का 'सर्वोत्कृष्ट चित्रकार' था।

बासवन **छविचित्रकारी**, भू दृश्यों के चित्रण व व्यंग्य चित्र का विशेषज्ञ था।

अबुल फजल द्वारा उल्लिखित चित्रकारों में फारुख बेग (फारुख कलामक) को छोड़कर अन्य सभी चित्रकारों ने रज्जामा को तैयार करने में सहयोग दिया।

अब्दुस्समद के राजदरबारी पुत्र मुहम्मद शरीफ ने रज्जामा के चित्रण कार्य का पर्यवेक्षण किया।

रज्जामा मुगल चित्रकला के इतिहास में मील का पत्थर है।

रज्जामा के अतिरिक्त अन्य चित्रित पाण्डुलिपि रामायण व अकबरनामा है।

वसावट की सर्वोत्कृष्ट कृति है। एक कृशकाय घोड़े के साथ मजनूँ का निर्जन स्थान में भटकता चित्र।

अकबर के समय पहली बार भित्ति चित्रकारी (Fresco Painting) की शुरुआत हुई।

अकबर के काल में चित्रकला पर ईरानी शैली के सम्राट प्रभाव के स्थान पर भारतीय वृत्ताकार शैली का प्रभाव पड़ा जिससे चित्रों में त्रिविमिय प्रभाव आ गया।

अकबर चित्रकला को ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने का सुलभ एवं सहज साधन मानता था।

अकबर ने कहा कि "मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ जो चित्रकारी से घृणा करते हैं।

फारुख बेग (कलामक) ने चित्रों को छोटें रूप में कागज पर बनाने की विधि को प्रारम्भ किया।

अकबर के दरबार में आने वाला चित्रकार 'आगा रजा' प्रतिलिपियों एवं अनुकृतियों के लिए विख्यात था।

**जहाँगीर :-**

जहाँगीर के काल में मुगल चित्रकला अपने चरम पर पहुँच गई। जहाँगीर ने हेरात के प्रसिद्ध चित्रकार **आकारिजा** - (आगा रजा) के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना की।

जहाँगीर के काल में छवि चित्र (Portrait Painting) प्राकृतिक दृश्यों पशु - पक्षियों एवं व्यक्तियों के जीवन से संबंधित चित्र बनाने की परम्परा की शुरुआत की।

**जहाँगीर के समय के प्रमुख चित्रकार :-** फारुख बेग, गोवर्धन, बिसनदास, उस्ताद, मंसूर, दौलत, मनोहर, अबुलहसन, मुहम्मद नादिर, मुहम्मद मुराद, माधव, तुलसी।

**उस्ताद मंसूर पक्षियों व फूलों के चित्र** बनाने में विशेषज्ञ था और **अबुल हसन व्यक्ति चित्र** में विशेषज्ञ था।

**उस्ताद मंसूर और अबुल हसन जहाँगीर के समय के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार** थे।

जहाँगीर ने उस्ताद मंसूर को 'नादिर उल अन्न' तथा अबुल हसन को 'नादिर - उद - जमा' की उपाधि दी थी।

उस्ताद मंसूर ने **दुर्लभ पशु पक्षियों और अनोखे पुष्पों** के अनेक चित्र बनाये। उसकी महत्वपूर्ण कृतियों में 'साइबेरिया का एक





बिरला सारस' तथा बंगाल का एक अनोखा पुष्प है। अबुल हसन आकारिजा( आगा रजा) का पुत्र थे। उसने 13 वर्ष की आयु में ही सबसे पहले ड्यूटर के सन्त जान पॉल को तस्वीर की एक नकल बनाई।

अबुल हसन ने ने तुजुके जहाँगीर के मुख पृष्ठ के लिए भी चित्र बनाया था। यह जहाँगीर के सिंहासनारोहण का चित्र था। अबुल हसन के चित्रों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी रंग योजना थी।

लन्दन की एक लाइब्रेरी से एक चित्र प्राप्त हुआ है, जिसमें एक चिनार के पेड़ पर असंख्य गिलहरियाँ अनेक प्रकार की मुद्राओं में विचित्र है। इसे अबुल हसन की कृति माना जाता है, किन्तु इसके पीछे अबुल हसन एवं मंसूर दोनों का नाम अंकित होने के कारण इसे दोनों की संयुक्त कृति मानना पड़ेगा।

**बिशनदास** जहाँगीर के समय का **अग्रणी चित्रकार** था। बिशनदास छविचित्र (मानव आकृति) के चित्रांकन में विशेषज्ञ था। मनुष्य आकृति का अंकन जहाँगीर के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

जहाँगीर ने बिशनदास को अपने दूत खान आलम के साथ फारस के शाह के दरबार में शाह व उसके परिवार का चित्र बनाकर लगाने के लिए भेजा था।

मनोहर अकबर के चित्रकार बसावन का पुत्र था। तुजुके जहाँगीरी में मनोहर का नाम नहीं मिलता है। मनोहर भी छवि चित्र बनाने में विशेषज्ञ था।

मनोहर ने अनेक शहजदों, अमीरों एवं विदेशी राजपूतों के सामूहिक छवि चित्र बनाये थे।

फारुख बेग ने अकबर के समय मुगल चित्रकला में प्रवेश किया। जहाँगीर के समय फारुख बेग ने 'बीजापुर के सुल्तान आदिल शाह का चित्र' बनाया था।

दौलत ने अपना छवि चित्र भी बनाया।

जहाँगीर ने तुजुके –जहाँगीरी में लिखी है कि 'चित्रकला में मेरी रुचि व ज्ञान इस सीमा तक पहुँच गया है कि यदि मेरे सम्मुख किसी मृत अथवा जीवित चित्रकार की कालाकृति प्रस्तुत की जाती है और मुझे उस चित्रकार का नाम नहीं बताया जाता है तब भी मैं तुरन्त बता देता हूँ की यह अमुक व्यक्ति के द्वारा किया गया कार्य है। यदि एक ही चित्र अलग अलग कलाकारों द्वारा सामूहिक रूप से बनाया जाता है तो मैं यह बता सकता हूँ कि अमुक आकृति अमुक चित्रकार ने बनाई है।

अकबर के काल में शिकार, युद्ध व राजदरबार के चित्र अधिक बने किन्तु जहाँगीर के काल में इन चित्रों के अलावा व्यक्ति चित्रों (छवि चित्रों) तथा प्राकृतिक दृश्यों (पशु – पक्षी) के चित्र भी अधिक मात्रा में बने हैं।

पर्सी ब्राउन ने लिखा है कि 'जहाँगीर के साथ ही मुगल चित्रकला की वास्तविक आत्मा पतनोन्मुख हो गई।

जहाँगीर के काल से यूरोपीय चित्रकला तकनीक एवं शैली ने मुगल चित्रकला को प्रभावित करना शुरू किया। यूरोपीय प्रभावों से युद्ध के चित्रांकन में प्रकाश व छाया का प्रयोग नये रूपकों जैसे पर वाले देवदूत, घुमड़ते बादल व तैले चित्र की तकनीक का मुगल चित्रकला में प्रयोग शुरू हुआ।

#### शाहजहाँ :-

शाहजहाँ ने चित्रकला के स्थान पर स्थापत्य पर अधिक ध्यान दिया।

शाहजहाँ **दैवी संरक्षण में चित्र** बनवाया अधिक पसन्द करता था। उसके छवि चित्रों में सिर के पीछे प्रभा मण्डल बनाया जाने लगा। शाहजहाँ का एक चित्र भारतीय संग्रहालय में है जिसमें शाहजहाँ को सूफी नृत्य करते हुए दिखाया गया है।

शाहजहाँ के काल के प्रसिद्ध चित्रकार फकीर उल्ला, मीर हाशिम, मुरार, हुनर, मुहम्मद, नादिर, अनूप चित्रा आदि थे।

#### औरंगजेब :-

औरंगजेब ने चित्रकला को इस्लाम विरुद्ध मानकर बन्द करवा दिया। इससे चित्रकार अन्य प्रान्तों की राजधानियों में चले गये। इससे क्षेत्रीय चित्र शैली विकसित हुई।

मनूची लिखता है कि 'औरंगजेब की आज्ञा से अकबर के मकबरे वाले चित्रों को चूने से पोत दिया गया था।

मुगलकाल में यूरोपीय चित्रकला से प्रभावित चित्रकारों में बसावन, केशवदास, मिशकिन, दौलत व अबुल हसन थे।

यूरोपीय प्रभाव वाले चित्रकारों में 'मिशकिन' सर्वश्रेष्ठ थे।

औरंगजेब के उत्तराधिकारी फर्रुखसियर ने चित्रकला को पुनः संरक्षण दिया।

अधिकांश मुगल चित्रों के विषय युद्ध, सांस्कृतिक दृश्य, पौराणिक गाथा आदि थे। मुगलों ने इस्लाम के धार्मिक विषय पर चित्र नहीं बनाये। हिन्दु व ईसाई धर्म पर कुछ चित्र बनवाये।

मुगल शैली की चित्रकला की प्रकृति धर्मनिरपेक्ष एवं अभिजात वर्गीय है। उन्होंने सामान्य जन के चित्र नहीं बनाये।

#### मुगलकाल के प्रमुख कलाकार/ व्यक्तित्व

कलाकार/ व्यक्ति	उपाधि
बिहजाद	पूर्व का राफेल
उस्ताद अहमद	नादिर – उल – असरार

#### मुगलकाल के कुछ प्रसिद्ध चित्र

क्र. स.	चित्र	चित्रकार
1	एक कृशकाय घोड़े के साथ मजनु का स्थान में भटकता चित्र	बसावन ( अकबर)
2	साईबेरिया का एक दुर्लभ सारस	उस्ताद मंसूर( जहाँगीर)
3	बंगाल का एक अनोखा पुष्प	उस्ताद मंसूर( जहाँगीर)
4	तुजुके – जहाँगीरी के मुख्यपृष्ठ के लिए चित्र	अबुल हसन ( जहाँगीर)
5	ड्यूटर के सन्तपॉल का चित्र	अबुल हसन ( जहाँगीर)
6	बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र	फारुख बेग ( जहाँगीर)

दौलत फारुख बेग का शिष्य था। उसने जहाँगीर के कहने पर अपने साथी चित्रकारों बिशनदास, गोवर्धन व अबुल हसन का चित्र बनाया।



लाहौरी

**मुगलकालीन संगीतकला :-**

अकबर के दरबार में तानसेन व बाजबहादूर प्रसिद्ध संगीतकार थे।

तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक था, जिसे अकबर ने रीवां के राजा रामचन्द्र से प्राप्त किया था।

अकबर ने तानसेन को 'कण्ठाभरणवाणीविलास' की उपाधि प्रदान की।

अबुल फजल ने लिखा है कि 'तानसेन के समान गायक पिछले हजार वर्षों से भारत में नहीं हुआ'।

वृंदावन के बाबा हरिदास तानसेन के गुरु थे। तानसेन का वास्तविक नाम रामरतन पाण्डे था।

प्रसिद्ध संगीतकार बाजबहादूर मालवा का शासक था। उसे अकबर ने 2000 का मनसब प्रदान किया।

अबुल फजल ने बाजबहादूर के बारे में लिखा है कि 'वह संगीत विद्या एवं हिन्दी गीतों में अपने समय का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति था'। तानसेन ने लाल कुलवन्त से हिन्दु गायन पद्धति का ज्ञान प्राप्त किया।

**अकबर के काल के प्रमुख संगीतकार** —तानसेन, बाजबहादूर, बैजू बख्श, लाल कुलवन्त, गोपाल, हरिदास, सुजान खां, मियाँ चौद, मियाँ लाल तथा बैजू बावरा।

रामदास इससे पहले इस्लाम शाह के दरबार में रह चुका था। तानसेन के बाद रामदास का दूसरा स्थान था।

बैजू बावरा अकबर के दरबार से संबंधित नहीं था।

अकबर के समय ध्रुपद गायन की चार शैलियाँ प्रचलित थीं।

1. नौहार वाणी
2. खण्डारवाणी
3. गौवरहारी या गौरारी
4. डागुर वाणी

बाद में ध्रुपद का स्थान ख्याल गायन शैली ने ले लिया।

**जहाँगीर के दरबार के प्रमुख संगीतज्ञ :-** बिलास खाँ (तानसेन का पुत्र) छतर खाँ, मखू तथा हमजान।

जहाँगीर ने एक गजल गायक शौकी को 'आनन्द खाँ' की उपाधि दी थी।

शाहजहाँ संगीत मर्मज्ञ था। वह बहुत अच्छा गायक भी था।

उसके काल में दीवाने खास में प्रतिदिन वाद्यवादन व संगीत हुआ करता था।

शाहजहाँ की संगीत प्रियता इस बात से प्रमाणित होती है कि एक बार उसके दरबारी गायक खुशहाल खाँ व बिसराम खाँ ने 'टोड़ी राग' गाकर शाहजहाँ को ऐसा मंत्र मुग्ध कर दिया कि उसने मुर्शीद खाँ को औरंगजेब के साथ दक्षिण भेजने के राजकीय आदेश पर बिना पढ़े ही हस्ताक्षर कर दिया। यद्यपि बाद में दण्ड स्वरूप दोनों संगीतकारों को दरबार के आनुवांशिक अधिकार से वंचित कर दिया।

**शाहजहाँ के काल के प्रमुख संगीतकार :-** लाल खाँ (बिलास खाँ के दामाद) खुशहाल खाँ, बिसराम खाँ, जगन्नाथ, सूरसेन, दुरंग खाँ।

शाहजहाँ ने लाल खाँ को 'गुण समुद्र' की उपाधि प्रदान की। औरंगजेब संगीत का विरोधी था तथा उसने संगीत को इस्लाम विरोधी घोषित कर उस पर पाबन्दी लगा दी। किन्तु औरंगजेब के काल में फारसी भाषा में 'भारतीय शास्त्रीय संगीत' पर **सर्वाधिक पुस्तकें** लिखी गईं।

**औरंगजेब कुशल वीणा वादक था।**

औरंगजेब द्वारा संगीत पर पाबन्दी लगाने के कारण संगीत प्रेमियों ने इस पाबन्दी का विरोध अनोखे तरीके से किया। संगीत प्रेमियों ने 'तबला व तानपूरे' का जनाजा औरंगजेब के महल के सामने से निकाला तो औरंगजेब ने कहा कि 'इसकी (संगीत की) कब्र इतनी गहरी दफनाना, ताकि आवाज आसानी से बाहर न निकल सके।

**औरंगजेब के काल के प्रमुख संगीतज्ञ :-** रसबैन खाँ, सुखी सेन, कलावन्त, हयात, सरस सैन, किरपा।

फकीरुल्लाह ने 'मानकुतूहल' का अनुवाद 'रामदर्पण' नाम से करके उसे औरंगजेब को अर्पित किया।

मिर्जा रोशन जमीर ने 'संगीत —परिजात' का अनुवाद 1666 ई. में औरंगजेब के आश्रय में रहकर किया।

मुगल काल में संगीत का सर्वाधिक विकास 18वीं शताब्दी में मुगल बादशाह **मुहम्मद शाह 'रंगीला'** (1719 — 48 ई.) के समय हुआ।

मुहम्मद शाह के दरबार में **नेमत खाँ, सदारंग** व उसका भतीजा **अदारंग** प्रमुख संगीतकार थे।

**मुगलकालीन उपाधियाँ**

व्यक्ति	उपाधि
मेहरुन्निसा	नूरजहाँ, नूरमहल, बादशाह बेगम
मानवाई	शाहबेगम
अर्जुमन्द बानो बेगम	मलिका — ए — जमानी, मुमताज
गयास बेग	एतमाद — उद् — दौला
खुर्रम	शाहजहाँ, शाह सुल्तान
दारा किशोर	शाह बुलन्द इकबाल
आदिकशाह (बिजापुर सुल्तान)	फर्जन्द (जहाँगीर द्वारा)
औरंगजेब	जिन्दापरी, शाही दरवेश
फरीद	शेर, खाँ, शेरशाह
अकबर	शहशाह, जिल्ले इलाही
जमान बेग	महावत खाँ

**मुगलकालीन शिक्षा :-**

मुगलकाल में **प्राथमिक शिक्षा 'मकतब'** में दी जाती थी। व **उच्च शिक्षा** के लिए मदरसों की व्यवस्था थी। इनमें फारसी भाषा में शिक्षा दी जाती थी।

हुमायूँ ने माहम अनगा के सहयोग से दिल्ली में 'मदरसा — ए — बेगम' की स्थापना की। इसे खैर — उल मनाजिल मदरसा भी कहा जाता है।

हुमायूँ अपने साथ एक चुना हुआ पुस्तकालय लेकर चलता था। शाहजहाँ ने भी दिल्ली में एक 'मदरसा' बनवाया व 'दारुल बर्का'



नामक मदरसे की मरम्मत करवाई।

औरंगजेब ने मदरसों एवं मकतबों की सहायता की व हिन्दू पाठशालाओं को बन्द करवाने की कोशिश की।

औरंगजेब की निर्वासित पुत्री **जेबुन्निसा** ने दिल्ली में 'बैतुल - उल उलूम' नामक स्कूल खुलवाया।

लखनऊ का फरहंगी महल मदरसा 'न्याय की शिक्षा' के लिए तथा स्याल कोट का मदरसा 'व्याकरण की शिक्षा' के लिए प्रसिद्ध था।

दिल्ली का शाह उल्लाह का स्कूल परम्परागत मान्यताओं की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।

#### विषय

#### उपाधि

तर्क एवं दर्शन

फाजिल

धार्मिक शिक्षा

आमिल

साहित्य शिक्षा

काबिल

बनारस हिन्दू शिक्षा केन्द्र का बड़ा केन्द्र था। टेवर्नियर ने इसकी प्रशंसा की है।

#### मुगल कालीन साहित्य :-

मुगलकाल में इतिहास लेखन का उद्देश्य कारण, परिस्थितियों एवं प्रक्रियाओं की जाँच करते हुये अतीत की घटनाओं, कृत्यों, युद्धों, अभियानों और दरबारी के घटनाचक्र को अनुक्रमण में प्रस्तुत करना था।

इतिहास को नैतिक शिक्षा प्राप्त करने का मुख्य स्रोत माना जाता था तथा इतिहास में जो घटित होता था उसके लिए अन्तिम रूप से ईश्वर को ही उत्तरदायी माना जाता था।

**ख्वांद अमीर** या **खोंदा मीर** का वास्तविक नाम गयासुद्दीन था।

इसका जन्म 1475 ई. में हेरात में हुआ। इसकी प्रमुख पुस्तकें हैं।

1. खुलासत - उल - अखबार - यह मुस्लिम जगत का इतिहास है।

2. दस्तूर - उल - वजूर

3. हबीब उस सियार - इसकी रचना बाबर के समय में भारत में की।

4. कानून - ए - हुमायूँनी - इसको हुमायूँनामा भी कहा जाता है। इसमें हुमायूँ का खगोल व ज्योतिष शास्त्र के प्रति लगाव बताया गया है।

खोंदा मीर को मृत्यु के बाद दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया व अमीर खुसरों की कब्र के पास दफनाया गया।

**हुमायूँ नामा** की रचना बाबर की पुत्री व हिन्दाल की **सगी बहिन गुलबदन बेगम** ने बादशाह अकबर के आदेश पर फारसी भाषा में की। इसकी एकमात्र पाण्डुलिपि लन्दन के ब्रिटिश म्यूजियम में संगृहीत है।

जौहर आफताबची हुमायूँ का घरेलू नौकर था। इसने अकबर के कहने पर 1587 ई. में **तारीखे हुमायूँनी** की रचना की। इसे तजकिरात उल वाकियात, तारीख -ए - हुमायूँ शाही व तारीखे जवाहिरशाही भी कहा जाता है। इसकी रचना का उद्देश्य अबुल फजल को अकबरनामा लिखने में मदद देना था।

'तजिकर -ए - हुमायूँ व अकबर' का लेखक बायजीद बयाद था।

वह शाही रसोई का प्रबंधक था। वह किताब अबुल फजल के इस्तेमाल के लिए लिखी गई।

अबुल फजल की हत्या के बाद इनायत उल्लाह अकबर के दरबारी इतिहासकार बने उसने 'तकमील - ए - अकबर नाम' की रचना की। यह अकबर नामा का पूरक ग्रन्थ है।

इसमें 1602 से 1605 ई. तक का अकबर के समय का इतिहास है।

अब्दुल हक देवलवी द्वारा 1596 - 97 ई. में लिखित 'तारीख एक हकी' में अकबर की धार्मिक नीति की कड़ी आलोचना की गई है।

अब्दुल हक एक धार्मिक नेता थे, उनकी कृति 'अखबार उल अखबार' में भारत के प्रमुख संतों की जीवनी है।

अब्दुल हक के पुत्र नूर - उल - हक ने 'जुबादत उल तवारौख' की रचना की जिसमें जहाँगीर के राज्यारोहण तक भारत में मुस्लिम इतिहास का वर्णन है।

याहया बिन अब्दुल लतीफ ने अकबर के शासन के अन्तिम दिनों में 'मुन्तखब - उल - तवारौख' की रचना की है।

फैजी सरहिन्दी द्वारा लिखित अकबरनामा में अकबर के असीरगढ़ विजय का आंखों देख वर्णन है।

'मोहसीन फनी' ने दाबिस्तान -ए - मजाहिब' की रचना की, जिसमें फतेपुर सीकरी के इबातद खाने से अकबर द्वारा अयोजित धार्मिक वाद - विवाद एवं दीन -ए- इलाही के मूलभूत सिद्धान्तों का वर्णन है।

'मीर अलाउद्दौला कजवीनी' द्वारा लिखित '**नफाईस उल मासिर**' अकबर के समय की प्रथम ऐतिहासिक पुस्तक है।

रुकात ए अब्दुल फजल में अबुलफजल द्वारा अपने रिश्तेदारों, मित्रों व राजकुमार को लिखे पत्र हैं।

'इंशा ए अबुल फजल' में अकबर द्वारा अबुल फजल से लिखवाये गये स्वंय द्वारा लिखे पत्रों का संग्रह है।

आइने अकबरी के पांचवें भाग में अबुल फजल की आत्मकथा है। जबकि आइने अकबरी अकबरनामा क कुल तीन भागों में से तीसरा भाग है।

अबुलफजल ने अकबर के दरबार में 59 श्रेष्ठ कवियों का उल्लेख किया है।

इनमें फैजी, नजीरी, अब्दुरहीम, खानखाना, उत्वी, गिजाली एवं अबुल फजल प्रमुख थे।

फैजी अकबर का राजकवि था। वह अबुल फजल का भाई था। अकबर ने फैजी को अनुवाद विभाग का अध्यक्ष बनाया।

अकबर ने महाभारत का अनुवाद 'रज्मनामा' नाम से कराया। यह अनुवाद मुल्ला शेरी, नकीब खाँ, सुल्तानन हाजी और बदायूँनी ने किया। यह अनुवाद फैजी के निरीक्षण में सम्पन्न हुआ था।

रज्मनामा का अर्थ होता है। -**युद्धों की पुस्तक**

मुकम्मल खाँ गुजराती ने ज्योतिष शास्त्र की एक पुस्तक 'तजक' का 'जहाँर ए जफर' नाम से फारसी में अनुवाद किया।

अकबर के काल में ही संभवतः कुरान का पहली बार अनुवाद हुआ।

अकबर के समय का सर्वश्रेष्ठ कवि गिजारी था। उसके बाद फैजी



था। गिजारी की सर्वश्रेष्ठ कृति 'मानवी - नल - ओ - दमन' है।

अन्य कवियों में निशापुर का मुहम्मद हुसैन 'नजीरी' प्रसिद्ध था। वह अच्छा गजल लेखक था।

सिरोज का सैय्यद जमालुद्दीन उर्फ (उत्बी) कसीदों का प्रसिद्ध लेखक था।

अकबर ने मुहम्मद हुसैन कश्मीरी को 'जरीकलम' की उपाधि दी। ताजुद्दीन ने हितोपदेश का, शेख नूर मोहम्मद और मीर अस्करी राजी ने मधुमालती का फारसी अनुवाद किया।

जहाँगीर की फारसी में लिखी आत्मकथा 'तुजुके जहाँगीर' में जहाँगीर ने अपने शासन के प्रथम बारह वर्षों का इतिहास अपने हाथों से लिखा। बाद में उन्नीसवें वर्ष तक का इतिहास मोतविद खाँ ने लिखा। 'मुहम्मद हादी' ने इसे अन्तिम रूप से पूरा किया। मुहम्मद हादी ने जहाँगीर के काल का वर्णन 'ततिम्मावकयात - ए - जहाँगीरी' में किया गया है।

जहाँगीर के समय अब्दुल्ला ने 'तारीखें दाऊदी' की रचना की। इसमें लोदी व सूर शासकों की जानकारी मिलती है।

**मुहम्मद अमीन कजवीनी** शाहजहाँ के समय का 'प्रथम सरकारी इतिहासकार' था, उसने शाहजहाँ के शासन के प्रथम दस वर्षों का इतिहास पादशाहनामा में लिखा है। बाद में शाहजहाँ ने **अब्दुल हमीद लाहौरी** को सरकारी इतिहासकार बनाया। उसने पादशाहनामा लिखा, जिसे **मुहम्मद वारिस** ने अन्तिम रूप से पूरा किया।

चन्द्रभान के चहार चमन में शाहजहाँ की शासन प्रणाली व उसके वजीरों का वर्णन है।

दारा शिकोह ने उपनिषद्, भवत्गीता और योग वशिष्ट का फारसी में अनुवाद किया।

श्रीकृष्ण मिश्र द्वारा 11 वीं शताब्दी में लिखित संस्कृत नाटक प्रबोध चन्द्रोदय का दादाशिकोह के मुंशी बनवारीदास ने **गुलजारे हाल** नाम से फारसी भाषा में अनुवाद किया।

शाहजहाँ के समय रामायण का फारसी अनुवाद 'इबून हरकरण' ने किया।

**मिर्जा मुहम्मद काजिम** औरंगजेब के समय प्रथम व अन्तिम सरकारी इतिहासकार था। उसने **आलमगीर नामा** में औरंगजेब के शासन काल के प्रथम इक्कीस वर्षों का इतिहास लिखा है। बाद में औरंगजेब ने राज्य में समकालीन इतिहास लेखन पर रोक लगा दी।

लेकिन **मुहम्मद हाशिम उर्फ खफी खाँ** ने गुप्त रूप से औरंगजेब का इतिहास '**मुन्तखब - उल - लुबाव**' में लिखा। इसमें बाबर के समय से लेकर मुहम्मद शासक रंगीला के समय 1733 ई. तक का समग्र व वस्तुनिष्ठ इतिहास लिखा है। मुहम्मद हाशिम को **खफी खाँ** की उपाधि मुहम्मद शाह रंगीला ने इसलिए दी कि उसने इस बहुमूल्य पुस्तक को लंबे समय तक छुपाये रखा। अकील खाँ राजी ने 1650 से 1663 ई. तक का इतिहास

'जफरनामा - ए - आलमगीर' में लिखा।

मीर मुहम्मद मासूम ने 'तारीख ए - शाहशुजा' लिखा।

**भीमसेन** के '**नुस्खा ए दिलकुशा**' में औरंगजेब के शासन काल में दक्षिण की जानकारी मिलती है।

**ईसर दास नागर** की '**फुतुहात ए आलमगीरी**' में राजपूताना व मालवा में औरंगजेब के काल की घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसमें मारवाड़ के राठौड़ों के साथ औरंगजेब के सम्बन्धों का वर्णन है।

औरंगजेब के काल में '**मुहम्मद साकी**' द्वारा लिखित '**मआसिरे आलमगीरी**' को डॉ. जदुनाथ सरकार ने '**मुगल राज्य का गजेटियर**' कहा है।

औरंगजेब ने 1663 ई. में अरब ग्रन्थों की सहायता से फारसी में प्रशासनिक नियमों, न्याय व कानून की पुस्तक '**फतवा - ए - आलमगीरी**' का संकलन कराया। इसकी रचना **शेख निजाम** की अध्यक्षता में 6 व्यक्तियों द्वारा की गई। यह भारत में मुस्लिम कानून का सबसे बड़ा डाइजेस्ट है।

**औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य की जानकारी के स्रोत**

तारीख - ए - इराइत खान	-	इरादत खान
इबारात नामा	-	मुहम्मद कासिम
तारीख - ए - चगताई	-	मुहम्मद हादी
तारीख - ए - चगताई	-	मुहम्मद शफी तेहरानी
सियार - उल - मुतखरीन	-	गुलाम हुसैन

उत्तर मुगलकाल के अमीरों के जीवन और चरित्र पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक '**मआसिर - उल - उमरा**' की रचना 'शाहनवाज खाँ' ने की है।

औरंगजेब की पुत्री जैबुन्निसा एक कवयित्री थी। उसने 'दीवान ए मरुफी' की रचना की।

सुजानराय द्वारा लिखित 'खुलासत उत तवारीख' में महाभारत से लेकर औरंगजेब की मृत्यु तक का इतिहास संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इसमें औरंगजेब के काल की आर्थिक स्थिति, राज्यों की भौगोलिक सीमाओं व व्यापारिक मार्गों का जिक्र है।

मुगल काल के इतिहास पर वृन्दावन्दास ने 'लुब्बत - तवारीख' लिखी।

**संस्कृत, हिन्दी व क्षेत्रीय साहित्य :-**

**पदमावत व मृगावत** नामक दो श्रेष्ठ हिन्दी ग्रन्थों की रचना हुई मलिक मुहम्मद जायसी का पदमावत (1540 ई) हिन्दी का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

अकबर के काल में जैन विद्वान पदमशंकर ने सर्वप्रथम फारसी संस्कृत का शब्द कोष फारसी प्रकाश नाम से तैयार किया। अकबर ने संस्कृत में 'अल्लोपनिषद्' नामक एक छोटा उपनिषद् लिखवाया। इसका लेखक फैजी था।

अकबर के समय तुलसीदास, सूरदास, रहीम व रसखान हिन्दी कवि के प्रसिद्ध हुए।

दरभंगा के **ठाकुर महेशदास** ने संस्कृत में अकबर के शासनकाल की इतिहास '**सर्वदेश वृत्तान्त संग्रह**' नाम से लिखा।

अकबर के समय **पद्मसुन्दर** ने '**अकबरशाही शृंगार दर्पण**' लिखा।



अकबर के समय सिद्धिचन्द उपाध्याय ने भानुचन्द्र चरित्र तथा देव विमल ने हीरा सौभाग्यम नामक ग्रन्थ की रचना संस्कृत में की। तुलसीदास ने अकबर के समय अवधी में रामचरित मानस की रचना की। इसे जाजी ग्रियर्सन ने 'हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों की एकमात्र बाईबिल' बताया है।

**तुलसीदास** ने विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, आदि भी लिखी।

तुलसीदास बनारस में एकान्तरवास करते थे। अकबर के समकालीन होते हुए भी आइने-अकबरी में तुलसीदास का उल्लेख नहीं है।

अकबर ने बीरबल को कविप्रिय (कविराय) की उपाधि दी तथा नरहरि चक्रवती को महापात्र की उपाधि दी थी।

वृक्षाराज, राजा सूरज सिंह, जगत रूप गोसाई, राम मनोहरलाल, बिशनदास आदि जहाँगीर के समय प्रमुख हिन्दी कवि थे।

जहाँगीर के समय **सूरदास** ने सूरदास की रचना की। सूरदास आगरा के निवासी थे।

जहाँगीर के समय का श्रेष्ठ कवि **केशवदास** था। केशवदास वीरसिंह बुन्देला के दरबार में था। केशवदास ने जहाँगीर चन्द्रिका वीरसिंह देव चरित्र और कविप्रिया नामक ग्रन्थ लिखे। केशवदास को **कठिन काव्य का प्रेत** कहा जाता है।

बूटा या वृक्षाराज नामक कवि जहाँगीर का विशेष कृपापात्र था। जहाँगीर का भाई दानियाल हिन्दी में कविता करता था। प्रसिद्ध हिन्दी कवि आचार्य बिहारी को आमेर के राजा जयसिंह ने संरक्षण दिया।

राजा मानसिंह भी हिन्दी में काव्य की रचना करते थे। शाहजहाँ के दरबारी कवि पण्डित **जगन्नाथ** ने रसगंगाधर एवं गंगालहरी की रचना की। कवीन्द्र आचार्य ने कवीन्द्र कल्पतरु की रचना की। मतिराम और शिरोमणि मिश्र भी शाहजहाँ के समय थे।

**रसखान** ने 1634 ई. में '**प्रेमवाटिका**' लिखी।

शाहजहाँ ने हिन्दी कवियों सुन्दरदास व चिन्तामणि को भी राजकीय संरक्षण प्रदान किया। कवि जटमल ने गोरबादल की कथा लिखी।

सूरदास '**अष्ट छाप**' के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। अष्ट छाप कृष्ण भक्ति के मुख्य प्रवर्तक वल्लभाचार्य के आठ प्रमुख अनुयायी थे। ये सब सामूहिक रूप से अष्टछाप के नाम से विख्यात हुए।

अष्ट छाप के अन्य कवियों में 'रस पंचाध्यायी' के रचयिता 'नन्ददास', गद्य में '**चौरासी वैष्णवों की वार्ता**' के लेखक विठलनाथ, परमानन्ददास, कुम्भनदास और 'रसखा' थे।

विद्वानों का मानना है कि सूरदास ने कुल सवा लाख पदों की रचना की, किन्तु इनमें से दस हजार पर ही उपलब्ध है।

बंगाल के कृष्णदास कविराज ने 'चैतन्य चरितामृत' की रचना की वे इस युग के सबसे प्रसिद्ध वैष्णव लेखक थे।

वृंदावनदास की 'चैतन्य भागवत' चैतन्य महाप्रभु के जीवन की प्रामाणिक रचना है।

जयानन्द व त्रिलोचन दास ने भी चैतन्य देव की लोकप्रिय जीवनी

'चैतन्य मंगल' लिखी।

नरहरि चक्रवती की 'भक्ति रत्नाकर' चैतन्य के जीवन पर आधारित जीवनी है।

काशीरामदास का महाभारत व मुकन्दराम चक्रवती का कवि कंकण चण्डी अत्यधिक महत्वपूर्ण बंगाली अनुवाद है।

प्रोफेसर कोवेल ने मुकन्दराम को 'बंगाल का साहित्यिक केकड़ा' कहा है।

### मुगल कालीन प्रमुख पुस्तकें एवं लेखक :-

पुस्तक का नाम	लेखक
तुजुके बाबरी (बाबर नामा)	बाबर
दीवान (काव्य संग्रह)	बाबर
रिसाल -ए-उसज (खत -ए-बाबरी)	बाबर
मुबाइयान की सभी रचनायें तुर्की भाषा में थीं	बाबर
हबीब - उस - सियार, कानूने हुमायूनी	खोद अमीर (ख्वांदामीर)
तारीखे रशीदी	मिर्जा मुहम्मद हैदर दोगलत (बाबर का मौसरा भाई)
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम (बाबर की पुत्री)
तारीखे रशीदी	मिर्जा मुहम्मद हैदर दोगलत (बाबर का मौसरा भाई)
तजकिरातुल वाकयात	जौहर आफताबची (हुमायूँ का नौकर)
तारीख - ए - शाही (तारीख - ए - सलातीनी अफगान)	अहमद यादगार (अफगान - मुगल काल)
तारीख ए - दौलत - ए - शेरशाही	हसन अली खॉ
वाकयात - ए - मुश्ताकी (लोदी - सूरकाल)	रिजकुल्ला मुश्ताकी
तुहकात - ए - अकबरशाही अथवा तारीख ए शेरशाही	अब्बास खॉ सरवानी
तारीख ए अकबरी	आरिफ कन्धारी
नफाइस उल मासिर	मीर अलाउद्दौला कजवीनी
मुन्तखब -उत - तवारीख	अब्दुल कादिर बदायूनी
तबकाते अकबरी	ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद
नफाइस -उत - मासिर	आरिफ कन्धारी
नफाइस उल मासिर	मीर अलाउद्दौला कजवीनी
मुन्तखब - उत - तवारीख	अब्दुल कादिर बदायूनी
तबकाते अकबरी	ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद
अकबर नामा (आइने अकबरी)	अबुल फजी
तारीखे अल्फी (अकबर के आदेश पर एक हजार का इतिहास लिखवाया गया)	मुल्ला, मुहम्मद दाउद, नकीब खॉ, जाफर बेग, मौलाना अहमद, बदायूनी
मआसिरे रहीमी	अब्दुल बाकी (अब्दुल रहीम खान खाना के संरक्षण में)





अकबरनामा एवं तारीख ए हुमायूँ	शेख इलाहदाद फैजी सरहिन्दी
तुजुके जहांगीरी ( जहाँगीर की आत्मकथा)	जहाँगीर
इकबाला नामा – ए – जहाँगीरी	मौतमिद खाँ
मआसिरे – ए – जहाँगीरी शाह	ख्वाजा कामगार धरियत खाँ
इन्तखाव – ए खाने जहाँगीरी शाह	अपरिचित लेखक
सियासत नाम	निजामुल मुल्क तुसी
तारीख ए खाने जहानी मखजानी (सूरवंश की जानकारी)	नियामत उल्ला अफगानी
पादशाह नामा	अब्दुल हमीद लाहौरी
पादशाह नामा	मोहम्मद अमीन कजवीनी
पादशाह नामा	मुहम्मद वारिस
शाहजहाँ नामा	इनायत खाँ (मुहम्मद ताहिर)
शाहजहाँ नामा	मुहम्मद सादिक खान
अमले सालेह	मुहम्मद सालेह
चहार – चमन	चन्द्रभान
जुब्दातुल तवारीख	नूरल हक
वाकयात	असद बेग
तारीख – ए – फरिश्ता (गुलशन – ए – इब्राहीमी)	मुहम्मद कासिम हिन्दुशाह (फरिश्ता )
आलमगीरनामा	काजिम शीराजी
आलमगीरनामा	हातिमा खाँ
वाकयात – ए – आलमगीरी	आकिल खाँ
आलमीर नामा	मिर्जा मुहम्मद काजिम
मासिरे आलमगीरी	मुहम्मद साकी मुस्ताक खाँ
नुस्खा – ए – दिलकुशाँ	भीमसेन सक्सेना बुरहान पुरी
फुतहात – ए – आलमगीरी	ईश्वरदास नागर
खुलासत उत तवारीख	सुरजनराय भण्डारी
मुन्तखब – उल – लुबाव	खफी खाँ ( मुहम्मद हाशिम)
मज्ज – उल – बहरीन	दारा शिकोह
सियारुल मुतखरीन	गुलाम हुसैन (उत्तर मुगलकाल)

### अनुवादित पुस्तकें

महाभारत ( रज्मनामा) शेख सुल्तान हाजी ( फैजी के हुआ)	मुल्लाशेरी, नकीब खाँ, बदायूँनी, निर्देशन में महाभारत का अनुवाद
रामायण फैजी	बदायूँनी, नकीब खाँ, शेख सुल्तान
अथर्ववेद	हाजी इब्राहिम सरहिन्दी
लीलावती, नल दमयन्ती, भद्रवद् गीता, योग वशिष्ट, वेदान्त	फैजी
भगवत पुराण	राजा टोडरमल
हरिवंश पुराण	मौलाना शैरी
राजतरंगिणी ( बहर – उल – अस्माद)	मुल्ला शाह मुहम्मद शाहाबादी

भगवद् गीता, योग वशिष्ट	दारा शिकोह
सिर् – ए – अकबर (उपनिषदों का संग्रह)	दारा शिकोह
पंचतंत्र (अनवार – ए – सुहेली)	अबुल फजल
कालिया दमन (अयार ए दानिश)	अबुल फजल

पंचतंत्र का फारसी अनुवाद **अनवार ए सुहेली** नाम से अबुल फजल ने किया जबकि पंचतंत्र का अरबी अनुवाद **कालीला एवं दिमना** कहलाता है।

### महाराणा प्रताप

1572 ई. में उदयसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र महाराणा प्रताप (1572 – 1597 ई) गद्दी पर बैठे। महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई, 1540 को कुम्भलगढ़ में हुआ। इनकी माता का नाम रानी जयवंताबाई था। महाराणा उदयसिंह ने जैसलमेर की भाटी रानी धीराबाई से उत्पन्न पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, किन्तु महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद राजपूत सरदारों ने महाराणा प्रताप को राजसिंहासन पर बिठाया। यह एक प्रकार की राजमहलों की क्रांति थी। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ। महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया। अकबर ने कूटनितिक प्रयासों के तहत राणा प्रताप को समझाने के लिए क्रमशः **जलाल खाँ, मानसिंह, राजा भगवानदास और अन्त में टोडरमल** को मेवाड़ भेजा, किन्तु ये प्रयास असफल रहे। 1576 ई. में अकबर ने मानसिंह व आसफखाँ के नेतृत्व में एक सेना मेवाड़ पर आक्रमण के लिए भेजी। **18 जून, 1576** को राणा प्रताप ने हल्दी घाटी में इस सेना का मुकाबला किया। इस युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ **हकीम खाँ सूरी** भी था। इस युद्ध में मानसिंह बिना जीत के वापस लौट गया। अबुल फजल के अनुसार यह युद्ध **खमनौर** में तथा बदायूँनी के अनुसार गोगुदा में हुआ। हल्दीघाटी को कर्नल टॉड ने **मेवाड़ की थर्मोपाली** कहा है। इस युद्ध को अबुल फजल ने **खमनौर का युद्ध** तथा बदायूँनी ने **गोगुदा का युद्ध** कहा है।

महाराणा प्रताप की तरफ से ग्वालियर के रामसिंह व उनके पुत्र, झाला मानसिंह झाला बीदा, सोनगरा मानसिंह आदि प्रमुख सेनापति थे।

इस युद्ध में मुगल सेना ने प्रताप के हाथी रामप्रसाद को पकड़ लिया। अकबर इस हाथी को प्राप्त करना चाहता था। अकबर ने इसका नाम पीर प्रसाद रखा। महाराणा प्रताप के घायल होने पर झाला बीदा ने प्रताप का स्थान लिया और महाराणा प्रताप युद्ध क्षेत्र से सुरक्षित स्थान पर पहुंचे।

**हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर का आश्रित इतिहासकार बदायूँनी भी उपस्थित था।**

हल्दीघाटी के युद्ध के बाद राणा प्रताप ने **छावन्द (चावड)** को अपनी राजधानी बनाकर अकबर के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध जारी रखा। अक्टूबर 1576 ई. में अकबर ने स्वयं अजमेर से मेवाड़ पर आक्रमण किया। नवम्बर 1576 में उदयपुर को जीतकर उसका नाम मुहमदाबाद रखा।



1582 में महाराणा प्रताप का पुत्र अमरसिंह (1597 – 1620) तथा मुगलों के बीच दिवेर नामक स्थान पर युद्ध हुआ। दिवेर के युद्ध को कर्नल डॉड ने मेवाड़ का मेराथन कहा था।

दिवेर की मुस्लिम चौकी का सरदार अकबर का चाचा सुल्तान खान था। दिवेर की जीत के बा महाराणा प्रताप ने चावण्ड में अपना निवास स्थान बनाया।

चूलिया गांव में राणा प्रताप के मंत्री भामाशाह ने अपनी निजी सम्पत्ति देकर राणा को पुनः सेना तैयार करने में मदद की, फलस्वरूप राणा मेवाड़ की खोई हुई भूमि पुनः प्राप्त कर सके।

1597 ई. में राजधानी चावण्ड में महाराणा प्रताप की मृत्यु धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते समय धनुष टूट जाने से जख्मी होने के कारण हुई और बाडोली में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

### प्रमुख क्रांतिकारी :-

1922 में गांधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन अचानक समाप्त करने पर युवा वर्ग अत्यधिक निराश हुआ और पुनः क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर मुड़ गया।

सचीन्द्र नाथ सान्याल ने 'बन्दी जीवन' नामक एक पुस्तक लिखी जो क्रांतिकारियों के लिए आदर्श बनी।

अक्टूबर, 1924 में सचीन्द्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल जोगेश चटर्जी, चन्द्रशेखर आजाद आदि ने कानपुर में क्रांतिकारी संस्था 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' (H. R. A) की स्थापना की।

H. R. A द्वारा 9 अगस्त, 1925 का उत्तर रेलवे के लखनऊ सहारनपुर सम्भाग के काकोरी नामक स्थान पर सहारनपुर से लखनऊ जा रही 8 डाउन ट्रेन में जा रहे सरकारी खजाने को घात लगाकर लूट लिया।

काकोरी काण्ड में 29 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया जिनमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला, रोशन लाल तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को 1927 ई. में फांसी दी गई।

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, रोशन लाल को इलाहाबाद जेल में, अशफाक उल्ला को फैजाबाद जेल में, और राजेन्द्र लाहिड़ी को गोंडा जेल में फांसी लगाई गई।

चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर H. R. A के सभी सदस्य काकोरी काण्ड में गिरफ्तार हुये इससे H. R. A को अस्तित्व समाप्त हो गया।

1926 में भगतसिंह, छबील दास, यशपाल आदि युवकों ने लौहोर में नौजवान सभा (नौजवान भारत सभा) की स्थापना की।

बाद में चन्द्रशेखर आजाद ने सितम्बर, 1928 में दिल्ली के फिरोज शाह कोटला मैदान में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (H. S. R. A) की स्थापना की। इसमें भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, बटुकेश्वर दत्त, शिव वर्मा आदि भी शामिल थे।

H. S. R. A का उद्देश्य भारत में समाजवादी गणतन्त्रात्मक राज्य की स्थापना करना था।

H. S. R. A का विजयकुमार सिन्हा, शिव वर्मा और जयदेव कपूर ने उत्तर प्रदेश में तथा भगतसिंह चरण बोहरा एवं सुख देव ने पंजाब में प्रसार किया।

H. S. R. A की पहली क्रांतिकारी गतिविधि 17 दिसम्बर, 1928 को भगतसिंह चन्द्रशेखर व राजगुरु द्वारा लाहौर के सहायक अधीक्षक सांडर्स की हत्या थी। यह हत्या साइमन कमीशन का विरोध करते समय लाला लाजपत राय पर लाठियों से प्रहार कर उनकी हत्या का बदला लेने के लिए की गई।

क्रान्तिकारी स्कॉट को मारना चाहते थे किंतु गलती से सांडर्स मारा गया।

H. S. R. A के सदस्यों ने दिसम्बर, 1929 में दिल्ली के निकट उस रेलगाड़ी को उड़ाने का प्रयास किया जिसमें लार्ड इरविन सवार थे।

H. S. R. A के दो सदस्यों भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल, 1929 को केन्द्रीय विधान मण्डल में बम फेंका। जिस समय फेंका गया उस समय ट्रेड डिस्प्यूट बिल तथा पब्लिक सेफ्टी बिल पर बहस चल रही थी।

बम का उद्देश्य सरकार को डाराना था। बम के साथ फेंके गये पर्चों में यह सन्देश था "बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए बम का प्रयोग किया गया।

केन्द्रीय विधान मण्डल में बम फेंकते समय भगतसिंह ने पहली बार इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा दिया।

भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर उन पर असेम्बली में बम फेंकने तथा सांडर्स की हत्या के आरोप में 'लाहौर पड्यंत्र केस' के तहत मुकदमा चलाया गया।

लाहौर पड्यंत्र केस के तहत H. S. R. A के बन्दी क्रांतिकारियों ने राजनैतिक कैदी का दर्जा प्राप्त करने के लिए भूख हड़ताल की।

भूख हड़ताल पर बैठे जतिन दास की 64 दिन बाद 13 सितम्बर, 1929 को मृत्यु हो गई। जतिन का मृत शरीर जब लाहौर से बंगाल लाया गया तो कलकत्ता रेलवे स्टेशन पर 6 लाख लोग इनके अन्तिम दर्शन के लिए इकट्ठे हुए।

भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1931 को लाहौर सेन्ट्रल जेल में फांसी दे दी गई।

सुखदेव (1907 से 1931) का जन्म 15 मई 1907 को पंजाब के लुधियाना जिले में नौधरा नामक स्थान पर हुआ उनके पिता का नाम श्री रामलाल और माँ का नाम श्रीमती रल्लीदेवी था। वे भगतसिंह के बचपन के साथी थे और कम उम्र में ही क्रांतिकारियों के साथ लिये। भगत सिंह को क्रांतिकारी पथ पर लाने वाले सुखदेव ही थे। क्रांति क्षेत्र में सुखदेव चाणक्य थे, तो भगतसिंह चन्द्रगुप्त।

मुकदमे के दौरान भगत सिंह व अन्य क्रांतिकारी 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगते हुए अदालत में प्रवेश करते थे।

इन्कलाब जिन्दाबाद की रचना 'मुहम्मद इकबाल' ने की तथा भगत सिंह ने पहली बार इसका नारे रूप में इस्तेमाल कर इसे चर्चित बनाया।

H. S. R. A के एक मात्र बाहर रहे सदस्य चन्द्रशेखर आजाद 27 फरवरी, 1931 ई. को इलाहाबाद के 'अल्फ्रेड पार्क' में पुलिस मुठभेड़ में शहीद हुए।

भगतसिंह अपने समय के क्रांतिकारियों नहीं लाई जा

सकती, व्यापक जनआन्दोलन ही क्रांति का माध्यम बन सकता है। सुभाष चन्द्र बोस ने भगत सिंह के बारे में कहा कि "भगत सिंह जिन्दाबाद या इन्कलाब जिन्दाबाद का एक ही अर्थ है"।

गांधीजी ने भगतसिंह के बारे में कहा कि "जहां तक याद पड़ता है किसी भी व्यक्ति के जीवन के साथ इतना अधिक रोमांच नहीं जुड़ा होगा जितना भगत सिंह के जीवन के साथ जुड़ा है।

भगत सिंह ने अदालत में कहा कि "क्रान्ति से हमारा तात्पर्य यह है कि अन्याय पर आधारित मौजूदा व्यवस्था समाप्त होनी चाहिये। भगवती चरण बोहरा "द फिलोसफी ऑफ द बॉम्ब" नामक पुस्तक लिखी।



### सुभाष चन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज (I. N. A)

द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने के बाद सरकार ने सुभाषचन्द्र बोस को कलकता में नजर बन्द कर लिया। 17 जनवरी, 1941 को सुभाषचन्द्र बोस कलकता से गायब हो गये तथा काबुल होते हुए रूस पहुँचे।

सुभाष चन्द्र बोस कलकता से एक मौलवी के वेश में मोगेह पहुँचे गोमेह से वह एक बीमा एजेंट के रूप में पेशावर पहुँचे। पेशावर से **जियाउद्दीन पाठन** के नाम से काबुल पहुँचे। काबुल से वे **ओरलैण्डो मैसोड्रा** नामक इटालियन नाम से पासपोर्ट लेकर रूस गये।

काबुल से मास्को व बर्लिन की यात्रा इसी इटालियन पासपोर्ट पर की।

रूस पर जून 1941 में जर्मनी ने आक्रमण कर दिया तो रूस मित्र राष्ट्रों में शामिल हो गया। इसलिए सुभाष चन्द्र बोस को रूस से जर्मनी जाना पड़ा। जर्मनी में बोस ने हिटलर से मुलाकात कर भारतीय आजादी की लड़ाई में हिटलर से सहयोग माँगा।

जर्मनी में ही भारतीयों द्वारा सुभाष बोस को **नेताजी** की उपाधि दी गई। जर्मनी में सुभाषचन्द्र बोस ने **फ्री इंडिया सेन्टर** की स्थापना की तथा यहीं पहली बार सुभाष ने जयहिंद का नारा दिया।

फरवरी, 1943 में सुभाष जर्मनी की यू बोट पनडुब्बी से जर्मनी से जापान के लिए रवाना हुए। वे जून, 1943 में **मत्सूदा** नाम से जापान पहुँचे।

टोक्यो में रामबिहारी बोस ने मार्च, 1942 में **इंडियन इंडिपेन्डेन्स लीग** की स्थापना की थी। इससे पहले ब्रिटिश भारतीय सेना के एक भारतीय अधिकारी कैप्टन मोहनसिंह ने जापी मेजर फूजीवारा के प्रोत्साहन से **मलाया** में 15 दिसम्बर, 1941 को **आजाद हिन्द फौज** की स्थापना की। इस फौज में ब्रिटिश भारतीय सेना के वे सैनिक थे जिन्होंने जापान के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया था। जून, 1943 में रामबिहारी बोस की अध्यक्षता में इंडियन इंडिपेन्डेन्स लीग को बैंकाक में एक और सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें सुभाषचन्द्र बोस को लीग व आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सौंपने का निर्णय लिया गया।

4 जुलाई, 1943 को रासबिहारी बोस ने **सिंगापुर** में आजाद हिन्द फौज (I.N.A) की कमान सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दी। सुभाष आजाद हिन्द फौज के सेनापति बने। इसी समय सुभाषचन्द्र बोस ने **दिल्ली चलो** का नारा दिया।

सिंगापुर में ही सुभाषचन्द्र बोस ने 21 अक्टूबर, 1943 को स्वतन्त्र भारत की अस्थाई सरकार का गठन किया। सिंगापुर के अलावा रंगून में भी अस्थाई सरकार का मुख्यालय बनाया गया। जापान व जर्मनी सहित धूरी राष्ट्रों ने अस्थाई सरकार को मान्यता दी। इस अस्थाई सरकार में एच. सी. चटर्जी वित्तमंत्री, एम.ए. अय्यर प्रचार मंत्री तथा लक्ष्मी स्वामीनाथन महिलाओं की मंत्री थी। आजाद हिन्द फौज की तीन ब्रिगेड थी सुभाष ब्रिगेड नेहरू ब्रिगेड गांधी ब्रिगेड महिलाओं के लिए रानी लक्ष्मी बाई के नाम पर रानी

झांसी रेजिमेन्ट बनाई गई।

मलेशिया में सैनिकों से आह्वान करते हुए सुभाष ने कहा, 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

6 नवम्बर, 1943 को जापानी सेना के अंडमान और निकोबार द्वीप को जीतकर आजाद हिन्द फौज को सौंप दिया। सुभाष चन्द्र बोस ने इनका नाम शहीद और स्वराज द्वीप रखा।

6 जुलाई, 1944 को सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द रेडियों के प्रसारण द्वारा महात्मा गांधी से "भारतीय स्वाधीनता के अन्तिम युद्ध" के लिए आशीर्वाद माँगा। इस प्रसारण में ही सुभाष चन्द्र बोस ने पहली बार **गांधीजी** के लिए **राष्ट्रपिता** शब्द का प्रयोग किया।

कैप्टन शाहनवाज के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज की एक बटालियन भारत बर्मा सीमा पर आक्रमण करने के लिए जापानी सेना के साथ बर्मा भेजी गई।

18 मार्च, 1944 को आजाद हिन्द फौज ने भारतीय सीमा पार कर भारतीय भूमि पर तिरंगा फहराया।

मई 1945 में ब्रिटिश सेना ने रंगून पुनः अधिकार कर लिया अतः आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को आत्म समर्पण करना पड़ा। जवाहरलाल नेहरू ने सुभाषचन्द्र बोस को भारतीय देशभक्ति की ज्वलन्त तलवार कहा।

18 अगस्त, 1945 को सुभाषचन्द्र बोस की ताईवान के ताइकू हवाई अड्डे पर हवाई दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

### आजाद हिन्द फौज पर मुकदमा :-

सरकार नए आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों पर सरकार के प्रति निष्ठा की शपथ तोड़ने के आरोप में दिल्ली के लालकिले में नवम्बर, 1945 में मुकदमा चलाया। इस मुकदमे के विरुद्ध देशव्यापी आन्दोलन हुआ। 12 नवम्बर, 1945 को आजाद हिन्द फौज दिवस मनया गया।

काँग्रेस ने आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों के बचाव के लिए आजाद हिन्द बचाव समिति का गठन किया तथा भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में वकीलों का एक दल तैयार किया जिसमें **जवाहर लाल नेहरू, तेजबहादुर सप्रू, कैलाश नाथ काटजू, आसफ अली व बख्शी टेकचन्द** भी शामिल थे।

देशके सभी राजनैतिक दलों ने आजाद हिन्द फौज के युद्ध बन्दियों का समर्थन किया। आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों सरदार गुरुख सिंह ढिल्लों, श्री प्रेम सहगल और शाहनवाज को फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन भारी जनविरोध के कारण वायसराय को इन तीनों की फांसी की सजा माफ करनी पड़ी।

11 फरवरी, 1946 को कलकता में, आजाद हिन्द फौज के एक अधिकारी राशिद अली को सात वर्ष का कारवास की सजा दिये जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ।

अली को सात वर्ष का कारवास की सजा दिये जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ।

**विनायक दामोदर सावरकर :-** वीर सावरकर का जन्म महाराष्ट्र के भागुर गांव में 28 मई, 1833 को हुआ।

विनायक दामोदर सावरकर ने 1889 ई. में **मित्रमेला** नामक संस्था



स्थापित की जिसे 'अभिनव भारत समाज' का नाम दिया गया। अभिनव भारत की शाखाएँ महाराष्ट्र तथा मध्य प्रान्त में सक्रिय थी। अभिनव भारत के सदस्य 'अनन्त लक्ष्मण कन्हारे' ने नासिक षड्यंत्र केस कहा जाता है। इसमें कई क्रान्तिकारी गिरफ्तार हुए जिनसे 27 को दोष पाकर दण्डित किया गया। इनमें वी. डी. सावरकर व उनके भाई गणेश सावरकर को काला पानी की सजा दी गई। सावरकर को ब्रिटेन से भारत भेजा गया और उन पर मुकदमा चलाया गया।

**श्यामजी कृष्णा वर्मा :-** ने 1905 में लन्दन में 'इंडिया होमरूल सोसायटी' की स्थापना की। यह विदेशी धरती पर सबसे पुरानी भारतीय क्रान्तिकारी संस्था थी।

इसके प्रमुख सदस्यों में लाला हरदयाल, वी. डी. सावरकर, तथा मदन लाल धींगरा थे। सोसायटी का प्रमुख उद्देश्य भारत के लिए स्वशासन प्राप्त करना था।

इंडियन होमरूल सोसायटी ने 'इण्डियन सोसियोलोजिस्ट' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की।

इण्डिया हाउस के सदस्य मदन लाल धींगरा ने जुलाई, 1909 को भारत सचिव के राजनितिक सलाहकार कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी। धींगरा को फांसी की सजा दी गई।

इस हत्याकाण्ड के बाद सावरकर को गिरफ्तार कर नासिक षड्यंत्र केस के तहत मुकदमा चलाने के लिए भारत भेज दिया गया।

वी. डी. सावरकर को बाद में पोर्टब्लेयर स्थित सेल्युलर जेल में काला पानी की सजा के लिए भेजा गया।

### गाँधी का जीवन परिचय :-

गांधीजी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात में कठियावाड़ में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ। इनका वास्तविक नाम मोहन दास तथा पिता का नाम कर्मचन्द गांधी था। इनके पिता पोरबन्दर व राजकोट के दीवान थे। इनकी माता का नाम पुतलीबाई था। 1882 में गांधी जी का विवाह कस्तूरबा के साथ हुआ। 1887 में ये बेरिस्टरी की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड चले गए व 1891 में वापस आये।

1893 में एक पारसी फर्म दादा अब्दुला एण्ड कम्पनी में मुकदमों की पैरवी करने गांधीजी दक्षिण अफ्रीका चले गये। गांधीजी वैष्णव हिन्दु थे।

गांधीजी अपने आपको लियो टॉल्स्टॉय का शिष्य मानते थे। टॉल्स्टॉय की पुस्तक 'ईश्वर का सम्राज्य आपके अन्दर है' से गांधीजी अत्यधिक प्रभावित हुये।

1894 में दक्षिण अफ्रीका में प्रिटोरिया जाते समय पोटरमोरिटजबर्ग नामक रेलवे स्टेशन पर गांधीजी को प्रथम श्रेणी के डेब्बे से बाहर फेंक दिया गया। इसके बाद गांधीजी ने नाटाल कांग्रेस की स्थापना की।

1906 में गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग किया। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने टॉल्स्टॉय फार्म तथा फीनिक्स

फार्म की स्थापना की थी।

गांधीजी के राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे तथा गोखले के गुरु महादेव गोविन्द रानाडे थे।

(रानाडे को महाराष्ट्र के सुकरात नाम से जाना जाता था) गांधीजी के चार पुत्र थे। हरिलाल, मणिलाल, रामदास, और देवदास। जमनालाल बजाज को गांधीजी का पाँचवा पुत्र कहा जाता था।

1909 में इंग्लैण्ड से भारत आते हुए गांधीजी ने जहाज पर हिन्द स्वराज नामक पुस्तक की रचना की।

गांधीजी एकादश महाव्रत (11 महाव्रत) में विश्वास रखते थे। यह एकादश महाव्रत निम्न थे।

1. सत्य 2. अहिंसा 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह 5. ब्रह्मचर्य 6. अस्वाद 7. निर्भीकता 8. शारीरिक श्रम 9. सर्वधर्म समानता 10. स्वदेशी का व्रत 11. अस्पृश्यता का निवारण।

**गांधीजी के साप्ताहिक पत्र :-** इण्डियन ओपिनियन (दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजी भाषा में)

**भारत में अंग्रेजी भाषा में :-** यंग इण्डिया हरिजन

**भारत में हिन्दी में :-** हरिजन सेवक, हरिजन बन्धु, नवजीवन

**गांधीजी की पुस्तकें :-** सर्वोदय, सत्याग्रह, गीता बोध, आत्मा शुद्धि, राष्ट्रवाणी, हिन्द स्वराज, दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, सत्य के साथ मेरे प्रयोग।

### गांधीजी का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान ( असयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आंदोलन)

गांधीजी 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से वापस भारत आये। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में सरकार के युद्ध प्रयासों में मदद की जिसके लिए सरकार ने उन्हें 'कैसर - ए - हिन्द' की उपाधि से सम्मानित किया।

1915 ई. में गांधीजी ने अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे 'सत्याग्रह आश्रम' की स्थापना की।

### चम्पारन सत्याग्रह :-

अप्रैल, 1917 ई. में गांधीजी ने चम्पारन सत्याग्रह को सफल नेतृत्व किया। गांधीजी राजकुमार शुक्ला नामक व्यक्ति के बुलावे पर चम्पारन गये। गांधीजी के साथ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जे. बी. कृपलानी, महादेव देसाई मजहर उल हक तथा नरहरि पारेख भी गये थे।

चम्पारन में तिनकठिया पद्धति के तहत किसानों से जमीन के 3/20 भाग में नील उगावाई जायी थी।

गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और अंत में एक जांच समिति बनाई गयी जिसमें गांधीजी में एक सदस्य थे। इस समिति में चम्पारन कृषि अधिनियम पारित किया गया जिसके तहत तिनकठिया पद्धति समाप्त कर दी गयी और किसानों से अवैध रूप से वसूले गये धन का 25 प्रतिशत भाग वापिस कर दिया गया।





चम्पारन सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गांधीजी को महात्मा कहा।

#### अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह :-

फरवरी, 1918 ई. में अहमदाबाद मिल मजदूरों ने प्लेग बोनस को लेकर आन्दोलन कर दिया। मिल मालिकों ने 20 प्रतिशत बोनस देने का निर्णय किया जबकि गांधीजी ने मजदूरों को 35 प्रतिशत बोनस देने की मांग की व 15 मार्च को गांधीजी भूख हड़ताल पर बैठ गये। मिल मालिकों में **अम्बालाल साराभाई** और उनकी बहिन **अनुसूइया बेन** ने भी गांधीजी का समर्थन किया। बोनस का मामला एक ट्रिब्यूनल को सौंपा गया जिसने मजदूरों को 35 प्रतिशत बोनस देने का फैसला लिया। इस प्रकार गांधीजी ने अहमदाबाद मिल मजदूरों के आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया।

#### खेड़ा सत्याग्रह :-

1917 - 18 में सूखे के कारण फसल खराब हो जाने पर भी खेड़ा (गुजरात) के कुनबी - पाटीदार किसानों से लगान की वसूली की जा रही थी। वल्लभ भाई पटेल व इन्दुलाल याज्ञनिक ने किसानों को लगान न अदा करने का सुझाव दिया। 22 मार्च 1918 को गांधीजी ने खेड़ा आकर आन्दोलन की बागडोर संभाली। सरकार ने आन्दोलन से परेशान होकर अंत में यह गुप्त आदेश जारी कर दिया की लगान उसी से वसूल किया जाये जो सक्षम हो। 1918 ई. के खेड़ा सत्याग्रह को हार्डीमन ने भारत का पहला वास्तविक किसान सत्याग्रह कहा है।

#### 1919 ई. का रौलट ऐक्ट :-

क्रान्तिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिए सरकार ने 1917 ई. में न्यायाधीश **'सिडनी रौलट'** की अध्यक्षता में आतंकवाद को कुचलने की योजना बनाने के लिए एक समिति नियुक्त की। रौलट समिति के सुझाव पर 17 मार्च, 1919 ई. को केन्द्रीय विधान परिषद् ने भारतीय सदस्यों के विरोध के बावजूद रौलट ऐक्ट पारित किया। रौलट ऐक्ट द्वारा अंग्रेज सरकार बिना मुकदमा चलाये किसी भी व्यक्ति को जेल में रख सकती थी। रौलट ऐक्ट को **'बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील का कानून'** कहा गया। ऐक्ट को भारतीय जनता ने 'काला कानून' कहा।

#### जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड ( 1919 ई.)

पंजाब में रौलट ऐक्ट का विरोध करने वाले दो स्थानीय कांग्रेसी नेताओं डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलु को 9 अप्रैल को

गिरफ्तार किया गया जिसके विरोध में 10 अप्रैल को रैली निकाली गई जिस पर गोल बारी में कुछ आन्दोलनकारी मारे गये 13 अप्रैल, 1919 को वैशाखी के दिन इस गिरफ्तारी व गोलीबारी के विरोध में अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई।

इस समय पंजाब के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर **माइकल ओ डायर** थे। अमृतसर के एक सेना अधिकारी जनरल डायर ने बिना चेतावनी दिये निहत्थी भीड़ पर गोलियां चला दी, जिसमें 1000 से ज्यादा निर्दोष लोग मारे गये। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 379 लोग मारे गये।

हत्याकांड के विरोध में रविन्द्र नाथ टैगोर ने **नाइटहुड** की उपाधि त्याग दी और वायसराय की कार्यकारिणी के सदस्य **शंकर नायर** ने इस्तीफा दे दिया।

सरकार ने जलियांवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए हण्टर की अध्यक्षता में **हण्टर कमेटी** नियुक्त की।

#### खिलाफत आन्दोलन :-

जलियांवाला बाग हत्याकांड से भारतीय राजनीति में आकस्मिक परिवर्तन आया जो खिलाफत आन्दोलन शुरू होने पर अधिक उग्र हो गया।

प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की पराजय हुई। भारतीय मुस्लिम तुर्की के सुल्तान को इस्लाम का खलीफा मानते थे। युद्ध के बाद जब ब्रिटेन ने तुर्की का विभाजन करने का निश्चय किया तो भारतीय मुस्लिम नाराज हो गये और उन्होंने खिलाफत आन्दोलन शुरू किया।

जब गांधीजी ने खिलाफत आन्दोलन में भाग लिया तो यह आन्दोलन अधिक मजबूत हुआ।

गांधीजी ने खिलाफत आन्दोलन को हिन्दु - मुस्लिम एकता का ऐसा सुनहरा अवसर माना जो आगे 100 वर्षों तक भी नहीं मिलेगा।

गांधीजी ने खिलाफत आन्दोलन को सहयोग दिया क्योंकि वे भारतीय मुसलमानों को ब्रिटेन के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलन में मिलाना चाहते थे।

अली बन्धुओं (मोहम्मद अली और शौकत अली) ने अपने पत्र कामरेड में तुर्की का समर्थन किया।

अली बन्धु, हकीम अजमल खाँ, डॉ. अन्सारी, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, हसरत मोहानी आदि प्रमुख तुर्की समर्थक व खिलाफत नेता थे। इनके नेतृत्व में सितम्बर, 1919 में **'अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी'** का गठन हुआ।

17 अक्टूबर, 1919 को **दिल्ली** में होने वाली अखिल खिलाफत कमेटी के सम्मेलन की अध्यक्षता गांधीजी ने की।

जिन्ना ने खिलाफत आन्दोलन का समर्थन नहीं किया।

सितम्बर, 1920 में **कलकता** में हुए कांग्रेस के विशेष अधिवेशन (लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में) मुख्य मुद्दा जलियांवाला काण्ड और खिलाफत था। कांग्रेस ने पहली बार भारत में विदेशी शासन के विरुद्ध सीधी कार्यवाही करने, विधन





परिषदों का बहिष्कार करने तथा असहयोग और सविन्य अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया।

कलकत्ता सम्मेलन में चितरंजन दास ने विधान परिषदों के बहिष्कार का असहयोग प्रस्ताव का विरोध किया था।

**असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव के लेखक गांधीजी थे।**

### असहयोग आन्दोलन ( 1920 – 22 ई.)

दिसम्बर, 1920 ई. में नागपुर में कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन में सितम्बर, 1920 ई. में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में पारित हुये असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव की पुष्टि कर दी। असहयोग का प्रस्ताव भी सी. आर. दास ने रखा, जो पहले असहयोग आन्दोलन के विरोधी थी।

नागपुर अधिवेशन में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि कांग्रेस ने अब 'ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन' का लक्ष्य त्यागकर 'ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर और आवश्यकता हो तो उसके बाहर' स्वराज्य का लक्ष्य घोषित किया।

असहयोग आन्दोलन 1 अगस्त, 1920 ई. में शुरू किया गया। इसी दिन 1 अगस्त 1920 ई. को प्रातः काल तिलक का देहान्त हो गया।

तिलक को लोग 'लोकमान्य' और भारत का बेताज बादशाह' कहते थे।

**तिलक कभी राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं बन सके।**

असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रमों में दो प्रमुख भाग थे। एक रचनात्मक और दूसरा नकारात्मक।

**रचनात्मक कार्यक्रम थे :-**

1. राष्ट्रीय स्कूल व कॉलेजों की स्थापना
2. विवादों के निपटारे के लिए पंचायत की स्थापना
3. हाथ से कताई बुनाई को प्रोत्साहन
4. हिन्दु – मुस्लिम एकता को बनाये रखना
5. छुआछूत का त्याग व अहिंसा का पालन

**नकारात्मक कार्यक्रम थे :-**

1. सरकारी उपाधियों और सम्मानों को लोटाना
2. सरकारी स्कूलों, कॉलेजों, अदालतों, विदेशी वस्त्रों व वस्तुओं का बहिष्कार
3. सरकारी नौकरियों से इस्तीफा व करों की अदायगी न करना।
4. अवैतनिक पदों तथा स्थानीय निकायों के नामांकित पदों से त्याग पत्र

गांधीजी ने वायदा किया कि अगर ये कार्यक्रम सफलतापूर्वक लागू होते हैं तो **एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्त हो जायेगा।**

बंगाल के क्रान्तिकारी आतंकावादियों ने भी असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया।

कांग्रेस का सदस्यता शुल्क घटाकर **चार आना** वार्षिक कर दिया गया ताकि गरीब लोग भी इसके सदस्य बन सकें।

प्रथम माह में करीब 90,000 छात्रों ने संपूर्ण भारत में सरकारी स्कूल व कॉलेज छोड़ दिये। 800 नये राष्ट्रीय स्कूल स्थापित किए गये। जामिया मिलिया, बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ व गुजरात विद्यापीठ की स्थापना इसी समय हुई।

सुभाष चन्द्र बोस कलकत्ता में **नेशनल कॉलेज** के प्रिन्सिपल बनें। अदालतों का बहिष्कार शिक्षा के बहिष्कार जितना सफल नहीं रहा लेकिन कई वरिष्ठ वकील जैसे सी. आर., दास, मोती लाल नेहरू जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, जयकर, सैफुद्दीन किचलू, सी राजगोपालाचारी, टी. प्रकाशम, आसफ अली, राजेन्द्र प्रसाद, विट्ठलभाई पटेल आदि वकालत छोड़कर असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये।

बहिष्कार में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार सर्वाधिक सफल रहा। विदेशी कपड़ों की सार्वजनिक होली जलाई गई। विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दिया गया।

शराब की दुकानों पर भी धरना दिया गया यद्यपि यह मूल योजना का हिस्सा नहीं था।

मदुरै में किसी कार्यकर्ता ने गांधीजी से खादी के महंगी होने की शिकायत की तो गांधीजी ने कम वस्त्र पहनने की सलाह दी तथा खुद भी जीवन भर मात्र लंगोटी में रहे।

असहयोग आन्दोलन के दौरान **गांधीजी ने कैसर – ए – हिन्द, जुलू युद्ध पदक और बोअर पदक वापिस कर दिया।**

17 नवम्बर, 1921 ई. को प्रिन्स ऑफ वेल्स के भारत आगमन के दिन पूरे देश में हड़ताल का आयोजन किया गया।

दिसम्बर, 1921 में कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने की अनुमति दी गई।

1 फरवरी, 1922 ई. का गांधीजी ने वायसराय को पत्र लिखा कि अगर सरकार ने एक सप्ताह में नागरिक स्वतंत्रताओं पर प्रतिबन्ध नहीं हटाया तो वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू कर देंगे। यह आन्दोलन सूरत में बारदोली तालुका से प्रारम्भ होने वाला था।

असहयोग आन्दोलन भी हिंसक होता जा रहा था। 5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर जिले की **चौरी –चौरा** पुलिस चौकी को उग्रभीड़ ने जला दिया जिससे 22 जवानों की मृत्यु हो गई।

गांधीजी चौरी –चौरा काण्ड से आहत हुए तथा उन्होंने आन्दोलन समाप्त करने का निर्णय लिया।

12 फरवरी, 1922 को **बारदोली** में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में असहयोग आन्दोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया गया व आन्दोलन समाप्त हो गया।

गांधीजी ने कांग्रेसजनों से यह आग्रह किया कि वे वे चरखें को लोकप्रियता बनाने, राष्ट्रीय विद्यालय चलाने छुआछूत मिटाने तथा हिन्दु – मुस्लिम एकता को प्रोत्साहित करने जैसे रचनात्मक कार्य करें। इस समय आन्दोलन चरम पर था अतः इसे वापस लेने के लिए निर्णय से देश में भारी निराशा फैली।

मोतीलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, सी. आर. दास राजगोपालाचारी, अली बन्धु जवाहर लाल आदि ने गांधीजी के निर्णय की आलोचना की।

सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि " जिस समय जनता का उत्साह



अपने चरम पर था उस समय पीछे हट जाने का आदेश देना राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं था।

गांधीजी ने अपने निर्णय के बारे में यंग इंडिया में लिखा कि “आन्दोलन को हिंसक होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, हर हर एक यंत्रणा पूर्ण बहिष्कार यहां तक कि मौत भी सहने को तैयार हूँ।”

आन्दोलन की समाप्ति के बाद गांधीजी की स्थिति कमजोर हुई तथा सरकार ने 10 मार्च, 1922 ई. को गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया।

न्यायाधीश **ब्रूम फील्ड** ने गांधीजी को असन्तोष भड़काने के आरोप में 6 वर्ष की सजा दी गई लेकिन सरकार ने 5 फरवरी, 1924 ई. को गांधीजी को खराब स्वास्थ्य के कारण रिहा कर दिया।

गांधीजी ने दिल्ली में मौलाना मुहम्मद अली के घर सितम्बर, 1924 में साम्प्रदायिक दंगों के प्राचश्चित के लिए 21 दिनों का उपवास किया।

असहयोग आन्दोलन के आकस्मिक स्थगन से खिलाफत मुद्दे का भी अन्त हो गया।

तुर्की में मुस्तका कमाल पाशा ने खलीफा का पद समाप्त कर दिया। इससे खिलाफत का मुद्दा अप्रासांगिक हो गया।

1923 – 27 के बीच हिन्दु – मुस्लिमों के बीच व्यापक दंगे हुए। असहयोग आन्दोलन पहला अखिल भारतीय जन आन्दोलन था। पहली बार राष्ट्रीय आन्दोलन गांवों की आम जनता तक पहुँचा। असहयोग आन्दोलन की मुख्य उपलब्धि यह थी कि इससे लोगों के मन से अंग्रेजों का भय निकल गया।

### स्वराज्य पार्टी : 1923

सी. आर. दास व मोतीलाल नेहरू ने मार्च, 1923 ई. में **इलाहाबाद में कांग्रेस खिलाफ स्वराज्य पार्टी** या स्वराज्य पार्टी की स्थापना की।

स्वराज्य पार्टी ने अपने को कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में ही प्रचारित किया तथा अहिंसा व असहयोग में अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की। सी. आर. दास स्वराज्य पार्टी के अध्यक्ष व मोतीलाल नेहरू सचिव थे।

6 नवम्बर, 1924 को गांधीजी सी. आर. दास और नेहरू के मध्य एक समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत यह तय हुआ कि स्वराज्य पार्टी अपना काम कांग्रेस से स्वतन्त्र होकर एक स्वायत्त निकाय के रूप में करेगी तथा स्वराज्य पार्टी का अलग सचिवालय होगा। यह समझौता **गांधी दास समझौता** के नाम से प्रसिद्ध है।

### साइमन कमीशन : 1927 – 28

1919 ई. के भारत शासन अधिनियम में यह प्रावधान था कि अधिनियम पारित होने के दस वर्ष बाद एक संवैधानिक आयोग की नियुक्ति की जायेगी। जो इस बात की जाँच करेगा कि अधिनियम कहाँ तक सफल रहा है तथा भारत उतदायी शासन की दिशा में कहाँ तक जा सकता है।

किन्तु आयोग की नियुक्ति प्रधानमंत्री बाल्डविन के नेतृत्व में ब्रिटिश की तत्कालीन कंजर्वेटिव सरकार ने समय दो वर्ष पूर्व ही

कर दी क्योंकि उन्हें आशंका थी कि 1928 के चुनाव में लेबर पार्टी जीतेगी और वो भारत समर्थक सदस्यों को वैधानिक आयोग नियुक्त कर सकते हैं।

नवम्बर, 1927 में भारत के राज्य सचिव लार्ड बर्किनहेड द्वारा सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्य वाला कमीशन नियुक्त किया गया। इसमें सभी सदस्य अंग्रेज थे अतः कांग्रेस ने इसे ‘**श्वेत कमीशन**’ कहा।

11 दिसम्बर, 1927 ई. को **इलाहाबाद** में हुए सर्वदलीय सम्मेलन में साइमन कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया क्योंकि इसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं था।

3 फरवरी, 1928 ई. को आयोग बम्बई पहुँचा तो उसे काले झण्डे दिखाये गये व **साइमन कमीशन वापस जाओ** के नारे लगाये गये व बम्बई में हड़ताल रखी।

लाहौर में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में आयोग विरोधी भीड़ पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया व लालाजी को क्रूर तरीके से लाठीयों से पीटा जिससे कुछ दिनों बाद लाला जी की मृत्यु हो गई।

### नेहरू रिपोर्ट : 1928 ई.:-

साइमन कमीशन की नियुक्ति के समय भारत **सचिव लार्ड बर्किनहेड** ने भारतीयों के समक्ष एक चुनौती रखी कि वे एक ऐसा संविधान बनाये जो सभी भारतीयों को मान्य हो।

इस चुनौती को स्वीकार कर भारतीय नेताओं ने 28 फरवरी, 1928 को दिल्ली में डॉ. असांरी अध्यक्षता में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें ऐसे संविधान के निर्माण की योजना का प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें पूर्ण उतरदायी सरकार की व्यवस्था की।

11 मई को बम्बई में दूसरे सर्वदलीय सम्मेलन में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक सात सदस्यीय समिति गठित की गई जिसे भारत के संविधान के सिद्धान्तों को निर्धारण करना था। इस समिति गठित की गई जिसे भारत के संविधान के सिद्धान्तों का निर्धारण करना था। इस समिति के अन्य सदस्य थे। **तेज बहादुर सप्रू, सुभाष चन्द्र बोस, एम.एस. अणे, सरदार मंगल सिंह अली इमाम, जी. आर प्रधान और शोएब कुरेशी**। जवाहर लाल नेहरू इसके सचिव थे।

इस समिति में तेज बहादुर सप्रू लिबरल फेडरेशन का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

इस समिति ने 10 अगस्त, 1928 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे नेहरू रिपोर्ट के नाम से जाना जाता है। इसकी प्रमुख सिफारिशें थी।

1. भारत को पूर्ण **औपरिवेशिक राज्य** का दर्जा मिले।
2. सांप्रदायिक निर्वाचन पद्धति को समाप्त कर संयुक्त निर्वाचन प्रणाली लागू की जाये।
3. भाषायी आधार पर प्रान्तों का गठन।

1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में डोमिनियम स्टेट्स और पूर्ण स्वराज के मुद्दे पर विवाद हुआ जिसे गांधीजी ने



हस्तक्षेप कर सुलझा लिया।

गांधीजी ने सरकार को पूरे एक वर्ष का समय दिया और चेतावनी दी की अगर 31 दिसम्बर, 1929 तक नेहरू रिपोर्ट को स्वीकार कर डोमिनियन स्टेट्स का दर्जा नहीं दिया गया तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज से कम किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगी। मार्च, 1929 में जिन्ना ने नेहरू रिपोर्ट के विरोध में चौदह सूत्री मांगें प्रस्तुत की।

### कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन ( 1929 ई. व सविनय अवज्ञा आन्दोलन )

1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में ब्रिटिश सरकार को दी गई एक वर्ष की समय सीमा समाप्त होने पर 31 दिसम्बर, 1929 को लाहौर में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में सम्मेलन आयोजित किया जिसमें नेहरू रिपोर्ट व डोमिनियन स्टेट्स को मांग को रद्द कर दिया और 'पूर्ण स्वराज' का पहली बार लक्ष्य रखा।

31 दिसम्बर, 1929 ई. को अर्धरात्री को रावी नदी के तट पर जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा झण्डा फहराया। नेहरू ने अध्यक्ष के रूप में अपने भाषण में कहा कि "मैं समाजवादी और गणतंत्रवादी हूँ"।

2 जनवरी 1930 ई. को कांग्रेस कार्य समिति ने यह निर्णय लिया कि 26 जनवरी 1930 को पूर्व स्वराज दिवस के रूप में मनाया जायेगा। तथा प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी पूर्ण स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

इसलिए 26 जनवरी, 1930 आधुनिक भारत के इतिहास में प्रथम स्वतन्त्रता दिवस के रूप में माना जाता है।

इसी लाहौर अधिवेशन (1929 ई.) में कांग्रेस कार्यकारिणी को सविनय अवज्ञा शुरू करने का अधिकार दिया गया। गांधीजी ने वायसरा इरविन के सामने 11 सूत्री मांगें रखी जो यंग इंडिया में प्रकाशित की गई।

इन मांगों को पूरा करने के लिए गांधीजी ने 31 जनवरी, 1930 तक का समय दिया। इन 11 सूत्री मांगों को इरविन ने नहीं माना तो गांधीजी ने इरविन को लिखा कि "मैंने रोटी थी मुझे पत्थर मिला, इन्तहार की घड़िया समाप्त हुई।

फरवरी, 1930 में साबरमती आश्रम में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में महात्मा गांधी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने की जिम्मेदारी सौंपी।

12 मार्च, 1930 को गांधीजी ने ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह की शुरुआत की।

गांधीजी साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से अपने 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के समुद्र तट पर स्थित डांडी ( जिला – नौसारी नवसारी ) के लिए 'डांडी यात्रा पर निकल पड़े।

24 दिन में 358 किलोमीटर की यात्रा के बाद 5 अप्रैल, 1930 को डांडी में गांधीजी ने एक मुट्ठी नमक उठाकर सांकेतिक रूप से कानून तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत की। साबरमती आश्रम छोड़ते समय गांधीजी ने प्रण लिया कि जब तक स्वराज नहीं मिल जाता वे आश्रम नहीं लौटेंगे।

सुभाष चन्द्र बोस ने गांधीजी की डांडी यात्रा की नेपोलियन की एल्बा से पेरिस अभियान से तुलना की है।

### आन्दोलन के कार्यक्रम :-

1. नमक कानून का उल्लंघन।

2. शराब व विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना।

3. भू – राजस्व व करों की अदायगी पर रोक।

4. वकील प्रेक्टिस छोड़ सकते।

5. लोगो द्वारा अदालतों, सरकारी स्कूलों, कॉलेजों व सरकारी समारोहों का बहिष्कार।

6. सरकारी कर्मचारी अपना पद त्याग सकते हैं।

7. हर घर में चरखा कातें व सूत बनाये।

8. स्थानीय नेता, गांधीजी को गिरफ्तार के बाद अहिंसा बनाये रखने में सहयोग दे।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमान्त गांधी) के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया।

सीमान्त गांधी के संगठन खदाई खिदमतार या लाल कुर्ती दल ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हें बादशाह खान भी कहा जाता था।

महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्यप्रान्त में वन कानूनों का उल्लंघन किया गया।

13 वर्षीय नागा लड़की गाडियनेल्यू ने भी नागा क्षेत्र में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का नेतृत्व किया।

21 मई, 1930 को धारासणा ( गुजरात ) में सरोजनी नायडु इमाम साहब व गांधीजी के पुत्र मणिलाल के नेतृत्व में 2000 कार्यकर्ताओं की एक भीड़ धारासना के नमक कारखाने की तरफ चली। पुलिस ने इनको निर्मम तरीके से पीटा।

चिटगांव, पेशावर व शोलपुर ये तीनों स्थान गांधीजी के सविनय अवज्ञा के प्रभाव से बाहर थे। लेकिन यहां सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान हिंसक घटनाएँ हुईं।

जून, 1930 में सरकार ने कांग्रेस को गैरकानूनी घोषित कर दिया गांधीजी व जवाहर लाल नेहरू को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी को यरवदा जेल में रखा गया।

### असहयोग आन्दोलन का विस्तार एवं विभन्न वर्गों की भागीदारी:-

महिलाओं व छात्रों ने विदेशी वस्त्रों की दुकानों व शराब की दुकानों पर धरने दिये व प्रदर्शन में हिस्सा लिया। महिलाओं की व्यापक हिस्सेदारी थी।

मुसलमानों की भागीदारी काफी कम रही तथा वे असहयोग आन्दोलन की तरफ सक्रिय नहीं हुये। इसके दो मुख्य कारण थे :- प्रथम मुस्लिम नेताओं द्वारा मुस्लिमों को आन्दोलन से पृथक रहने की सलाह तथा दूसरा ब्रिटिश सरकार की साम्प्रदायिकता की नीति। केवल उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रान्त में मुसलमानों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

किसानों व व्यावसायिक वर्ग की व्यापक भागीदारी रही।

बुद्धिजीवी वर्ग के सहयोग में थोड़ी गिरावट आई।

### प्रथम गोलमेज सम्मेलन :-

12 नवम्बर, 1930 से 13 जनवरी, 1931 तक लन्दन से सेंट जेम्स पैलेस में प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया इसमें पहली बार ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीयों को बराबर का दर्जा दिया गया।

कांग्रेस ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग नहीं लिया।

इस सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम ने किया व अध्यक्षता प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने की। इस समय लार्ड इरविन भारत के वायसराय थे।

प्रथम गोलमेज सम्मेलन में दो राजपुत शासकों बीकाने के महाराजा गंगासिंह और अलवर के शासक उदयसिंह ने भी भाग



लिया।

### गांधी इरविन समझौता (1931ई):-

तेज बहादुर सप्रू व जयकर के प्रयासों से गांधी और इरविन के बीच 5 मार्च, 1931 को दिल्ली में समझौता हुआ। इसलिए गांधीजी इरविन समझौते को दिल्ली समझौता भी कहा जाता है। इससे पहले 25 जनवरी, 1931 को सरकार ने गांधी को बिना शर्त रिहा कर दिया।

गांधी इरविन समझौते की प्रमुख शर्तें थी :-

1. कांग्रेस सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित करने को तैयार हो गई
2. जिन राजनीति कैदियों के विरुद्ध हिंसा का आरोप नहीं था उनको रिहा करने के आदेश दिये गये।
3. विदेशी वस्त्रों व शराब की दुकानों पर शान्तिपूर्ण धरना देने का अधिकार।
4. समुद्र तटीय प्रदेशों में बिना नमक कर दिये नमक बनाने की अनुमति।

गांधी - इरविन समझौते में भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु की रिहाई के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दी गई। इस बारे में गांधीजी की भूमिका की हमेशा आलोचना होती रही है।

गांधीजी - इरविन समझौतों का 26 - 29 में कांग्रेस के कराँची अधिवेशन में अनुमोदन किया गया। इसकी अध्यक्षता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने की। कराँची अधिवेशन में 'मौलिक अधिकारों और राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम' के बारे में प्रस्ताव पारित किए गये।

कांग्रेस का कराँची प्रस्ताव कांग्रेस की मूलभूत राजनीतिक व आर्थिक नीतियों का दस्तावेज था, जो बाद के वर्षों में भी निरन्तर बरकरार रहा।

कराँची अधिवेशन ( 1931 ई.) में गांधीजी ने कहा कि " गांधी मर सकते हैं लेकिन गांधीवाद सदा जीवित रहेगा।

### द्वितीय गोल मेज सम्मेलन ( 7 सितम्बर, 1931 - 1 दिसम्बर, 1931 ई.)

गांधीजी राजपूताना नामक जहाज से लन्दन के लिए रवाना हुए। साथ में गांधीजी के सचिव महादेव देसाई भी थे। इसमें कुल 111 सदस्यों ने भाग लिया।

लन्दन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में गांधीजी ने हिस्सा लिया। यह सम्मेलन भी सेंट जेम्स पैलेस में हुआ।

चर्चिल ने गांधीजी को 'देशद्रोही फकीर' कहा व ब्रिटिश सरकार की गांधी को अपने बराबर का दर्जा देने की आलोचना की। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के समय वेलिंगटन भारत के वायसराय, सैमुअल होर भारत सचिव तथा रैम्जे मैकडोनाल्ड ब्रिटेन के प्रधानमंत्री थे।

इस सम्मेलन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के लिए पृथक् निर्वाचक मण्डल की मांग की। गांधीजी ने इस मांग को ठुकरा दिया।

अन्ततः यह सम्मेलन सांप्रदायिका समस्या गत गतिरोध के कारण 1 दिसम्बर, 1931 को समाप्त कर दिया गया।

### द्वितीय सविनय आन्दोलन ( 1931 - 34 ई.) :-

1 जनवरी, 1932 ई. को कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को फिर से शुरू करने का निर्णय लिया। सरकार ने फिर से कांग्रेस को गैर कानूनी संस्था घोषित कर दिया।

सरकार ने आपातकालीन शक्तियों का प्रयोग कर कई अध्यादेश निकाले। इसे अध्यादेश शासकन कहते हैं।

### साम्प्रदायिक पंचाट और पूना समझौता - 1932 ई.:-

ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 को कम्युनल अवार्ड (साम्प्रदायिक पंचाट) जारी किया।

इस पंचाट में पृथक् निर्वाचन पद्धति को दलितों पर भी लागू कर दिया गया। पहले केवल मुस्लिमों पर ही लागू था।

केवल प्रान्तीय विधान मण्डलों में मुसलमानों, सिखों, ईसाईयों एंग्लों - इंडियनों तथा महिलाओं के लिए पृथक् निर्वाचन की सुविधा प्रदान की गई। उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रान्त को छोड़कर सभी प्रान्तों में महिलाओं के लिए पृथक् निर्वाचन मण्डल बनाये गये।

गांधीजी ने दलित वर्ग को पृथक् निर्वाचन मण्डल दिये जाने के विरोध में यरवदा जेल (पुणे) में 20 सितम्बर, 1932 को आमरण अनशन शुरू कर दिया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मदन मोहन मालवीय, पुरुषोत्तम दास, सी. राजगोपालाचारी आदि के प्रयासों से 26 सितम्बर, 1932 को गांधीजी ने व दलित नेता अम्बेडकर के बीच 'पूना समझौता' हुआ। गांधीजी ने उपवास समाप्त कर दिया।

पूना पैक्ट के अनुसार दलितों के लिए पृथक् निर्वाचन व्यवस्था समाप्त कर दी गई तथा विभिन्न प्रान्तीय विधान मण्डलों में दलित वर्ग के लिए 148 सीटें आरक्षित की गई (साम्प्रदायिक पंचाट में 71 सीटें थी) केन्द्रीय विधान मण्डल में 18 प्रतिशत सीटें दलित वर्ग के लिए आरक्षित की गई।

सितम्बर, 1932 में गांधीजी ने हरिजन सेवक संघ (अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोध लीग) की स्थापना की।

17 नवम्बर, 1932 से 24 दिसम्बर, 1932 तक लन्दन में तीसरा गोलमेज सम्मेलन हुआ जिसमें कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। इसमें कुल 46 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इसकी अध्यक्षता भी रैम्जे मैकडोनाल्ड ने की। इस प्रकार तीनों गोलमेज सम्मेलनों की अध्यक्षता रैम्जे मैकडोनाल्ड ने की।

भीमराव अम्बेडकर ने दलित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया।

### दर्शन-

सांख्य - कपिल

योग - पंतजलि

न्याय - गौतम

वैशेषिक - कणद, उलूक

मीमांसा - (पूर्व मीमांसा)



उत्तर मीमांसा(वेदान्त) — वादरायण

शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किये:-

शंकराचार्य के चार मठों के स्थान	उनके नाम
उत्तर में बद्रीनाथ(उत्तरांचल)	ज्योतिषीठ
दक्षिण में मैसूर(कर्नाटक)	शृंगेरीपीठ
पूर्व में पुरी(उड़ीसा)	गोवर्धन पीठ
पश्चिम में द्वारका(गुजरात)	शारदा पीठ

—शंकराचार्य की चार पीठों के अलावा काँच(तमिलनाडु) की कामकोटीपीठ पाँचवी पीठ के रूप में जानी जाती है।

—शंकराचार्य का मात्र 32 वर्ष में 820 ई. निधन हो गया।

— रामानुज ने शंकर के मायावाद का खण्डन कर विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन किया।

— मध्व(मध्वाचार्य, 13 वीं सदी) ने शंकर के अद्वैत की आलोचना की व द्वैतवाद का सिद्धांत दिया जिसके अनुसार जीव व ब्रह्म दो अलग-अलग वास्तविक सत्ताएं हैं।

— भारतीय **भौतिकवादी** दर्शन को चार्वाक या लोकायत दर्शन कहते हैं। इसके प्रणेता आचार्य बृहस्पति को माना जाता है। इनका प्रमुख सिद्धान्त है। खाओ, पीओ और मौज करो(eat, drink and be merry)

भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार—

### मध्य एशिया

—चीन, भारत एवं ईरान के मध्य स्थित प्रदेश को मध्य एशिया अथवा चीनी तुर्किस्तान कहा जाता है। इसके अन्तर्गत काश्गर, यारकन्द, खोतान, शानशान, तुर्फान, कूचा, करशहर(अग्निदेश) आदि राज्य शामिल थे।

—बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय लिपि तथा भाषा का मध्य एशिया में प्रवेश हुआ।

—बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक के पुत्र कुणाल ने खेतान में हिन्दू राज्य की स्थापना की। कुणाल का पौत्र विजितसम्भव था। इसके पश्चात् खोतान के सभी राजाओं के नामों का प्रारम्भ से ही मिलता है।

—फाहियान ने खोतान का वर्णन किया है। गोमती विहार खोतान में महायान बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

— कूची भी बौद्ध सभ्यता का केन्द्र था। यहां के राजा स्वर्ण पुष्प, हरिपुष्प, हरदेव, सुवर्ण देव आदि हुए।

— भारतीय विहान कुमारसन अपनी प्रतिभा के बल पर कूची के राजा का गुश्र बन गया। जिसने जीवा नामक कन्या से विवाह किया। इन दोनों से कुमारजीव उत्पन्न हुआ।

—अफगानिस्तान में बामियान व बैग्राम में बुद्ध की अनेक मूर्तियां व विहार मिले हैं। बामियान में बुद्ध की एक विशाल मूर्ति थी जो ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों की है। दुर्भाग्यवश हाल ही में अफगानिस्तान के तालिबान शासकों ने इसे तोड़कर नष्ट कर दिया।

### तिब्बत

7वीं शताब्दी में तिब्बत में सन गेम्पो नामक शक्तिशाली राजा हुआ। जिसने मध्य एशिया पर आक्रमण कर अधिकार स्थापित किया। 11 वीं शताब्दी में दीपेंद्र श्रीज्ञान नामक बौद्ध विद्वान तिब्बत गये। दीपेंकर को अतिशय भी कहा जाता है। दीपक ने तिब्बत में बौद्ध धर्म को लोकप्रिय बना। पद्यसंभव एवं वैरोचन नामक भिक्षुओं ने भी बौद्ध धर्म का तिब्बत में प्रचार किया।

### चीन

चीनी स्त्रोतों के अनुसार 6वें ईस्वी में हान वंश के राजा मिगंती ने सपने में एक स्वर्णिम पुरुष के दर्शन किये। जिसकी पहचान महात्मा महात्मा बुद्ध से की गई विन्ती के राजदूत धर्मरतन एवं कश्यपमातंक नामक दो बौद्ध भिक्षुओं को भारत से चीन ले गये। चीनी सम्राट ने उनके रहने के लिए राजधानी में श्वेतअश्व विहार घर का निर्माण कराया। यह चीन का प्राचीनतम बौद्ध विहार है

दक्षिणी पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार—

दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अंतर्गत कंबोडिया, चंपा, बर्मा, श्याम, मालदीप, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, बाली आदि आते हैं। जिन्हें सामूहिक रूप से हिंद चीन कहा जाता है। प्राचीन भारत वासी इन सुवर्णभूमि एवं स्वर्णद्वीप के नाम से जानते थे।

### कंबोडिया

कंबोडिया में ईसा के प्रथम शताब्दी में कौण्डिय नाम ब्राह्मण ने राज्य स्थापित किया। चीनी साहित्य में कंबोडिया को फूनान कहा जाता है। 6वीं शताब्दी के बाद कंबोडिया पर शैलेंद्र राजाओं का अधिकार हो गया।

जावा (इंडोनेशिया) के बोरोबुदुर में सबसे विशाल बौद्ध मंदिर है। यह आठवीं शताब्दी में जावा के शैलेंद्र शासकों ने बनवाया। बंगाल का एक बौद्ध कुमारघोष शैलेंद्र का गुरु था, जिसके आदेश पर शैलेंद्र राजा द्वारा तार का मुहर मंदिर (श्री विजय, सुमात्रा) और जावा का बोरोबुदुर मंदिर बनवाया गया। कंबोडिया में अंकोरवाट का विष्णु मंदिर प्रसिद्ध है।

ब्रिटिश शासक में शिक्षा का विकास —

ईस्ट इंडिया कंपनी ने शासन के प्रारंभिक दिनों में भारत में शिक्षा के विकास के लिए कोई प्रयत्न नहीं किए।





1781 ईस्वी में गवर्नर जनरल 'वारेन हेस्टिंग्स' ने **कलकता मदरसा** की स्थापना की। वह अरबी, फारसी, बांग्ला भाषाओं का जानकार था।

**चार्ल्स विल्किन्स** ने गीता का **प्रथम अंग्रेजी अनुवाद** किया जिसकी प्रस्तावना वारेन **हेस्टिंग्स** ने लिखी।

1784 ईस्वी में सर विलियम जॉन्स ने **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की। इसने प्राचीन भारत के इतिहास व संस्कृति की खोज व अध्ययन का कार्य किया। इसे बाद में '**रॉयल सोसाइटी ऑफ बंगाल**' का नाम दिया गया।

1791 ईस्वी में **जोनाथन डंकन** ने बनारस (वाराणसी) में 'संस्कृत कॉलेज' की स्थापना की।

1800 ईस्वी में लॉर्ड वैलेजली मी कंपनी के असैनिक अधिकारियों की शिक्षा के लिए **फोर्ट विलियम कॉलेज**, कोलकाता की स्थापना की।

डेविड हेयर ने 1820 ईस्वी में कोलकाता में बिशप कॉलेज की स्थापना की।

राजा राममोहन राय, डेविड हेयर आदि ने 1817 में कोलकाता में हिंदू कॉलेज की स्थापना की जो बाद में प्रेसिडेंसी कॉलेज बना।

ईसाई मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य भारत में ईसाई धर्म का प्रसार करना था। ईसाई मिशनरियों ने भारत में धर्म प्रचार के लिए **सेरामपुर (श्रीरामपुर)** (कोलकाता) को केंद्र बनाया।

बंगाल के डॉ. करे, **मार्शमैन** और **वार्ड** सेरामपुर की डच बस्ती में रहने लग गए। यह तीनों मिलकर सेरामपुरत्रयी कहलाए। इन तीनों के प्रयास के कारण 1799 में सेरामपुर मिसनरी का निर्माण हुआ।

आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता **चार्ल्स ग्रान्ट** को माना जाता है।

**1813 ईस्वी में चार्टर एक्ट** में भारत में शिक्षा के प्रचार के लिए सालाना एक लाख रुपए की राशि का प्रावधान रखा गया। अतः ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में शिक्षा के प्रसार का वास्तविक कार्य 1813 ईस्वी के बाद किया गया।

1833 के एक्ट में शिक्षा प्रसार हेतु इस काम को एक लाख से बढ़ाकर सालाना दस लाख कर दिया गया।

शिक्षा के माध्यम को लेकर 1823 में गठित 'लोक शिक्षा की सामान्य समिति' (**general committee of public instruction**) के सदस्यों में विवाद था। एक दल प्राच्य शिक्षा (**Oriental Education**) का समर्थन था, दूसरा दल आंग्ल शिक्षा का समर्थक था।

प्राच्य शिक्षा समर्थक दल के नेता **प्रिसेप** और **एच.एच. विल्सन** थे। ये भारत में संस्कृत में अरबी के अध्ययन को प्रोत्साहन देना चाहते थे तथा भारत में पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान का प्रसार इन्हीं भाषाओं से कराना चाहते थे।

एच.डी. प्रिसेप बंगाल की लोक शिक्षा समिति के सचिव थे और विल्सन इस समिति के मंत्री थे।

मद्रास के गवर्नर **टामस मुनरो** और मुंबई के गवर्नर **एलफिंस्टन** के नेतृत्व में एक अन्य गुट पाश्चात्य शिक्षा को स्थाई भाषा में देने की वकालत कर रहा था यह गुट बम्बई में सक्रिय था।

आंग्लवादी गुट अंग्रेजी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाना चाहता था।

आंग्ल-प्राच्य विवाद को निपटाने के लिए तत्कालीन गवर्नर जनरल विलियम बैंटिंग ने कौंसिल विधि सदस्य लॉर्ड मैकाले को बंगाल की लोक शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया तथा भाषा के विवाद पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा।

1841 में लोक शिक्षा समिति को समाप्त कर कौंसिल ऑफ एजुकेशन का गठन किया गया।

मैकाले ने 1835 में अपना स्मरण पत्र (**Macaulay Minute**) प्रस्तुत किया।

मैकाले के अनुसार एक अच्छे यूरोपियन पुस्तकालय की अलमारी भारत तथा अरब के समस्त साहित्य के बराबर है।

मैकाले अंग्रेजी शिक्षा द्वारा एक ऐसा वर्ग बनाना चाहते थे जो रंग तथा रक्त से भारतीय हो पद परन्तु प्रवृत्ति, विचार, नैतिकता तथा बुद्धि से अंग्रेज हो

बैटिक ने **Macaulay minute** को 7 मार्च 1835 ईस्वी को स्वीकार कर लिया, जिसके अनुसार अंग्रेजी भाषा को प्रशासन व उच्च शिक्षा का आधार माना गया 1835 से राजभाषा के रूप में फारसी का स्थान अंग्रेजी ने ले लिया।

1835 ईस्वी में बैंटिंग ने कोलकाता कॉलेज की नींव डाली।

शिक्षा के अधोमुखी निस्संदन का सिद्धांत (**Infiltration theory**) **लॉर्ड ऑकलैंड** ने दिया।

इस सिद्धांत के अनुसार अगर उच्च वर्ग को सबसे पहले शिक्षित किया जाए तो ईश्वर के शिक्षित होने पर छन-छन करे शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुंचेगा।

ऑकलैंड से पहले मैकाले ने भी **infiltration** सिद्धांत पर कार्य किया।

उत्तरी पश्चिमी प्रांत (आधुनिक उत्तर प्रदेश) लेफ्टिनेंट गवर्नर जेम्स टॉमसन ने (1843-53 ई.) देशी भाषा द्वारा ग्राम शिक्षा की योजना बनाई। इसके अंतर्गत छोटे-छोटे अंग्रेजी स्कूलों को बन्द कर दिया गया, अंग्रेजी शिक्षा केवल कॉलेजों तक सीमित कर दी गई तथा गाँवों में गणित में कृषि विज्ञान जैसे स्थानीय भाषा में पढ़ाई जाने का प्रावधान किया गया।

1847 में टॉमसन **नेरुङ्की में इंजीनियर कॉलेज** की स्थापना की।

गवर्नर जनरल की परिषद के सदस्य जे.ई.डी. बेथून ने 1849 में भारतीय बालिकाओं के लिए कोलकाता में स्कूल खोला। बेथून के मृत्यु के बाद लॉर्ड डलहौजी ने इसे बेथून महाविद्यालय बना दिया।



1853 ई में लॉर्ड डलहौजी नहीं है नियम बनाया कि सभी लोग सेवाये एक शिक्षा परिषद(Council of education) द्वारा आयोजित कराई गई खुली प्रतियोगिता के आधार पर भरी जाये अंग्रेजी ज्ञान को वरीयता दी जाए। इस प्रकार नागरिक सेवा के द्वार भारतीयों के लिए भी खोल दिया गया।

#### 1854 ईसवी का शिक्षा का चार्ल्स वुड का डिस्पैच:

सर चार्ल्स वुड(जो उस समय अर्ल ऑफ एबरडीन की मिली-जुली सरकार में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष थे) की अध्यक्षता में भारत की भावी शिक्षा की एक व्यापक योजना बनाई, भारतीय स्तर पर शिक्षा की नियामक पद्धति का गठन किया गया।

वुड डिस्पैच को **भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा** कहा जाता है। इसकी प्रमुख सिफारिशें थी:-

- सरकार पाश्चात्य शिक्षा, कला, दर्शन, विज्ञान, व साहित्य का प्रसार करें।
- उच्च शिक्षा के लिए मध्य अंग्रेजी हो किंतु देशी भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया जाए।
- गाँवों में देशी भाषा में प्राथमिक पाठशाला स्थापित की जाए तथा उनके ऊपर जिला स्तर पर एंग्लो वर्नेकुलर हाई स्कूल कॉलेज खोले जायें।
- शिक्षा में निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहित करने के लिए अनुदान दिया जायें।
- कंपनी के पाँचों प्रांतों (बंगाल, मुंबई, मद्रास, उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत तथा पंजाब) में एक-एक निदेशक के अधीन लोक शिक्षा विभाग स्थापित किया जाए। (1855 में लोक शिक्षा विभाग स्थापित हुआ)
- लंदन विश्वविद्यालय के आधार पर कोलकाता, मुंबई, मद्रास तीन विश्वविद्यालय की स्थापित किए जाए। (1857 ई. में ये विश्वविद्यालय खोले गए। जिनमें पहला विश्वविद्यालय कोलकाता में स्थापित हुआ।)
- व्यावसायिक तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जायें।
- अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जायें।
- महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया जायें।

#### हंटर शिक्षा आयोग (1882-1883):-

1882 ईसवी में रिपन के काल में डब्लू डब्लू हंटर की अध्यक्षता में एक आयोग शिक्षा के क्षेत्र में

1854 ईसवी के बाद कोई प्रगति की समीक्षा करने के लिए नियुक्त किया गया। आयोग में 20 सदस्य थे 8 भारतीय थे। इसका कार्य केवल प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा की समीक्षा करना था।

इसने सभी प्रांतों का भ्रमण किया और 200 प्रस्ताव पारित किये। **इसके प्रमुख सुझाव थे:-**

1. प्राथमिक शिक्षा पर विशेष ध्यान तथा स्थानीय भाषा व उपयोगी विषय में हो। प्राथमिक स्कूलों का नियंत्रण जिला और नगर बोर्ड को दिया जाए।

2. माध्यमिक शिक्षा के दो खंड हो। एक में साहित्य शिक्षा हो जो विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा के लिए विद्यार्थी तैयार करें। दूसरे में व्यवसायिक व व्यापारिक जीवन की शिक्षा दी जाए।

3. शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयत्नों को बढ़ावा तथा सरकार को माध्यमिक अरे कॉलेज शिक्षा से हट जाना चाहिए।

4. आयोग ने प्रेसिडेंसी नगरों के अलावा अन्य स्थानों पर महिला शिक्षा के पर्याप्त प्रबंध नहीं होने पर खेद प्रकट किया और बढ़ावा देने को कहा।

इस आयोग के सुझावों पर प्रांतीय सरकारों ने कार्य किया और अगले 20 वर्षों में माध्यमिक कॉलेज शिक्षा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ।

हंटर आयोग के सुझाव पर 1882 ई. में और पंजाब 1887 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्थापित किए गए।

#### रेल कमीशन 1902:-

सितंबर, 1901 में कर्जन ने शिमला में समस्त भारत के विश्वविद्यालय अधिकारियों का 1 सम्मेलन बुलाया। इसमें पारित प्रस्ताव **शिमला प्रस्ताव** के नाम से प्रसिद्ध है।

कर्जन ने मैकाले की शिक्षा की नीति का आलोचना की क्योंकि मैकाले की नीति देशी भाषाओं के विरुद्ध थी।

1902 ई. में सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में आयोग की स्थापना की गई कमीशन के दो अन्य भारतीय सदस्य थे:-

**सैयद हुसैन बिलग्रामी**(हैदराबाद के निजाम का लोक शिक्षा विभाकर निदेशक) एवं **गुरुदास बनर्जी**(कोलकाता हाई कोर्ट के जज)।

इसको केवल विश्वविद्यालय शिक्षा पर सुझाव देना था।

—रैले कमीशन के सुझावों के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया इसके प्रमुख प्रावधान हैं:

- विश्वविद्यालय के अध्ययन व शोध के लिए प्रोफेसर व लेक्चरर की नियुक्ति करनी चाहिए।
- विश्वविद्यालयों के उप सदस्यों की संख्या 50 से कम तथा 100 से अधिक नहीं होनी चाहिए। उप सदस्यों का कार्यकाल आजीवन ने होकर 6 वर्ष होना चाहिए। उप सदस्य मुख्य रूप से सरकार द्वारा मनोनीत होनी चाहिए। चुने हुए उप सदस्यों में कलकता, मुंबई और मद्रास विश्व विद्यालयों से अधिक से अधिक 20 और अन्य विश्वविद्यालयों से एक से अधिक 15 सदस्य चुने सकते थे है।
- विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया गया और सरकार को सेनेट द्वारा पारित प्रस्तावों पर विशेषाधिकार दिया गया।



4. अशासकीय कॉलेजों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया गया।

5. गवर्नर जनरल को विश्वविद्यालयों की क्षेत्रीय सीमाएं निश्चित करने का अधिकार दिया गया।

—कर्जन द्वारा शिक्षा में परिवर्तन का उद्देश्य है राजनीतिक अधिक तथा शैक्षणिक कम था।

सैडलर आयोग (1917ई.) के अनुसार 1904ई. के अधिनियम द्वारा भारतीय विश्वविद्यालय संसार में सबसे अधिक पूर्णतया सरकारी विश्वविद्यालय बन गए थे।

भारत में शिक्षा महानिदेशक की नियुक्ति कर्जन के समय ही की गई। इसको ग्रहण करने वाला प्रथम अधिकारी **डब्ल्यू.एच. ऑरेंज** था।

कर्जन के समय 1904ई. में प्राचीन स्मारक, अभिलेख संरक्षण अधिनियम पारित किया गया।

1910ई. में भारत सरकार ने शिक्षा विभाग की स्थापना की। शिक्षा विभाग का एक सदस्य गवर्नर जनरल की परिषद में प्रतिनिधित्व करता था। **सर हारकोर्ट बटलर** परिषद में पहला सदस्य था।

1910 ई में गोपाल कृष्ण गोखले ने इंपीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में शिक्षा के बारे में अपना प्रस्ताव रखते हुए 6 से 10 वर्ष की आयु वाले बच्चों के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा शुरू करने की मांग की।

### शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव 1913:—

30 फरवरी 1913 ई. को शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव पारित किया गया। लेकिन इसमें अनिवार्य शिक्षा के सिद्धांत पर बने स्वीकार नहीं किया गया। यद्यपि निरक्षरता को समाप्त करने पर जोर दिया गया।

इसमें शिक्षा के चित्र में स्तनों को बढ़ा बल दिया गया।

प्रत्येक प्रांत में विश्वविद्यालय की स्थापना पर जोर दिया गया।

### सैडलर आयोग 1917:—

सरकार ने 1917 ई. में कोलकाता विश्वविद्यालय की समस्याओं के अध्ययन हेतु लीड्स विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एम ई सैडलर की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया।

सैडलर आयोग के सदस्यों में दो भारतीय **सर आशुतोष मुखर्जी** और **डॉ जियाउद्दीन अहमद** भी थे।

इस आयोग का विचार था कि अगर विश्व विद्यालय की शिक्षा में सुधार करना है तो माध्यमिक शिक्षा का सुधार आवश्यक है।

सैडलर आयोग ने 1904ई. के अधिनियम की कड़ी आलोचना की तथा निम्न सिफारिशें की।

1. 12 वर्ष की स्कूल शिक्षा व इंटरमीडिएट परीक्षा के बाद विद्यालय में प्रवेश।

2. विश्वविद्यालय में पृथक इंटरमीडिएट कॉलेज हो तथा उनकी परीक्षाओं के संचालन के लिए बोर्ड का गठन। ( इस सुझाव के तहत उत्तर प्रदेश में एक बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन की स्थापना हुई।)

3. स्नातक पाठ्यक्रम 3 वर्ष का हो।

4. महिला शिक्षा के प्रसार पर विशेष जोर।

5. अध्यापक प्रशिक्षण की सुविधा पर जोर दिया गया।

सैडलर आयोग ने विश्वविद्यालयों के लिए कुलपति नियुक्त करने सुझाव दिया।

1916 स 1921 ई. किसी के बीच मैसूर (1916), बनारस (1916), पटना (1917), ढाका, अलीगढ़ (1918) लखनऊ, (1921) और उस्मानिया (हैदराबाद) विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

1919 ई. के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार के द्वारा शिक्षा प्रांतीय विषय बन गया तथा शिक्षा को निरहुआ के मंत्री के नियंत्रण में कर दिया गया। शिक्षा के लिए केंद्रीय अनुदान बंद कर दिया गया।

### हार्टोग समिति (1929 ई.):—

शिक्षा के स्तर में आ रही गिरावट को रोकने के लिए सरकार ने 1929 में सर फिलिप हार्टोग की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की जिस की सिफारिशें निम्नलिखित हैं :

1. प्राथमिक शिक्षा पर बल किंतु इसे अनिवार्य करने की निंदा।

2. ग्रामीण छात्रों के मिडिल स्कूल तक की शिक्षा देने के बाद कॉलेज में प्रवेश के स्थान पर उन्हें व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा दी जाये।

3. विश्व विद्यालय की शिक्षा उन्हें उन्हें दी जाए जो इस के योग्य हो।

हार्टोग समिति की सिफारिशों के आधार पर 1935 में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड **'केब'** का पुनर्गठन हुआ। केब का पहली बार गठन 1920 ई में हुआ था किंतु लॉर्ड इन्चकेप की अध्यक्षता में गठित भारतीय छटनी समिति (Indian Retrenchment Committee) की सिफारिशों के आधार पर इसे 1923 में भंग कर दिया गया।

केब ने निरक्षरता विरोधी अभियान के तहत 1939 में डॉक्टर सैयद महमूद की अध्यक्षता में एक प्रौढ़ शिक्षा समिति नियुक्त की।

### मूल शिक्षा की वर्धा योजना:

1937 में गांधी जी ने अपने पत्र हरिजन में शिक्षा पर लेख प्रकाशित किए और अक्टूबर 1937 में वर्धा में 'अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन' उन्होंने बुनियादी शिक्षा की वर्धा योजना प्रस्तुत की। जाकिर हुसैन समिति ने 2 दिसंबर 1937 को वर्धा योजना का ब्यौरा प्रस्तुत किया।



वर्धा योजना का मूलभूत सिद्धांत यह था कि बच्चों को 7 साल तक मातृभाषा में निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा दी जाए तथा उन्हें हस्त उत्पादक कार्य करने चाहिए व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के कारण वर्धा योजना लागू नहीं हो सकी।

### सार्जेंट योजना 1944:

1944 ई में भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार जान सार्जेंट ने राष्ट्रीय शिक्षण योजना तैयार की। इसकी सिफारिशें हैं:

1. देश में प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय किए जाएंगे।
2. 6 से 11 वर्ष तक के बच्चों के लिए निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा।
3. 11 17 वर्ष तक अतिरिक्त शिक्षा व्यवस्था।
4. ऐकेडमिक तथा व्यावसायिक आवश्यक शिक्षा के लिए दो प्रकार के विद्यालय हो।

सार्जेंट योजना के अंतर्गत 40 वर्ष के भीतर देश में शिक्षा का पुनः निर्माण किया जाना था बात में एक खेर समिति ने इस अवधि को घटाकर 16 वर्ष कर दिया।

### राधा कृष्ण आयोग 1948-49:-

आजादी के बाद सरकार ने नवंबर, 1948 में डॉ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया इसे विश्वविद्यालय शिक्षा पर रिपोर्ट देनी थी।

इस आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिए।

1. विश्वविद्यालय पूर्व 12 वर्ष का अध्ययन।
2. प्रत्येक ऐकेडमिक सत्र में 180 दिन की पढ़ाई अनिवार्य है।
3. शिक्षा समवर्ती सूची का विषय हो।
4. प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा के लिए स्नातक की उपाधि जरूरी नहीं।

राधा कृष्ण आयोग की सिफारिश के आधार पर 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन किया गया तथा संसद के अधिनियम द्वारा इसे स्वायत्त बनाया गया।

1964 ई. में डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग ने किया गया।

1986 में नई शिक्षा नीति लागू की गई।

आधुनिक भारत में शिक्षा के विकास के लिए किए गए शिक्षा आयोग व समितियां:-

आयोग समिति का नामगठन का वर्षगवर्नर जनरल

मैकाले स्मरण पत्र	1835 ई.	
लॉर्ड विलियम बैंटिक		
जम्स टॉमसन प्लान	1843 ई.	
लॉर्ड एलनबरो		
वुड डिस्पैच	1854 ई.	
लॉर्ड डलहौजी		
हंटर आयोग	1882 ई.	
लॉर्ड रिपन		
रैले आयोग	1902 ई.	
लॉर्ड कर्जन		
सैडलर आयोग	1917 ई.	
लॉर्ड चेम्सफोर्ड		
हार्टोग समिति	1929 ई.	लार्ड
इरविन		
वर्धा योजना	1937 ई.	
लॉर्ड लिनलिथगो		
सार्जेंट योजना	1944 ई.	लॉर्ड
वेवेल		
राधाकृष्ण आयोग	1948 ई.	
सी. राजगोपालाचारी		

### 1857 का विद्रोह:-

1857 ई. तक भारत में ब्रिटिश शासन के 100 वर्ष पूरे हो गए। इस दौरान ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अनेक सैनिक व असैनिक विद्रोह हुए।

अधिकांश विद्रोह ब्रिटिश शासन के असंतोष के कारण हुए। अपदस्थ शासकों व सामंतों ने सैनिक विद्रोह किए, जबकि किसानों ने भूराजस्व नीति के कारण विद्रोह किए।

### 1857 ई से पूर्व होने वाले सैनिक विद्रोह है:

1. वेल्लोर विद्रोह है 1806 ई: यह विद्रोह भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों द्वारा उनके सामाजिक आर्थिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप के कारण किया।
2. बैरकपुर में 1824 में विद्रोह है: 47 वी रेजीमेंट ने समुद्र पास बर्मा में सेवा देने से मना कर दिया।
3. फिरोजपुर में 1842 ई में 34 वी रेजीमेंट का विद्रोह है।





4 1849 ई. में सातवीं बंगाल केवेलरी, 64 वीं रेजीमेंट और 22 रेजीमेंट का विद्रोह।

5. 1850 ई. में 66 वीं NI, 1852 38 वीं NI का विद्रोह।

### विद्रोह के कारण:

अधिकांश इतिहासकारों ने चर्बी युक्त कारतूस को का सबसे प्रमुख कारण माना है, किंतु आधुनिक इतिहास के अनुसंधान यह सिद्ध होता है कि चर्बी युक्त कारतूस विद्रोह का एक मात्र कारण नहीं था।

1857 ई. का विद्रोह पिछले 100 वर्षों के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, व आर्थिक कारणों से हुआ।

विद्रोह के समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग थे।

### 1. राजनीति कारण:-

1. वल्लेजली की सहायक संधि।

2. डलहौजी की व्यपगत नीति।

व्यपगतनीति के तहत भारतीय राज्यों का वर्गीकरण किया गया।

व्यपगतनीति के तहत हड़पी गई रियासतें:-

सतारा (1848 ई.) जैतपुर और संभलपुर (1849 ई.)

बघाट (1850 ई.) उदयपुर (1852)

झांसी (1853 ई.) नागपुर (1854 ई.)

डलहौजी द्वारा राजस्थान की करौली रियासत को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाए जाने के निर्णय को कोर्ट ऑफ डायरेक्टर में यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि करौली संरक्षित मित्र था, न की आश्रित राज्य।

इसी प्रकार उदयपुर और बघाट के विलय के संबंध में लिए गए डलहौजी के निर्णय को लॉर्ड कैनिंग ने उलट दिया।

3. डलहौजी ने अवध को कुशासन का आरोप लगाकर हड़प लिया।

4. पेशवा बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद उसके पुत्र नाना साहेब की पेंशन को डलहौजी ने बंद कर दी। क्योंकि यह पेंशन निजी रूप से बाजीराव को दी गई थी न की पेशवा को।

5. डलहौजी ने कर्नाटक व तंजौर के नवाबों की राजकीय उपाधियाँ जब्त कर ली।

6. लॉर्ड डलहौजी ने 1849 ई. में घोषणा की कि मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी शहजादे को मुगल महल (लाल किला) छोड़ना पड़ेगा तथा उसे कुतुबमीनार के पास एक छोटे से मकान में रहना पड़ेगा। 1856 ई. में कैनिंग ने यह घोषणा की थी बहादुर शाह जफर की मृत्यु के बाद मुगलों की पदवी छीनी जाएगी और वे सिर्फ राजा कहलाएंगे।

### 2. प्रशासनिक कारण

भारतीयों को प्रशासन में उच्च पदों से वंचित कर दिया गया। कोई भी भारतीय सेना में सुबेदार के पद पर नहीं था। न्यायिक क्षेत्र में भी अंग्रेजों को भारतीयों से श्रेष्ठ दर्जा दिया गया था।

### 3. सामाजिक व आर्थिक कारण

रूढ़िवादी भारतीयों ने सामाजिक सुधारों का विरोध किया।

ईसाई मिशनरियों को 1813 के चार्टर एक्ट द्वारा भारत में धर्म प्रचार की अनुमति मिल गई। धर्मांतरण के प्रयासों में भी भारतीयों को नाराज कर दिया।

1850 के 'धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम संख्या- 21' द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगों को पैतृक संपत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता था। इससे लोगों को यह लगा कि भारत कोईसाई देश बनाने की साजिश की जा रही है।

कंपनी के कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स के प्रधान आर.डी. मैंगलस ने ब्रिटिश संसद में यह नहीं घोषणा की कि 'ईश्वर ने हिंदुस्तान का विस्तृत साम्राज्य इंग्लैंड को इसलिए प्रदान किया है ताकि ईसाई धर्म की पताका भारत के एक किनारे से दूसरे किनारे तक लहरा सके।'।

### 4. आर्थिक कारण:-

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों भारत के उद्योग व व्यापार के विरुद्ध थी।

परंपरागत हस्तशिल्प के विनाश व भू राजस्व नीति के कारण लोगों के आर्थिक शोषण व उत्पीड़न ने असंतोष को जन्म दिया। इसने विद्रोह को भूमिका तैयार किया।

### 5. सैनिक कारण:-

इनके अतिरिक्त सेना में भी भारतीयों पदोन्नति व विदेशों में समुंदर पार सेवा के बारे में असंतोष था। भारतीयों को केवल निम्न पदों पर नियुक्त किया जाता था तथा सैनिकों का वेतन न्यूनतम था। उन्हें समुद्रपार जाने पर दिया जाने वाला बत्ता भी बंद कर दिया गया।

1854 के डाकघर अधिनियम द्वारा सैनिकों को जाने वाली निशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गई।



### ब्रिटेन के शासकों का काल

1. विक्टोरिया (1837 – 1901)
2. एडवर्ड सप्तम (1901– 1910)
3. जॉर्ज पंचम (1910– 1936)
4. एडवर्ड्स अष्टम (1936)
5. जॉर्ज अष्टम (1936– 1952)
6. एलिजाबेथ द्वितीय (1952– अब तक)

### ब्रिटेन के कुछ प्रधानमंत्रियों का काल:

1. पागेस्टन (1855–1858)
2. बैजामिन डिजरेली (1868, 1874–1880)
3. ग्लेडस्टोन (1868–74, 1880–09 जून 1885, 1886, 1892–1894)
4. लॉयड जॉर्ज (1916–1922)
5. रैम्जे मैकडोनाल्ड (1924, 1931–1935)
6. चैम्बरलेन (1937–1940)
7. चर्चिल (10 मई 1940–26 जुलाई 1945)
8. एटली (1945–1951)

### गर्वनर जनरल/वायसराय का कार्यकाल

1. वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785)
2. लार्ड कार्नवालिस (1786–1793)
3. लार्ड वेलेजली (1798–1805)
4. लार्ड विलियम बैंटिक (1828–1835)
5. लार्ड डलहौजी (1848–56)
6. लार्ड कैनिंग (1856–1862)
7. लार्ड मेयो (1869–1872)
8. लार्ड लिटन (1876–1880)
9. लार्ड रिपन (1880–1884)
10. लार्ड डुरिन (1884–1888)
11. लार्ड कर्जन (1889–1905)
12. लार्ड मिन्टो द्वितीय (1910–16)
13. लार्ड हार्डिंग द्वितीय (1916–1921)
14. लार्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921)
15. लार्ड रीडिंग (1921–1926)
16. लार्ड इरविन (1926–1931)
17. लार्ड विलिंगटन (1931–1936)
18. लार्ड लिनलिथगो (1936–1947)
19. लार्ड वेवेल (1944–1947)
20. लार्ड माउण्ट बेटेन (1947–1948)

### अंबेडकर व राष्ट्रीय आंदोलन:

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 इंदौर के पास महु छावनी छावनी में हुआ। इनके पिता का नाम रामजी अंबेडकर व माता का नाम भीमाबाई था।

रमाबाई अंबेडकर की पहली पत्नी थी तथा सविता अंबेडकर दूसरी पत्नी थी

अंबेडकर गायकवाड महाराजा की छात्रवृत्ति से अमेरिका गए और कोलंबिया विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। बाद में यह बड़ौदा के गायकवाड महाराजा के निजी सचिव रहे।

कोल्हापुर के साहू जी महाराज की छात्रवृत्ति पर अंबेडकर लंदन गए ओ लंदन विश्वविद्यालय 'जीम चतवइसमउ वतितनचमम' विषय पर चि.व प्राप्त की।

1920 में अंबेडकर मूकनायक नामक सप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया।

1930 में अंबेडकर अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ के अध्यक्ष बने। अखिल भारतीय दलित संघ का पहला सम्मेलन 1918 में हुआ था।

अंबेडकर ने तीनों गोलमेज में भाग लिया।

26 सितम्बर 1932 को अंबेडकर ने गांधीजी के साथ पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किये। जिसका नाम बदलकर बाद में अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ रखा गया।

22 दिसम्बर 1939 को अंबेडकर की पार्टी और जिन्ना की मुस्लिम लीग पार्टी ने काँग्रेस मंत्रिमण्डल के त्याग पत्र पर मुक्ति दिवस मनाया।

1946 में अंबेडकर बंगाल से संविधान सभा में चुने गये। विभाजन दके बाद वे बम्बई से संविधान सीमा में चुने गये।

29 अगस्त 1947 को अंबेडकर संविधान सभा का प्रारूप समिति के अध्यक्ष चुने गये। इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का निर्माता कहा गया है।

स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमण्डल में डॉ. अंबेडकर को विधि मंत्री बनाया गया। अंबेडकर ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। 1956 में ही अंबेडकर का निधन हो गया।

अंबेडकर की मुख्य पुस्तकें हैं—Who are shudras (शुद्र कौन हैं),

The untouchables, Annihilation of caste

अंबेडकर ने दलितों का नाम दिया Educate, Agitate and organise

### भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

1833 में इंडियन एसोसिएशन ने कलकत्ता में ' नेशनल कॉन्फ्रेंस नामक एक अखिल भारतीय संगठन का आयोजन किया। इसकी स्थापना सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने की व प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता आनन्दमोहन बोस ने की।



नेशनल कॉफ़स का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन कलकत्ता में 1885 में आयोजित हुआ। इसी समय बम्बई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन चल रहा था। अतः सुरेन्द्र नाथ बनर्जी कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं हो पाये।

सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की नेशनल कांग्रेस का 1886 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय हो गया।

कांग्रेस से पूर्व स्थापित संगघन बड़े जमींदारों या अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों के संगठन थे। इनका उद्देश्य अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाना नहीं था। लेकिन इन्होंने देश में राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक रिटायर्ड अंग्रेज आई.सी.एस. अधिकारी 'एलन अक्टोवियन हयुम' ने 1885 ई. में की।

हयुम ने 1884 में भारतीय राष्ट्रीय संघ (Indian National Union) की स्थापना तथा इसका प्रथम अधिवेशन 28 दिसम्बर दृ 1885 को बम्बई के 'गोकुलदास तेजपाल संस्कृत स्कूल' में आयोजित किया गया।

दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर सम्मेलन में ही भारतीय राष्ट्रीय संघ का नाम बदल कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कर दिया गया।

कांग्रेस के पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी थे। इसके प्रथम सचिव ए. ओ. हयुम थे। हयुम 1906 तक कांग्रेस के महासचिव रहे। 1907 में दिनेशा एदुलजी वाचा कांग्रेस के महासचिव बने।

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कुल 72 सदस्यों ने हिस्सा लिया इनमें प्रमुख थे— दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दिनशा वाचा, काशीनाथ तेलंग, वी. राघवा चेरियार, एन. जी. चंद्रावरकर, एस. सुब्रमण्यम।

कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन पुणे में आयोजित होना था किंतु वहां अकाल पड़ने से अधिवेशन मुंबई में आयोजित किया गया।

**कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में प्रस्तुत की गई मांगे:-**

1. केंद्र व प्रांतों में विधान परिषद का विस्तार हो।
2. उच्च सरकारी नौकरियों में भारतीयों को पूर्ण अवसर मिले।
3. सैनिक खर्च में कमी।
4. भारतीय प्रशासन की जांच हेतु एक रॉयल कमीशन की नियुक्ति हो।

**कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्य व इससे जुड़े विवाद:-**

कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य भारतीय जनता में पनप रहे असंतोष को एक संगठन हेतु सुरक्षित रूप से बाहर निकालना था। अतः कांग्रेस की स्थापना हयुम ने एक 'सुरक्षा वाल्व' के रूप में की।

1898 में व्योमेश चंद्र बनर्जी ने कहा कि हायुम डफरिन की सीधी सलाह से काम कर रहे थे।

लाला लाजपत राय के अनुसार हयुम को इस बात का संशय था कि जनता के असंतोष को व्यवस्थित रूप से बाहर नहीं निकाला गया तो भारत में भयंकर विस्फोट हो सकता है। जिससे ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट हो जाएगा।

लाला लाजपत राय ने 1916 में यंग इंडिया के लेख में कांग्रेस को लार्ड डफरिन के दिमाक की उपज बताया।

अंग्रेजों ने कांग्रेस की स्थापना सेप्टी वाल्व के रूप में की तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों ने इसका प्रयोग तड़ित चालक के रूप में किया जिससे सरकारी दमन को रोका जा सके।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय के गवर्नर जनरल लॉर्ड डफरिन और सचिव लार्ड क्रॉस थे।

लाला लाजपत राय ने हयुम के बारे में लिखा था कि हयुम स्वतंत्रता के पुजारी थे और उनका हृदय भारत की दुर्दशा पर रोता था।

कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन थे। इन्होंने 1887 में मद्रास अधिवेशन की अध्यक्षता की।

कांग्रेस की अध्यक्षता करने वाला प्रथम अंग्रेज जॉर्ज यूल था।

1889 में कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमर्स के सदस्य चार्ल्स बेडला भी उपस्थित थे।

चार्ल्स बेडला को भारतीय मामलों में रुचि लेने के कारण ब्रिटिश संसद सदस्य इन्हें भारत के सदस्य के रूप में संबोधित करने लगे।

प्रारंभ में कांग्रेस के प्रति सरकार का उदार दृष्टिकोण था। यहां तक की 1886 के कोलकाता अधिवेशन के बाद लॉर्ड डफरिन ने कांग्रेस सदस्यों को गार्डन पार्टी भी दी।

1889 में विलियम डिग्बी की अध्यक्षता में लंदन में ब्रिटिश कमेटी ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई।

1885 से 1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर उदारवादी नेताओं का वर्चस्व था। उदारवादी नेता अपनी मांगों को प्रतिवेदनो, भाषणों और लेखों के माध्यम से सरकार के सामने रखते थे तथा इन्हें ब्रिटिश सरकार के न्याय प्रियता में पूरा विश्वास था। यह सावधानी तरीके से भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे।

नरमपंथी नेताओं में दादाभाई नरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, फिरोजशाह मेहता, रमेश चंद्र दत्ता, दिनशा वाचा आदि प्रमुख थे।

1892 का भारत परिषद नियम भी उदारवादी के दबाव का परिणाम था परिणाम था।

कांग्रेस के बारे में टिप्पणियाँ

# ANGIRA ACADEMY SURATGARH



RAS

HISTORY NOTES

“ कांग्रेस जनता के उस अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसकी संख्या सूक्ष्म है। ” —**डफरिन**

“ कांग्रेस अपने पतन के गाल पर खड़ी है और भारत में रहते हुए मेरी एक प्रबल अभिलाषा इसके शांतिपूर्ण अंत में सहयोग करना है। ” **लॉर्ड कर्जन**

कर्जन ने कांग्रेस को ‘ गंदी चीज ’ और देशद्रोही संगठन कहा।

अश्वनी कुमार दत्त ने कांग्रेस सम्मेलनों को “ 3 दिनों का तमाशा ” कहा।

अरविंद घोष ने कांग्रेस के नेताओं के प्रतिवेदनो का वर्णन “ बुलबुलों के साथ खेलने ” के रूप में किया

9.	दिसम्बर, 1917	कलकत्ता	एनी बेसेंट
10.	दिसम्बर, 1924	बेलगाँव (कर्नाटक)	महात्मा गांधी
11.	दिसम्बर, 1925	कानपुर	सरोजिनी नायडू
12.	दिसम्बर, 1929	लाहौर	जवाहरलाल नेहरू
13.	दिसम्बर, 1948	जयपुर	पट्टाभी सीतारामैया

## भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महत्वपूर्ण अधिवेशन

अधिवेशन क्रमांक	अधिवेशन वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	महत्वपूर्ण तथ्य
1.	दिसम्बर, 1885	बम्बई	व्योमेश चंद्र बनर्जी	प्रथम अधिवेशन, 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
2.	दिसम्बर, 1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	कुल 36 प्रतिनिधि, राष्ट्रीय कांग्रेस व सुरेंद्रनाथ बनर्जी की राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का विलय है।
3.	दिसम्बर, 1887	मद्रास	सैयद बदरुद्दीन तैय्यबजी	पहला मुस्लिम अध्यक्ष। सर्वप्रथम देसी भाषा में भाषण दिए।
4.	दिसम्बर, 1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष। पहली बार कांग्रेस का अधिवेशन निर्मित।
5.	दिसम्बर, 1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखल	वंदे मातरम को राष्ट्रगीत के रूप में अंगीकार किया गया। स्वशासन कांग्रेस का लक्ष्य बनाया गया।
6.	दिसम्बर, 1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	पंथेरात्मक प्रकृति बचाओ आंदोलन को कांग्रेस का लक्ष्य बनाया गया।
7.	दिसम्बर, 1907	सूरत	रास बिहारी घोष	कांग्रेस का विभाजन।
8.	दिसम्बर, 1916	लखनऊ	अंबिका चरण मजूमदार	कांग्रेस के गरम दल और नरम दल में समझौता। कांग्रेस में मुस्लिम लीग के मध्य लखनऊ पैक्ट। कांग्रेस द्वारा पृथक (सांप्रदायिक) निर्वाचन प्रणाली को स्वीकृति।





### क्रांतिकारी दल एवं गतिविधियाँ

**अभिनव भारत :-** नासिक में गणपति उत्सव मनाने के संबंध में 1889 में 'मित्र मेला' संगठन की स्थापना की गयी। 1904 में इसी मित्र मेला से वीर सावरकर के नेतृत्व में 'अभिनव भारत' नामक गुप्त क्रांतिकारी संस्था का जन्म हुआ। यह संस्था नवयुवकों को लाठी चलाने, तलवार चलाने, पहाड़ पर चढ़ने, घुड़सवारी करने, दौड़ने आदि की शिक्षा देकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार करने लगी। महाराष्ट्र के पूना एवं बंबई के कई कॉलेज एवं स्कूलों में इसकी शाखाएं स्थापित की गयी। इसकी शाखाएं महाराष्ट्र के अतिरिक्त मध्यप्रदेश एवं कर्नाटक तक विस्तारित की गयी। लंदन से विनायक दामोदर सावरकर ने शस्त्र भारत भिजवाएं। अभिनव भारत की ओर से पांडुरंग महादेव वापट को बम बनाने की कला सीखने के लिए विदेश भेजा गया। वापट ने रूसी पुस्तक 'बम मैनुअल' की प्रति प्राप्त कर इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया। अभिनव भारत में बंगाल एवं भारत की अनेक गुप्त क्रांतिकारी संस्थाओं से संबंध स्थापित किए हैं।

**वीर सावरकर :-** 1901 में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु पर आयोजित शोक सभा का इन्होंने विरोधी किया। एडवर्ड सप्तम के राज्यभिषेक उत्सव को इन्होंने 'गुलामी का उत्सव' एवं देश व जाति के प्रति विद्रोह' कहा और इसका विरोध किया। 1906 में वीर सावरकर लंदन चले गए। लंदन में श्या मजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित इण्डिया हाउस में इन्होंने महापुरुषों की जयतियाँ एवं विचार गोष्ठियाँ आयोजित कर भारतीय युवाओं में देश भक्ति की भावना जागृत की। सावरकर ने 1857 की क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता युद्ध कहा। इन्होंने भारत का स्वतंत्रता संग्राम नामक पुस्तक लिखी। इस पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। यह पुस्तक गुप्त रूप से विभिन्न शीर्षकों 'पीक वीक पेपर्स', 'स्काट्स पेपर्स' आदि नाम से भारत पहुँची। इनका जन्म 28 मई, 1883 में भागुर (महाराष्ट्र) में हुआ।

**नासिक षडयंत्र केस :-** जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या नासिक में 21 दिसम्बर, 1909 को अनंत लक्ष्मण ने कर दी। यह नासिक षडयंत्र कहलाया। नासिक षडयंत्र केस में अनंत लक्ष्मण, कन्हारें, कृष्णजी गोपाल कर्वे और विनायक नारायण देशपांडे को 19 अप्रैल, 1911 को फांसी दी गयी। वीर सावरकर को लंदन से बंदी बनाकर भारत लाया गया। सावरकर पर नासिक षडयंत्र केस चलाकर दिसम्बर, 1910 को अण्डमान द्वीप की सेलूलर जेल में भेज दिया गया। खराब स्वास्थ्य के कारण 1924 में इन्हें रत्नागिरी में नजरबंद किया गया। इन्हें 1937 में जेल से मुक्ति मिली। दिल्ली षडयंत्र केस के बाद लाला हरदयाल और रामबिहारी बोस जैसे क्रांतिकारी देश के बाहर सक्रिय हो गए।

**हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन :-** शचीन्द्र नाथ सान्याल को 1915 के बनारस षडयंत्र केस में आजीवन कारावास मिला। अक्टूबर, 1924 में कानपुर में क्रांतिकारी युवकों को सम्मेलन हुआ। शचीन्द्र सान्याल के प्रयासों से 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का गठन किया गया। मन्मथनाथ गुप्त, रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी, चन्द्रशेखर आजाद आदि इसके

प्रमुख नेता थे। इस संस्था का उद्देश्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से अंग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करना। इसका सैनिक संगठन रिपब्लिकन आर्मी था। 1924 में इस दल ने अपना पर्चा 'रिवोल्यूशनरी निकाला'। बाद में इस दल का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रखा गया।

**काकोरी कांड :-** क्रांतिकारी को अपने कार्यों के लिए धन की आवश्यकता थी। इस कारण सरकारी खजाना लूटने के लिए एक योजना बनाई गयी। 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ के पास काकोरी गांव के निकट ट्रेन को रोककर सरकारी खजाना क्रांतिकारियों द्वारा लूट लिया गया। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ, रोशनसिंह, एवं राजेन्द्र लाहिडी को फांसी की दी गयी। शचीन्द्र सान्याल को आजीवन कारावास मिला। 8-9 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में उत्तर भारत में सक्रिय क्रांतिकारियों की बैठक हुई, जिसमें एक केन्द्रीय समिति का गठन हुआ। इन नई केन्द्रीय समिति में चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव, विजयकुमार सिन्हा, शिव वर्मा, फणीन्द्र नाथ घोष, कुन्दन लाल आदि को सम्मिलित किया गया। क्रांतिकारी संगठन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का नाम भगत सिंह के सुझाव पर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया गया। इस संगठन के निर्माण में चन्द्रशेखर आजाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। बम बनाने में सहायता देने के लिए इस एसोसिएशन ने यतीन्द्र नाथ दास को कलकत्ता से पंजाब भेजा।

**साइर्स की हत्या :-** 30 अक्टूबर, 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करने वाले पंजाब के प्रमुख नेता लाला लाजपतराय अंग्रेज स्कॉट द्वारा लाठी चार्ज में घायल हो गए। एक माह बाद उनकी मृत्यु हो गई। इसका बदला लेने के उद्देश्य से 17 दिसम्बर, 1928 को भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु ने लाहौर में स्कॉट को मारने का निश्चय किया। साइर्स हत्याकांड के लिए ब्रिटिश सरकार ने लाहौर षडयंत्र केस चलाकर 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी दे दी।

**केन्द्रीय विधानसभा बम कांड :-** केन्द्रीय विधानसभा में 8 अप्रैल, 1929 को पब्लिक सेपटीबल और ट्रेल यूनिशन बिल पास हो रहा था। इसी समय भगतसिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली में केन्द्रीय विधानसभा के केन्द्रीय हॉल में खाली बेचों पर बम फेंककर इन बिलों के विरुद्ध अपना विरोध जताया।

**चन्द्रशेखर आजाद :-** इनका जन्म 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा गांव में हुआ। इनके पिता सीताराम तिवारी एवं माता जगरानी देवी थी। वे अपने घर को छोड़कर काशी आ गये और संस्कृत विद्यालय में पढ़ने लगे। इन्होंने बनारस में रहते हुए असहयोग आंदोलन में भाग लिया। पकड़े जाने पर जब मजिस्ट्रेट ने इसके जानकारी मांगी तब इन्होंने अपना नाम 'आजाद' पिता का नाम 'स्वतंत्रता' एवं निवास स्थान 'कारागार' बताया। मजिस्ट्रेट ने इस बालक को 14 बेत की सजा सुनाई। बेत पड़ते समय इन्होंने वंदेमातरम् के नारे लगाये। काकोरी ट्रेन लूट एवं साइर्स हत्याकांड में आजाद ने भूमिका



निभाई। इनके नेतृत्व में दिसम्बर, 1930 में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी ने दिल्ली के निकट वायसराय लार्ड इर्विन की रेलगाड़ी को बम से उड़ाने का प्रयास किया। किंतु वायसराय इससे बच गया। 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में सुखदेव राज से बातचीत के समय एक भेदिए ने पहचान लिया और पुलिस को सूचित कर दिया। पुलिस अधीक्षक नाटबावर ने इन्हें घेर लिया गया। इन्होंने अपने पास अंतिम गोली बची देख अपनी कनपटी पर गोली चलाकर मृत्यु को वरण किया।

**भगत सिंह :-** भगत सिंह का जन्म 23 सितम्बर, 1907 को पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता का नाम किशन सिंह एवं माता का नाम विद्यावती देवी था। इनके चाचा अजीतसिंह एवं स्वर्णसिंह क्रांतिकारी थे। अजीतसिंह लाला लाला लाजपत राय के साथ मांडले जेल में रहे। जिस दिन अजीतसिंह जेल से छुटकर आए उसी दिन भगतसिंह का जन्म हुआ। इसलिए इनका नाम भाग्यवाला – भगतसिंह रखा गया। इन्होंने लाहौर के डी. ए. वी. कॉलेज में अध्ययन किया। लाहौर में शचीन्द्र सान्याल से मिलने के बाद ये क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रशिक्षण के लिए कानपुर भेजा। कानपुर में भगतसिंह ने गणेश शंकर विद्याथी। के सामाचार – पत्र प्रताप में बलवत के नाम से क्रांतिकारी लेख लिखे। 1936 में नौजवान सभा का गठन किया। भगतसिंह ने 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा दिया। सांडर्स हत्याकांड एवं केन्द्रीय विधानसभा बमकांड में इनकी प्रमुख भूमिका रही। लाहौर षडयंत्र केस में भगतसिंह को राजगुरु एवं सुखदेव के साथ 23 मार्च, 1931 को फांसी पर चढ़ा दिया गया। महाराष्ट्र के राजगुरु जब वीर सावरकर का भाषण सुनने के लिए काशी विश्वविद्यालय में गए थे तब इनकी भेंट भगतसिंह से हुई। इन्होंने शारीरिक शिक्षक के रूप में काये किया। सांडर्स हत्याकांड में भगतसिंह के साथ थे। सांडर्स को पहली गोली राजगुरु ने ही मारी थी।

सुखदेव भगतसिंह के बचपन के साथी थे। भगतसिंह को क्रांतिकारी मार्ग पर लाने का श्रेय सुखदेव को जाता है। भगतसिंह अपने दल के नेता थे और सुखदेव उस दल के संगठनकर्ता। बंगाल के सूर्यसेन के नेतृत्व में पूर्वी बंगाल के चटगांव के शस्त्रगार पर अप्रैल, 1930 में क्रांतिकारी ने हमला किया।

**आजाद हिन्द फौज :-** द्वितीय विश्वयुद्ध में दिसम्बर, 1941 में जापानियों ने उत्तर मलाया में ब्रिटिश सेना को पराजित कर दिया। इसके बाद मलाया के कैप्टन मोहन सिंह के मन में आजाद हिन्द फौज के गठन का विचार आया। फरवरी, 1942 को सिंगापुर के पतन के बाद 40,000 भारतीय युद्ध बंदियों को जापानी मेजर फूजीहारा ने कैप्टन मोहनसिंह को सौंप दिया। 23 जून, 1942 को बैकांक में रासबिहारी बोस की अध्यक्षता में 'भारतीय स्वतंत्रता लीग' की स्थापना की गयी। रासबिहारी बोस द्वारा निमंत्रण मिलने पर सुभाषचन्द्र बोस जर्मनी पनडुब्बी द्वारा गए। जून, 1943 में सुभाष चन्द्र बोस जापान से टोक्यों पहुँचे।

सुभाषचन्द्र बोस टोक्यों रेडियों पर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध, सशस्त्र, क्रांति की घोषणा की। सुभाषचन्द्र बोस सिंगापुर पहुँचे, जहाँ 4 जुलाई, 1943 को रासबिहारी बोस के पूर्व एशिया में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस ने 21 अक्टूबर, 1943 को सिंगापुर के कैथेड्रल में अस्थायी भारतीय सरकार की स्थापना की घोषणा की। जापान, जर्मनी, इटली, बर्मा, चीन, थाईलैंड, फिलीपीन्स आदि सरकारों ने आजाद हिन्द फौज की अस्थायी सरकार को मान्यता प्रदान कर दी। सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के समक्ष, दिल्ली चलो का नारा दिया। उन्होंने अपने भाषण में कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा। सुभाषचन्द्र बोस ने महात्मा गांधी के लिए राष्ट्रपिता शब्द का प्रयोग किया।

उन्होंने रेडियों पर गांधी जी को सम्बोधित करते हुए कहा – भारत की स्वाधीनता का आखिरी युद्ध प्रारम्भ हो चुका है। आजाद हिन्द फौज का मुख्यालय रंगून एवं सिंगापुर में बनायी गयी। अंडमान एवं निकोबार का नाम स्वराज्य द्वीप पर रखा। इन द्वीपों पर भारत का झण्डा फहराया गया। आजाद हिन्द फौज के सैनिकों ने जापानी फौज के साथ कोहिमा पर कब्जा कर भारत का तिरंगा झंडा फहराया। 18 अगस्त, 1945 को फारमोसा के ताईहोकू हवाई अड्डे से विमान से जैसे ही रवाना हुए विमान में आग लग गयी। शहनवाज खां, गुरुदयाल सिंह ढिल्लों एवं कर्नल सहगल पर दिल्ली के लाल किले में मुकदमा चलाया गया। भूलाभाई देसाई, तेजबहादूर संप्र, कैलाशनाथ, काटज, आसफ अली जवाहरलाल नेहरू, आदि ने बचाव पक्ष के वकील के रूप में न्यायालय में इन अधिकारियों में मुकदमे की पैरवी की। सैनिक न्यायालय ने इन अधिकारियों को मृत्युदंड की सजा दी। भारतीय जनता की तीखी प्रतिक्रिया को देखते हुए तत्कालीन वायसराय लार्ड वैवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए उनकी सजा को माफ कर दी। फरवरी 1946 में बंबई की नौ सेना के विद्रोहियों ने आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों को छोड़ने की मांग की।

**सुभाषचन्द्र बोस :-** सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ। इनके पिता जानकीदास एवं माता का नाम प्रभावती थी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कटक में हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्राप्त की। 1920 में इन्होंने आई. सी. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनके राजनीतिक गुरु देशबंधु चितरंजन दास थे। सुभाषचन्द्र बोस ने असहयोग आंदोलन में बड़ी सक्रियता से भाग लिया। दिसम्बर, 1921 में इन्हें गिरफ्तार कर 6 माह की सजा सुना दी गयी। जब चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी की स्थापना की तब उन्होंने स्वराज्य दल के विचारों का प्रसार किया। 1924 में चितरंजन दास के कलकत्ता के महापौर बनने पर इन्हें कलकत्ता निगम का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया गया। क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण अंग्रेजी सरकार ने इन्हें 3 वर्ष के लिए मांडर्ल जेल में निर्वासित कर दिया। इन्होंने 1928 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में नेहरू रिपोर्ट की औपनिवेशिक स्वराज्य



की मांग का विरोध किया और पूर्ण स्वाधीनता दिए जाने की बात कही। सुभाषचंद्र बोस कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। अगल वर्ष कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में इन्होंने महात्मा गांधी के प्रत्याशी पट्टाभिसीतारमैया को पराजित किया था। महात्मा गांधी से सुभाषचंद्र बोस के वैचारिक मतभेद थे। इसके चलते सुभाषचंद्र बोस के इस्तीफा दे दिया। सुभाषचंद्र बोस के इस्तीफा देने के बाद राजेन्द्र प्रसाद कांग्रेस के अध्यक्ष बनाए गए। मई 1939 में सुभाषचंद्र बोस ने नए दल फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। सुभाषचंद्र बोस को आगामी 3 वर्षों के लिए कांग्रेस के किसी भी निर्वाचित पद के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध में इन्होंने भारतीयों से अंग्रेजों को सहायता देने की अपील की। 2 जुलाई, 1940 को भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में इन्होंने आमरण अनशन शुरू कर दिया। इस पर इन्हें जेल से रिहा कर कलकला के एलिगन रोड पर स्थित इनके घर पर कड़े पहरे के साथ नजरबंद कर दिया गया। 16 जनवरी, 1941 को ये पठान के वेश में छुपते हुए काबुल जर्मनी से सुभाषचंद्र बोस ने हिटलर से मुलाकात की। जर्मनी में इन्हें नेताजी कहकर पुकारा गया। रास बिहारी बोस के निमंत्रण पर सुभाषचंद्र बोस जापान पहुँचे और आजाद हिन्द फौज की कमान संभाली। जापानी सूत्रों के अनुसार वायुयान दुर्घटना में 18 अगस्त, 1945 को इनकी मृत्यु हो गयी किन्तु इनकी मृत्यु को लेकर संशय की स्थिति बनी रही।

### 1885 के पूर्व की स्थिति एवं विभिन्न संगठन

**लैंड होल्डर्स सोसायटी :-** इसकी स्थापना 1838 में कलकता में की गई। यह मूलतः जमींदार वर्ग का संगठन था। यह यूरोप के बर्जुआ वर्ग के संगठनों की भाँति भारत का पहला राजनीतिक संगठन था। इसके प्रमुख सदस्यों में प्रसन्न ठाकुर, राधाकांत देव, द्वारकानाथ ठाकुर आदि थे।

**बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी :-** इसकी स्थापना 20 अप्रैल, 1943 को कलकला में हुई। इसके अध्यक्ष जार्ज थांपसन एवं सचिव प्यारीचंद्र मित्र थे।

**ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन :-** इसकी स्थापना 1851 में हुई। इसके अध्यक्ष राधाकांत देव एवं सचिव देवेन्द्रनाथ ठाकुर थे। यह नव भारतीय जमींदारों का संगठन था। इस एसोसिएशन के प्रमुख सदस्यों में व्योमेश चन्द्र बनर्जी (जो बाद में कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष बने), रमेशचन्द्र दत्त (बाद में कांग्रेस के अध्यक्ष बने), महनमाहेन घोष (कलकला हाईकोर्ट के प्रथम भारतीय बैरिस्टर) आदि थे।

**ईस्ट इंडिया एसोसिएशन :-** इसकी स्थापना लंदन में 1 दिसम्बर, 1866 को दादाभाई नौरोजी द्वारा की गयी। 1873 में जब दादाभाई नौरोजी बडौदा के दीवान बनकर भारत आ गए तक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारियों ने इस संस्था पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। दादाभाई नौरोजी भारत के पहले आर्थिक विचारक थे। दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पावर्टी एंड अन

ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में बताया कि भारत के धन का निष्कासन किस प्रकार इंग्लैण्ड में हुआ। इन्हें भारत का पितामह कहा जाता है। ये कांग्रेस के 3 बार अध्यक्ष भी रहे।

**पूना सार्वजनिक सभा :-** इसकी स्थापना 2 अप्रैल, 1870 को हुई। इसके संस्थापक गणेश वासुदेव जोशी थे, जो इसके सचिव थे, इसके सक्रिय सदस्यों में एम. एच. साठे, एस.एच. चिपलूणकर एवं महादेव गोविंद नानाड़े थे। पूना सार्वजनिक सभा में बंबई प्रेसीडेंसी में राजनीतिक चेतना का विकास कर जनता को संगठित किया।

**इंडियन लीग :-** इसकी स्थापना 25 दिसम्बर, 1875 को कलकला में शिशिर कुमार घोष ने की। शिशिर कुमार घोष 'अमृत बाजार पत्रिका' के संपादक एवं मालिक थे। इसके अस्थायी अध्यक्ष शंभूचंद्र मुखर्जी थे।

**इंडियन एसोसिएशन :-** इसकी स्थापना कलकला में 26 जुलाई, 1976 को सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने की। इस संगठन ने वायसराय लिटन द्वारा सिविल सेवा की आयु को 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष किए जाने, वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट (1878) एवं शस्त्र कानून (1878) बनाये जाने के विरुद्ध आंदोलन किया। लार्ड रिपन के समय के इल्बर्ट बिल के संबंध में चले आंदोलन में इस संगठन की प्रमुख भूमिका थी। जज की आलोचना के बाद सरकार ने मई 1883 को सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें 2 महीने बाद 4 जुलाई 1883 को रिहा किया गया।

**मद्रास महाजन सभा :-** 16 मई 1884 को मद्रास महाजन सभा की स्थापना हुई। पी. रंगिया नायडू इसके अध्यक्ष और व. राघवाचारी तथा आनंद चार्लू सचिव थे।

**बंबई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन :-** 31 जनवरी, 1885 को बंबई प्रेसीडेंसी की स्थापना की हुई। बंबई के नागरिकों की एक सभा सर जमरोद जीजा बाई की अध्यक्षता में बुलाई गयी। काशीनाथ त्रयंबक तैलंग, बदरुद्दीन तैयबजी एवं फिरोजशाह ने इसके निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाई।

**इंडियन नेशनल कांग्रेस :-** 29 - 30 दिसम्बर, 1883 को रामतनु लाहिडी की अध्यक्षता में कलकला के अल्बर्ट हॉल में राष्ट्रीय सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में सिविल सर्विस की परीक्षा भारत में लिए जाने एवं इसमें बैठने की आयु सीमा बढ़ाने, भारत में प्रतिनिधि विधानसभाओं की स्थापना करने आदि के संबंध में चर्चा हुई। द्वितीय इंडियन नेशनल कांग्रेस कलकला में 25 - 27 दिसम्बर, को हुई। इसी समय ह्यूम ने इंडियन नेशनल कांग्रेस का सम्मेलन बंबई के 28 - 30 दिसम्बर, के कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में सम्मिलित न हो सके।

### (कांग्रेस की स्थापना एवं उद्देश्य)

ह्यूम ने 1 मार्च 1883 को कलकला विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक पत्र लिखकर भारतीय जनता का एक राजनीतिक संगठन बनाने की अपील की। मई, 1885 में ह्यूम वायसराय डकरिन से शिमला में मिले। कांग्रेस की स्थापना से पूर्व इसका नाक इंडियन नेशनल यूनियन रखना तय हुआ। अवकाश प्राप्त



अंग्रेज अधिकारी एलेन अक्टावियन ह्यूम द्वारा उदारवादी बुद्धिजीवियों के सहयोग से दिसम्बर, 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गयी। कांग्रेस का प्रथम सम्मेलन पूना में होना था। पूना में हैजा फैल जाने के कारण यह सम्मेलन बंबई में हुआ। कांग्रेस का प्रथम सम्मेलन 28 दिसम्बर, 1885 को बंबई के ग्वालिया टैंक स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत स्कूल में व्योमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इसमें 72 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' रखा गया। कांग्रेस शब्द अमेरिका के इतिहास से लिया गया है जिसका अर्थ होता है – लोगों का समूह।

### भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार

#### संस्कृति व ज्ञान विज्ञान :-

प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु कहलता था।

भारत में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला और गया के विश्व विद्यालय शिक्षा के बड़े केन्द्र थे।

भारत में आये विदेशी फाह्यान, ह्वेनसांग और इत्सिंग चीनी यात्री प्रमुख हैं।

बर्मा, स्याम, मलय प्रायद्वीप, कम्बोडिया, सुमात्रा, जावा, बोर्निया, बाली, अन्नाम, सुवर्णद्वीप, हिन्द – चीन स्थानों पर भारतीय भाषा, साहित्य धर्म, कला का प्रभाव दिखता है।

#### भाषा और साहित्य :-

संस्कृत भाषा के अभिलेख बर्मा, स्याम, मलय, प्रायद्वीप, कम्बोडिया, अन्नाम, सुमात्रा, जावा और बोर्निया में प्राप्त हुए हैं।

सबसे प्राचीन लेख दूसरी तीसरी शताब्दी के हैं।

हिन्द – चीन में आज भी पालि भाषा का प्रयोग होता है, जो संस्कृत से निकली है।

चम्पा में 100 से अधिक संस्कृत अभिलेख मिले हैं।

कम्बुज के यशोवर्मन ने चार अभिलेख क्रमशः 50, 75, 93 और 108 छन्दों के हैं।

राजेन्द्रवर्मन का एक लेख 281 छन्दों और दूसरा 268 छन्दों का है।

चम्पा के तीन नरेश साहित्यिक कार्यों में विद्वान थे, एक तो चारो वेदों का ज्ञाता था।

जावा के लोगो ने रामायण और महाभारत का जावी भाषा में गद्य अनुवाद किया है।

बौद्ध साहित्य की पालि भाषा बर्मा और सिंहल में अपनायी गयी है।

बौधिरुचिनामक विद्वान 693 ई. में चालुक्य राज्यसभा में नियुक्त चीनी राजदूत के साथ नालन्दा से चीन गया।

नेपाल से शांति :- रक्षित और उद्यान से पद्मसंभव नामक विद्वान तिब्बत पहुँचे और उन्होंने वहाँ तिब्बती लामा धर्म की नींव रखी।

#### धर्म :-

बर्मा और स्याम में बौद्ध धर्म प्रधान था वहाँ सभी हिन्दु देव –देवताओं की मूर्तिया भी पायी जाती है परन्तु शिव की पूजा मुख्य रूप से होती थी।

जावा की एक मूर्ति 'भटार गुरु' जो ऋषि अगस्त का प्रतीक मानी जाती है।

कम्बुज के शिवसोम जो राजा इन्द्रवर्मन के गुरु थे इन्होंने भगवत् शंकर से शस्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया था।

कम्बुज के राजा यशोवर्मन ने 100 आश्रम स्थापित किये थे।

#### समाज :-

बालों और कम्बोज में जो जाति व्यवस्था का स्वरूप है, उसे हम प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था का उदाहरण समझ सकते हैं।

सती – प्रथा भी प्रचलीत थी। पर्दा – प्रथा का प्रचलन नहीं था।

मनोरंजन के प्रमुख साधन जुआ, मुर्गों की लड़ाई, संगीत नृत्य और नाटक थे।

जावा में नाटक का लोकप्रिय रूप 'छाया नाट्य' है, जो वयंग कहलाता है। इसके कथानक मुख्यतः रामायण और महाभारत से लिये गये थे।

### कला

#### जावा के मन्दिर :-

जावा का सबसे महत्वपूर्ण वास्तुशिल्प वहाँका बरोबोदूर मंदिर है। यह 750 से 850 ई. के बीच शैलेन्द्रो के संरक्षण में बना था।

बरोबोदूर में मूर्तियों की पंक्तियों की कुल ग्यारह श्रृंखलाएँ हैं और लगभग 1500 मूर्तिया हैं।

बरोबोदूर की बुद्ध की मूर्तिया और मेनदुत की बोधिसत्व मूर्तिया प्रमुख हैं।

लारो – जंगरंग में आठ मुख्य मंदिर हैं, जिनमें शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है, उत्तर में विष्णु तथा दक्षिण में ब्रह्मा की मूर्ति हैं।

बरामदे के भीतर मूर्तियों के 42 फलक हैं।

#### कम्बुज के मंदिर :-

कम्बुज के अंगकोर नामक स्थान पर कुछ मंदिर हैं, भारतीय मंदिरों के समान हैं।

अंगकोर वाट के शिखरों को चारों दिशाओं की ओर मुहं किये मुण्डों द्वारा ढका है।

मंदिर के चारों ओर गहरी खाई, उसके ऊपर पुलनुमा रास्ता उसके दोनों तरफ साँप के शरीर को खींचते हुए दैत्यों की शकल बनायी गई है।

मंदिर की चारदीवारी के बाहर खाई 650 फीट चौड़ी खाई है, एवं 36 फीट चौड़ा रास्ता है।

मंदिर के बाहर 2 मील खाई है।

अंतिम मंजिल शीर्ष जमीन से 210 फीट ऊँचाई पर स्थित है।

#### आनन्द मंदिर :-

बर्मा में सर्वोत्तम मंदिर पेगन का आनन्द मंदिर हैं।

पत्थर की उत्कीर्ण मूर्तियों की संख्या 80 है। और उसी में बुद्ध के जीवन की मुख्य घटनाएँ अंकित हैं।

ड्यूरोसाईल ने कहा की, "जिन वास्तुकारों ने आनन्द का नियोजन और निर्माण किया वे निः संदेह भातरीय थे"।





### प्राचीन भारत की भौगोलिक स्थिति

दिशाएँ	अफगानिस्तान
पूर्व	बर्मा (म्यांमार)
दक्षिण – पूर्वी	बंगाल की खाड़ी के पूर्व में स्थित मलाया, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बाली, चम्पा हिन्द चीन, इंडोनेशिया, स्याम और श्रीलंका

प्राचीन भारत को वृहत्तर भारत कहा जाता है।

वृहत्तर भारत में भारतीय संस्कृति के प्रचार – प्रसार के कारण निम्न थे।

1. **भौगोलिक कारण** :- भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण भाग के मध्य में स्थित होने के कारण अन्य देशों के साथ संबंध स्वभाविक थे।
2. **आर्थिक जीवन** :- प्राचीन काल में भारत में बनने वाले सामानों की मांग विदेशों में होने के कारण व्यापारी आते जाते रहते जिससे सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ।
3. **धार्मिक जीवन** :- बौद्ध धर्म ने अन्य देशों में भी अपने धर्म का प्रचार – प्रसार किया जिसके साथ भारत की सभ्यता और संस्कृति का भी विकास हुआ।
4. **राजनैतिक कारण** :- भारतीय राजकुमारों ने दक्षिण – पूर्वी एशिया के भागों में भी अपने राज्य स्थापित किये। जिससे भी सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ।

### भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार

**मध्य एशिया** :- इस प्रदेश के खोतान, कूचा काराशहर, तूर्फान आदि स्थल भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र थे।

खोतान भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बड़ा केन्द्र था। बौद्ध धर्म की महायान शाखा के अनुयायी अत्यधिक संख्या में रहते थे। कुचा की लगभग संपूर्ण जनता बौद्ध धर्म का पालन करती है। यहाँ लगभग 1000 स्तूपों और विहारों का निर्माण किया गया था। काराशहर के लिए माना जाता है कि यह कनिष्क के साम्राज्य का महत्वपूर्ण भाग था।

तूर्फान में भी 5 वीं सदी तक बौद्ध धर्म का प्रचार हो चुका था पर 8 वीं सदी में इस्लाम के प्रवेश से भारतीय संस्कृति यहाँ समाप्त हो गयी।

**अफगानिस्तान** :- प्राचीन काल में तथा मौर्यकाल में भी भारत का ही अंग था।

यहाँ मध्य भारत की भाषा बोली जाती है।

**चीन** :- चीन व भारत के संबंधों का उल्लेख महाभारत, मनुस्मृति तथा कालिदास के अभिज्ञानकुन्तलम् नाटक से प्रकट होता है। पहली शताब्दी में धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से चीन व भारत में आदान प्रदान हो गया था।

लगभग 65 ई. में चीनी सम्राट मींगती, धर्मरत्न तथा मांतग नामक दो बौद्ध भिक्षुओं को भारत से चीन ले गये। बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया।

चीन से ही बौद्ध धर्म कोरिया और जापान तक फैला।

**तिब्बत** :- तिब्बत के राजा स्त्रोंसांग नेम्पो ने भारत से वैज्ञानिक संबंध बनाए।

यहाँ बौद्ध धर्म का खूब प्रचार – प्रसार हुआ। बौद्ध मंदिर और विहार भी यहाँ बनाये गये।

संस्कृत भाषा तथा भारतीय लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपि भी अपनाई गई।

**श्रीलंका** :- भारत और श्रीलंका के संबंधों का उल्लेख सर्वप्रथम वाल्मीकी कृत रामायण से होता है।

सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था।

बौद्ध धर्म के साथ – साथ उन्होंने पालि भाषा और ब्राह्मी लिपि का भी श्रीलंका में प्रचार प्रसार किया।

**बर्मा (म्यांमार)** :- यहाँ के आराकान, तागोंग, श्रीक्षेत्र, यातोन और पीगू में हिन्दु जीवन शैली पर्याप्त मात्रा में विकसित थी। बर्मा के कई लेख संस्कृत और पालि भाषा में उपलब्ध हुए हैं।

बर्मा के मान राज्य में हिन्दु धर्म का सर्वाधिक प्रभाव था।

9 – 10 वीं शताब्दी में पागन राज्य की स्थापना हुई। यहाँ धर्म ने ग्रहण किया।

**कम्बोज (कम्बोडिया)** :- इसे पहले फूनान कहा जाता था।

ईस्वी सन् की प्रथम शताब्दी में कौडिन्य नामक भारतीय ने अपने राज्य की स्थापना की।

नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जयवर्मा के वंशजों ने यहाँ भारतीय भाषा संस्कृति, साहित्य, गणित तथा ज्योतिष का वहाँ प्रचार हुआ।

इसी वंश के राजा सूर्य वर्मा द्वितीय ने अंगकोरवाट नामक प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण कराया।

जय वर्मा सप्तम ने अंगकोरथोम नामक एक वैष्णव मंदिर का निर्माण भी कराया।

**चम्पा (वियतनाम)** :- कम्बोज के पूर्वी भाग में प्राचीनकाल में चम्पा नामक राज्य था। यह प्राचीनकाल में भारतीय उपनिवेश था।

यहाँ का पहला राजा श्रीमार हिन्दु था।

यह हिंदु राजवंशों ने शासन किया जिसमें प्रमुख भद्रवर्मा, गंगाराज, पाण्डुरंग भृगु और हरिवर्मा प्रमुख थे।

चम्पा के प्राचीन ऐतिहासिक अवशेषों और परम्पराओं से ज्ञात होता है कि वहाँ भारत की भाँती वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी।

राजकुलों में सती प्रथा प्रचलित थी।

यहाँ की राजभाषा संस्कृत थी।

वहाँ शैव मत का सबसे अधिक प्रचार था।

भद्रवर्मा ने माइन्स में एक मंदिर का निर्माण करवाया जिसमें शिव के अलावा राम – सीता की भी वहाँ पूजा होती थी।

वहाँ के मंदिरों में चालुक्यों की स्थापत्य निर्माण शैली का अनुसरण किया गया था।

**मलाया (मलेशिया)** :- यहाँ हिन्दु राज्यों का विकास हुआ इनमें कर्मरंग, कलशपुर, कटाह, व पंहग आदि राज्य प्रमुख मुख्य थे।

दक्षिण में चोल साम्राज्य के प्रतापी राजा राजेन्द्र चोल प्रथम का भी इस द्वीप पर व्यापारिक नियंत्रण था।



**स्याम (थाईलैण्ड) :-** वर्तमान में यहाँ थाई जाति निवास करती है।

13 वीं सदी से पूर्व यहाँ भारतीयों का प्रभुत्व था।

यहाँ हिन्दु धर्म व बौद्ध धर्म की महायान विचारधारा का अधिक प्रचलन था।

**जावा (इण्डोनेशिया) :-** फाह्यान के अनुसार 5 वीं सदी के आरम्भ में जावा में हिन्दु धर्म फैल चुका था।

शिव के उपासकों की संख्या अधिक थी।

भारतीय संस्कृति का प्रभाव 15 वीं सदी में कुबलखी के आक्रमण से पहले तब बना रहा।

**सुमात्रा (इण्डोनेशिया) :-** प्राचीनकाल में इसे स्वर्ण द्वीप के नाम से जाना जाता है। इसका प्रसिद्ध नगर श्रीविजय था।

4 शताब्दी से 7 वीं सदी तक विजयवंश का शासन रहा।

राजेन्द्र चोल प्रथम का भी यहाँ प्रभुत्व था।

**बाली (इण्डोनेशिया) :-** चौथी सदी में हिन्दु राज्य की स्थापना हुई।

यहाँ हिन्दु धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही प्रचलित थे।

**बोर्नियो :-** चौथी शताब्दी में बोर्नियो में भी हिन्दुओं ने अपना राज्य स्थापित किया।

उस काल में मूल वर्मा यहा का शासक था।

**लवदेश (आलोस) :-** भगवान राम के पुत्र लव के नाम से इस नगरी का नाम लवपुरी पड़ा।

यहाँ के आदि देवता भद्रेश्वर है।

यहाँ का प्रथम राजा श्रुतवर्मन था। इसके पुत्र ने श्रेष्ठसर्मन मे श्रेष्ठपुर नाम से नगर बसाया।

यहाँ शालिवाहन संवत् का प्रचार भी था।

### वृहतर भारत में व्यापार, उद्योग एवं वाणिज्य

**व्यापार :-** प्राचीन भारत में सोने की चिड़िया कहा जाता था।

क्योंकि भारतीय माल की विदेशों में बहुत मांग थी।

विदेशों में व्यापार जल व थल दोनों मार्गों से होता था।

स्थल मार्ग द्वारा पूर्व तिब्बत व चीन और पश्चिमी ईरान और अरब से व्यापार होता था।

पूर्व में ताम्रलिप्ति का बंदरगाह प्रमुख था।

विदेशी व्यापारी अपने साथ सोना, चांदी, लाल मणि, तथा हीरे जवाहरात लाते थे और उसके बदले में भारत से सूती रेशमी व जरी के कपड़े, तम्बाकू व मसाले ले जाते थे।

बाहरी देशों के साथ व्यापार को जाने वाले व्यापारी वर्ग का मुखिया सार्थवाह कहलाता था।

मोती, बहुमूल्य पत्थर, सुगंधित पदार्थ, कपड़े मसाले, नील, औषधियाँ नारियल आदि निर्यात की प्रमुख सामग्री थी।

इन वस्तुओं के बदल विदेशों से सोने के सिक्कों का भी आयात होता था।

**उद्योग :-** भारत का सबसे उन्नत उद्योग वस्त्रोत्पादन था।

सूती कपड़े के व्यवसाय के लिए बनारस, वत्स, बंग, मदुरा आदि में कारखाने थे।

चाणक्य के अर्थशास्त्र में कई प्रकार की ऊनी कम्बलों का उल्लेख मिलता है।

मेगस्थनीज के अनुसार भारतीय लोक मलमल के बारीक वस्त्र पहनते थे। जिन पर जरी का काम होता था।

प्राचीन भारत में दुसरा मुख्य उद्योग धातु संबधी था। खानों से निकालकर धातुओं को पिघला कर उसके विविध बर्तन, अस्त्र – शस्त्र, आभूषण, मूर्तियाँ आदि बनाई जाती थी।

देश	भारत से मंगवाया जाने वाला माल
पश्चिमी देशों से	मीठी शराब और अंजीर
चीन	रेशम
नेपाल	ऊन
श्रीलंका	लौंग, चन्दन की लकड़ी